एक हजार आठ

1008

आचार्य वसुनंदी मुनि

प्रकाशकः

डी.सी. मीडीया ''निकुंज'' टूण्डला
फिरोजाबाद उ.प्र.

1008

प्रथम संस्करण : अगस्त 2018
प्रतियाँ : 1,500

एक हजार आठ

आचार्य वसुनंदी मुनि

मंगलाशीषः
प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती दि. श्वेतपिच्छाचार्य श्री १०८ विद्यानंद जी मुनिराज

श्री सत्यार्थी मीडीया प्रकाशन
रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

मुद्रक :जैन रत्न सचिन जैन ''निकुंज''
मो. 9058017645

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के सम्बन्ध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा, जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे – खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे ।

प्राक्वक्तव्य

आचार्य वसुनंदी मुनि

संसार में सम्यक्मार्ग की खोज करना बड़ा कठिन है और उस पर चल पाना अतिदुर्लभ । यह संसार भूल भुलैयों का मार्ग है इसमें आत्मकल्याण का राजपथ तो अनादिकाल से एक ही है और अनन्तकाल तक एक ही रहेगा, पगदण्डियां अनेक हैं उन अनेकों मे से अनेक - अनेक निर्मित होती है और विलुप्त हो जाती हैं।पगदण्डी अधिकांशतः भटकाने वाली ही होती है कब कौन सी पगदण्डी कहां मुड़ जाए, कहां रुक जाए कुछ कहा नहीं जा सकता । पगदण्डियों का रास्ता छोटा होता है प्रायः कर ऐसा माना जाता है किन्तु जब पगदण्डियां असमीचीन हो तब उन पगदण्डियों का रास्ता राजमार्ग से कई गुना लम्बा हो जाता है प्रत्येक पगदण्डी असमीचीन ही हो ऐसा भी नहीं है उनमें से कोई पगदण्डी समीचीन भी हो सकती है और होती भी है कुछ पगदण्डियां समीचीन हैं किन्तु वे उसी प्रकार से हैं जैसे कंकड़ - पत्थरों के मध्य छिपा हुआ छोटा सा हीरा या रत्नाकर के तल में पड़े हुए रत्न । विवेकी पुरुषार्थी आत्मसहासी पुरुष ही उन रत्नों को प्राप्त करने में सफल होते हैं उसी तरह पगदण्डी के माध्यम से राजमार्ग तक विरले ही पहुंच पाते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ "अष्टोतर सहस्र मंगल कलश" अपर नाम एक हजार आठ सद्वाक्यों का पुष्प पुंज है अथवा रत्नों से युक्त रत्नाकर या दिव्य ज्योतिष् विमानों से युक्त गगनांगण । आपके पवित्र कर कमलों में प्रस्तुत है यह सद्वाक्य रूपी पगदण्डी । यदि आप इन सद्वाक्य रूपी पगदण्डियों का सदुपयोग करेंगे तो आप बहुत संभव है सम्यक्दर्शन - ज्ञान - चारित्र के राजमार्ग तक पहुंच जायेंगे और आपके चित्त में रत्नत्रय का दिव्य प्रकाश स्वतः ही प्रसारित हो जायेगा और होगी आत्मशक्ति विस्तारित । चित्त में परमशक्ति की निर्झरनी स्वतः ही निःसरित हो कर आत्मप्रदेश रूपी वसुधा को उसी प्रकार सुसमृद्ध, हरित करने वाली होगी जिस तरह सतत प्रवाही सरिता मरूस्थलीय वसुन्धरा को भी हरित, समृद्ध एवं खुशहाल कर देती है ये छोटे - छोटे सूत्र किसी की दृष्टि में वेदवाक्य, जिनागम सूत्र, सुभाषित, प्रकाश किरण की तरह उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं तो किसी की दृष्टि में यह अनावश्यक शब्दों का ढेर भी हो सकता है। पथ पथिक के लिए ही उपयोगी होता है और नाव नाविक के लिए। जो पथ पर चलना नहीं जानते और नाव को खेना नहीं जानते उनके लिए दोनों ही उसी प्रकार व्यर्थ हैं जिस प्रकार अंधे के लिए बाह्य प्रकाश । आप जैसे सरल हृदय, शुद्ध मनः स्थिति वाले करूणार्द्र चित्त के धनी, संसार - शरीर भोगों से विरक्त, संवेगी सुधी भद्र परिणामी भव्य जीवों के लिए ये सूत्र, वाक्य या सुभाषित उसी प्रकार उपादेय होगें जिस प्रकार राजहंस पंक्षी के लिए क्षीर व मुक्ता ।

प्रस्तुत ग्रंथ की पाण्डुलिपि तैयार करने में पाण्डुलिपि का संशोधन करने में संघस्थ त्यागी - व्रतियों को एवं प्रकाशन, मुद्रण में सहयोगी तथा अपने न्यायोपार्जित द्रव्य का सदुपयोग करने वाले सभी महानुभावों को यथायोग्य अभिवंदना, सुसमाधिरस्तु एवं शुभाशीष ।

सर्वेषां मंगलं भवतु

धर्मो वर्द्धताम **जैनम जयतु शासनम**

श्री शुभमिति

जिन चरणाम्बुज चंचरीक
कश्चिदल्पज्ञ सूरी
श्रमणः
ॐ ह्रीं नमः

1. जो व्यक्ति धन प्राप्त करके भी उसका सम्यक् भोग नहीं करता, दूसरों के हितार्थ दान नहीं करता, उसका धन कमाना अनर्थकारी है, उक्त धनोपार्जन से वह इस भव में व पर भव में दुखार्जन ही कर सकता है।

2. प्रत्येक धर्मात्मा को चाहिये कि वह शयन के तुरन्त पूर्व व जागरण के तुरन्त पश्चात् अपने इष्ट आराध्य वीतरागी सर्वज्ञ जिनेन्द्र देव का स्मरण करते हुये ये भावना भाये कि मैं भी शीघ्र आपके पद को अर्थात् अपने स्वभाव को शीघ्र प्राप्त करूँ।

3.बिना विश्वास व सत्य की नींव के, प्रतिष्ठा का जो भी भवन खड़ा किया जायेगा वह खोखला व क्षण ध्वंसी ही कहलायेगा। ऐसा भवन खतरनाक होता है क्योंकि वह ढह जाता है। वह भवन तो नष्ट होगा ही उसमें रहने वाला भी मारा जायेगा।

4. वर्तमान काल में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ऊपर से सहयोगी होने का अभिनय भी करते हैं और अंतरंग से गुप्त विद्रोही भी होते हैं। अंतरंग के दबे हुये विरोधी बनकर मायाचारी करने की अपेक्षा लाख गुना बेहतर है स्वयं का स्पष्ट विरोधी बनना या शान्ति से अन्याय को सहन करना।

5. पत्नी, पुत्र, पैसा, पुण्य, प्रदर्शन व प्रतिस्पर्धा में फँस कर आम आदमी तो भव में पतित हो जाता है किन्तु विशेष आदमी इससे विरक्त हो भव जलधि का भी तिरस्कार करता है।

6. किसी भी राजनेता व धर्मनेता का आसन उसके द्वारा दिये जाने वाले झूठे आश्वासनों पर नहीं अपितु विश्वास के योग्य सम्यक् आचरणों पर ही आधारित होता है।

7. स्वयं के स्वतंत्र अस्तित्व को प्राप्त करने के लिए विचारों में स्वतंत्र होना परम आवश्यक है। स्वच्छंदता का जीवन त्याग कर आत्मानुशासन व मर्यादा का पालन करने वाला ही पराधीनता की कड़ियों से मुक्त हो सकता है, इसके बिना शान्ति असम्भव है।

8. कनक, कामिनी, कीर्ति, कर्जा, कुटुम्ब, कषाय व कर्म के जाल में उलझा हुआ व्यक्ति उस तरह तड़पता है जैसे जाल में मछली, पिंजड़े में बंद पक्षी तड़पता है।

9. इंसान को अपना बीता समय नहीं भूलना चाहिये। आगे की सुध लेने वाला प्रगतिशील होता है। अतीत को देखकर संभलो और भविष्य के लिए वर्तमान में चल पड़ो।

10. मैं, मेरा, तू, तेरा ये चार शब्द मानवीयता की अर्थी के चार पाये हैं। हमें हम, हमारा की नीति पर चलकर अपना मानव होना सिद्ध करना चाहिये।

11. झूठी प्रशंसा होने पर विनम्र हो जाओ लेकिन उसे नकारो मत, बल्कि ये सोचो कि जिसके लिये तुम्हारी प्रशंसा हो रही है, वह गुण आप में क्यों नहीं हैं?

12. वास्तविकता सबको दिखती है बशर्ते आप आँखें खोलकर देखना चाहें।

13. संकट कमजोर मन वाले को तोड़ देता है। बलवान मन वाला संकट के समय में ''रिकॉर्ड'' तोड़ देता है।।

14. प्रसन्नता चेहरे की ऐसी सुन्दरता है जिसके लिए न मेकअप की

आवश्यकता होती है न मेकअप मैन की।

15. जिसके लिए विश्वासघात करो, जिसके साथ विश्वासघात करो, यह सोच लो अब वे दोनों तुम्हारे नहीं रहने वाले। किसी ने ठीक लिखा है-

''नहीं शिकवा मुझे कुछ बेवफाई का तेरा हरगिज,
गिला तब हो अगर तूने किसी से भी निभाई हो।''

16. यदि अपने आप पर विश्वास नहीं है और यदि आप किसी के विश्वास पात्र नहीं हैं तो जीवन में विकास की कल्पना ही निरर्थक है। मेरी दृष्टि में:-

''वफा गई मोहब्बत गई, अहसास गया।
वक्त के साथ सब कुछ यूँ ही बदल गया।।''

17. तुम्हें नदी बनना हो तो ठहरने की जिद छोड़ो। नदी का स्वभाव बहना है। यह अर्थ कभी नहीं भूलना चाहिये।

18. भारतीय संस्कृति कहती है कि बहिष्कार नहीं आविष्कार करो।

19. आजकल रिश्तेदार भी टेलीफोन की तरह हो गये है सिक्के डालो तो बात करो जितने सिक्के उतनी बातें।

20. अगर सच्ची मित्रता निभानी हो तो यह कभी मत सोचो कि जो उसे मिला वह तुम्हें भी मिले।

21. किसी वस्तु का पूर्ण उपयोग कर फेंकना बुरा नहीं, बुरा तो तब है जब उसका उपयोग किये बिना ही अच्छी अवस्था में कोई फेंक दे। वृद्ध माता-पिता कभी अनुपयोगी नहीं होते।

22. यदि कुर्सी से तुम चिपक गये हो तो यह अच्छी तरह जान लो कि तुम्हारे प्रति लोगों की राय अब ऐसी नहीं रही जैसे पहले थी।

23. जो मिल रहा है उसका सदुपयोग करना सीखो जो नहीं मिला है उसकी प्राप्ति के उपाय का चिन्तन करो, सफलता अवश्य मिलेगी।

24. मनुष्य का अहंकारी रूप इसी बात में दिखायी देता है कि वह जो वस्तु किसी को दे नहीं सकता उसे लेने के लिए स्पर्द्धा करता है।

25. आप साधु न बनें न सही, कम से कम साधुओं के विचारों से तो जुड़ो।

26. १७वीं और २१वीं सदी में यह अन्तर है कि पहले लोग प्यार पर बार(न्यौछावर) होते थे आज प्यार पर वार करते हैं।

27. विश्वास का टूट जाना ही सबसे बड़ा अविश्वास है।

28. निस्वार्थ व्यक्ति की सबसे बड़ी गलतफहमी यही है कि लोग उसे चाहते हैं।

29. सफेद होना और सफेद दिखना दोनों में कितना अन्तर है-

आईना जब सामने आयेगा सच बोलेगा।
आप चेहरे बदलते हैं, बदलते रहिये।।

30. जो लोग न लड़ सकते हैं, न भाग सकते हैं वे किसी की किसी भी बात का बुरा नहीं मानते।

31. मूर्ख को यदि खाई से बचा दो तो वह कुएँ में कूद जाता है। शिक्षा

कितनी भी अच्छी हो कुपात्र उससे हानि ही उठाता है।

32. एक नव यौवना कन्या अपनी वृद्धा माँ के साथ बस में चढ़ी तो बस कुछ भरी हुई थी। बस यात्रियों ने दोनों को देखा। अब वृद्धा माँ के लिए समस्या थी कि वह कहाँ बैठे और नव यौवना पुत्री के लिए समस्या यह थी कि वह कहाँ-कहाँ बैठे?

33. नाराज होना सरल है किन्तु नाराज होकर सबको खुश कर देना कठिन है।

34. मूर्ख को क्षमा करना कठिन है किन्तु क्षमा न करना भावी मुसीबत भी है और मूर्खता भी।

35. सच आजाद पक्षी की तरह है और झूठ बिल में छिपे साँप की तरह है जो बाहर निकलने पर निकालने वालों को डँस लेता है।

36. औलाद न हो तो दुःख, हो और मर जाये तो दूसरा दुःख और औलाद हो और नालायक हो तो दुःखों का कोई अन्त नहीं होता।

37. कुछ लोग कहते हैं प्रेम जहर की तरह अनिष्टकारक एवं कड़वा होता है किन्तु जो जहर को भी औषधि बनाकर सेवन कर सकता है उसे प्रेम को छोड़ने की आवश्यकता नहीं हैं।

38. दूसरों ने हमारे साथ कैसा व्यवहार किया ऐसा सोचने से पहले यह भी सोचें कि हमने दूसरों के साथ कैसा व्यवहार किया था या हम उनकी जगह होते तो कैसा व्यवहार करते?

39. राह में गढ़े पत्थर से ठोकर लगने के बाद अपनी चोट सहलाने के बजाय गढ़े पत्थर को ही उखाड़कर फेंक दीजिये। इससे आपका क्रोध भी शान्त होगा और औरों का भी भला होगा।

40. गुड़ नहीं दो तो, गुड़ जैसी बातें तो करो। यह कहावत जीवन में सामाजिक संस्कार डालती है।

41. विश्वास के धरातल पर रिश्ते बनते हैं। विश्वासघात के कारण रिश्ते रिसते हैं। दुख तो यही है कि जिन पर विश्वास करो वे ही विश्वासघात करते हैं।

42. भैंगे आदमी की आँखे स्वयं उसकी आँखों से मेल नहीं खाती इसलिए वह दूसरों से भी आँखें नहीं मिला पाता।

43. जिन्दगी है चार दिन की, अगर जीने की कला आती हो तो चार दिन भी बहुत होते हैं।

44. जो जीता वही सिकन्दर, यह पुरानी बात है अब तो सिकन्दर ही जीतते हैं।

45. क्या आप झूठ बोलते हैं? यदि आपका जवाब ''नहीं है'' तो यह आपका सबसे बड़ा झूठ हो सकता है।

46. सुखी जीवन का सूत्र है। FORGIVE AND FORGET अर्थात् भुला दो और क्षमा कर दो।

47. आगे बढ़ने के लिए असंतुष्टि जरूरी है किन्तु CONFUSED

कभी मत होइये।

48. यह कैसी विडम्बना है कि बड़े लोग देते नहीं और छोटे दे नहीं पाते।

49. दुश्मन को माफ करना आसान है बजाय दोस्त के।

50. कर्जदार होना सबसे बड़ी गरीबी है।

51. आदमी का अहंकार उसे क्रियाशील बनाता है, उठाता भी वही है और डुबाता भी वही है।

52. एक अधिकारी अभिमान में जीता है और सच्चा कर्मचारी स्वाभिमान में,अक्सर दोनों की नहीं बनती।

53. सबसे मिलने की उत्कण्ठा में हम भूल जाते हैं कि किसी को हमसे भी मिलना है। कभी-कभी तो अपना पता-ठिकाना ही भूल जाते हैं। किसी ने लिखा हैः-

अपना पता ही जेब में लिये घूमता हूँ मैं।
मिल जाये तो बताना मुझे मेरी तलाश है।।

54. पैसा जेब में रखो दिमाग में नहीं। दिमाग से कमाओ दिल से खर्च करो।

55. अपना राजदार (रहस्य भेदी) किसी इन्सान को नहीं अपनी डायरी को बनाओ और डायरी कभी न खोलो।

56. घर में रहना हो तो ''क्या बनाऊँ?'' और बाहर जाना हो तो ''क्या पहनूँ?'' भारतीय महिलाओं की आम समस्यायें हैं।

57. पुराना रिश्ता खत्म होने का खतरा हो तो नया रिश्ता बना लेना चाहिये।

58. गर्व करने के लिए जरूरी है कि तुम्हारे पास वो हो जो दूसरों के पास नहीं।

59. पहले लोग 'पहले आप-पहले आप' कहते थे अब तो ''पहले मैं-पहले मैं''से ही फुरसत नहीं है।

60. आप यह सदैव याद रखें कि आप मात्र कान नहीं रखते, आपके पास जीभ भी है। डरो मत, बोलो और अपने हितैषी होने का दम भरने वालों को बता दो कि मैं यदि आपकी सुन सकता हूँ तो सुना भी सकता हूँ।

61. किनारे पर खड़े रहकर समन्दर की गहराई का पता नहीं लगाया जा सकता।

62. चाहे सामने शैतान हो या शराब, क्या फर्क पड़ता है? दोनों का काम तो एक ही है।

63. आजकल गाँव और शहर के व्यवहार में समानता है। जैसेः-
गाँव के स्कूलों में अध्यापक नहीं आते और शहरों के स्कूलों में विद्यार्थी।

64. लक्ष्य छोटा नहीं बड़ा रखो। बड़े को पाने के लिए पुरुषार्थ करोगे तो छोटा तो मिल ही जायेगा। किसी ने ठीक ही कहा हैः-

जगमगाते हुये सूरज पर नजर रखता हूँ।
तुम समझते हो कि सितारों से बहक जाऊँगा।।

65. हर गरीब आदमी, अमीर आदमी से नफरत करता है फिर भी वह चाहता अमीर बनना ही है। कहना सही है:-

''अभी कुछ और अपना कद तराशो।
बहुत नीची यहाँ ऊँचाइयाँ हैं।।

66. सब को अपेक्षा/आशा की दृष्टि से देखने वाला इन्सान कमजोर इन्सान होता है।

67. क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है।

68. जब आप किसी मित्र से रुपये उधार माँगने जायें तो पहले सोच लें कि आपको मित्र की अधिक जरूरत है या रुपयों की। हो सकता है आप दोनों से वंचित हो जायें।

69. पैसों से सपने खरीदे जा सकते हैं, अपने नहीं और संस्कार तो बिल्कुल नहीं।

70. दूसरों के आँसू पोंछना हो तो सबसे पहले अपने आँसू पोंछो और अपने मन में भावना भरो कि:-

गम मेरे साथ-साथ बहुत दूर तक गये।
मुझमें थकान न पायी तो बेचारे थक गये।।

71. सच बोलिये, मगर ध्यान रहे कि यह समय पर बोला जाये। समय से पहले या समय के बाद बोला गया सच आपको मुसीबत में डाल सकता है।

72. वे क्या करते हैं या क्या कहेंगे, इस बात पर ध्यान देने की बजाय इस

बात पर ध्यान दो कि वे ऐसा क्यों कहते हैं? भगवान महावीर का अनेकान्तवाद यही सिखाता है।

73. दूसरों की बुराई जितनी सरल व सुखद है, उतना ही कठिन दूसरों से अपनी बुराई सुनना। किसी ने कहा था ''निन्दक नियरे राखिये'' उसका जमाना अब कहाँ?

74. मानव को बांधने के लिए सांकलों की आवश्यकता नहीं होती है, मानव के लिए कोई बंधन है तो मर्यादायें हैं।

75. जिस आमन्त्रण कार्ड पर लिखा हो ''समय पर पधारें'' उसका मतलब होता है ''जब समय हो तब पधारें''।

76. जो लोग आपसी रिश्तेदारी के बीच हमेशा अपने आपको बड़ा दिखाने की कोशिश करते रहते हैं वे बड़े नहीं बनते बल्कि और छोटे हो जाते हैं।

77. नारी को आखिर चैन कहाँ? वह चुप रहे तो लोग कहते हैं कि बोलती क्यों नहीं? और बोले तो लोग कहते हैं कि चुप क्यों नहीं होती?

78. एक महिला का ऊपर उठना लोगों की आँखों में खटकता है दरअसल ऊपर उठना कम अखरता है महिला होना अधिक।

79. बहुत बोलने वालों को अक्सर क्षमा माँगनी पड़ती है। शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है जबकि प्रायः मौन रहने वालों और कम बोलने वालों को ऐसे अवसरों से महरूम रहना पड़ता है।

80. कोयेले से दोस्ती कभी ठीक नहीं होती यदि वह गर्म होगा तो जलायेगा

और ठंडा होगा तो हाथ काला करेगा। कोयला और चरित्रहीन, एक दूसरे के पर्याय माने जा सकते हैं।

81. प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में यदि आप प्रगति करना चाहते हैं तो समय के प्रति वफादार बनिये। समय का इंतजार करोगे तो कभी समय भी तुम्हारा इंतजार करेगा।

82. एक नकारात्मक मन हमेशा अहंकारी होता है।

83. मात्र हाय, हैलो मुलाकात नहीं है। मुलाकात तो विचार विमर्श का नाम है। ठीक कहा है:-

ये हकीकत है कि होता है असर बातों में।
तुम भी खुल जाओगे, दो चार मुलाकातों में।।

84. स्त्री को दया से नहीं बचाइये और दुआ से भी नहीं। उसे अपना संघर्ष स्वयं करने दो। यदि तुम कुछ कर सकते हो तो यही कि उसे भी मनुष्य ही समझो।

85. कागज पर पानी-पानी लिख देने से जिस तरह प्यास नहीं बुझती उसी तरह आचरण को लिखने की नहीं जीवन में उतारने की जरूरत है।

86. आभूषण विहीन चरित्रवान नारियाँ अपने सौन्दर्य की सृष्टि स्वयं करती हैं क्योंकि चरित्र ही सच्चा गहना है।

87. कुत्ता और आदमी में एक मौलिक समानता है दोनों अपने ही सजातियों पर गुर्राते हैं।

88. 'ब्यूटी विद ब्रेन' का मतलब यह नहीं कि कपड़े उतारकर अपने खाली या विकृत दिमाग का सबूत पेश करो, अपितु अच्छा सोचो, करो, सुनो।

89. आज के दौर में सौन्दर्य की परिभाषा ब्यूटी पार्लर गढ़ रहे हैं।

90. हादसे होते हैं और भुला दिये जाते हैं, किन्तु समझदार लोग इनसे भी सीख लेते हैं और भावी हादसों से बचते हैं।

91. तमाम अस्पष्ट संकेतों के मुकाबले एक सीधा सरल और स्पष्ट वाक्य अधिक लाभदायक होता है।

92. अगर किसी को अपना बनाना है तो यह जानो कि उसमें क्या खासियतें हैं और क्या खामियाँ हैं? साथ ही बताओ कि तुममें क्या खासियतें हैं और उसे इसकी कितनी जरूरत है?

93. रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक है कि आप दूसरे को यह अहसास करायें कि वह आपके लिए अहमियत कितनी रखता है? आपको उसकी कितनी जरूरत है?

94. हमेशा दूसरों से आशा करते रहने से केवल दुख ही मिलता है। जबकि:-

आशा जब बन गयी निराशा, तब बन गयी निराशा आशा।
सब जग ने देखा जीवन को, खत्म हुआ चहुँओर तमाशा।

95. सुखद विवाह का रहस्य सही व्यक्ति पाने में नहीं बल्कि स्वयं सही बन जाने में है।

96. सफलता के लिए जरूरी है कि आप स्वयं अपने प्रतियोगी बनें।

97. दूसरों की ताँक-झाँक में संलग्न व्यक्ति न स्वयं जीता है और न दूसरों को जीने देता है।

98. हाथों का इस्तेमाल आँसू पोंछने के लिए करें, आँसू देने के लिए नहीं।

99. बेटियों को लक्ष्मी कहने वाले हम लोग लक्ष्मी के ही कारण बेटियों को अस्तित्व में आने नहीं देना चाहते।

100. सफलता के शिखर पर बैठा हर व्यक्ति महापुरुष और पूज्य नहीं होता। वह हिटलर और मुसोलिनी जैसा क्रूर व हिंसक भी तो हो सकता है।

101. मूल्य बजारों में नहीं बनते, व्यक्तियों से बनते हैं।

102. गरीब का प्रथम शत्रु पेट है जिसके लिये वह किसी के भी आगे झुक जाता है और दूसरा शत्रु उसका सिर है जो हर किसी के आगे नहीं झुकता।

103. पद, पैसा और प्रतिष्ठा अपनों से दूर ले जाते हैं और परायों को पास ले आते हैं किन्तु यह क्षतिपूर्ति नहीं है।

104. फैशन की दुनियाँ चाह से शुरु होती है, वाह से गति पकड़ती है और आह पर समाप्त हो जाती है।

105. दूसरों के रास्ते में कांटे नहीं फूल बिछाओ, तुम्हारा जीवन फूलों की महक से महक उठेगा।

106. चमत्कारों पर विश्वास करो मगर उन पर कभी निर्भर मत रहो। हो सकता है तुम्हारे जरा से प्रयत्न से कोई बड़ा चमत्कार हो जाये।

107. जो भीड़ के पीछे चलते हैं वे सदैव भीड़ का हिस्सा ही बने रहते हैं, भीड़ कभी उनके पीछे नहीं आती।

108. यह सोचना जरूरी है कि लोग तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं? इससे भी अधिक यह जानना जरूरी है कि आप जो अपने बारे में सोचते हो उससे वह कितना मेल खाता है।

109. मुस्कराइये। मुस्कराने की कोई कीमत नहीं लगती। पर विश्वास रखिये चेहरे पर खाली मुस्कराहट वह बेशकीमती चीज है जो आपकी स्वीकारता बढ़ा देती है और सफलता के नजदीक ले आती है।

110. बातचीत के समय सीधा देखें। सामने वाले की आँखों में झाँकते हुये बात करें इससे आपका आत्म विश्वास बढ़ेगा और सामने वाला प्रभावित होगा। आप किसी से कम नहीं हैं, यह विनम्रतापूर्वक दिखना व दिखाना चाहिये।

111. आप बार-बार अतीत की भूलों का स्मरण कर वर्तमान खराब क्यों करते हैं? आप बेहतर भविष्य के बारे में भी तो सोच सकते हैं।

112. हमेशा याद रखें-

कामनायें कम करो, काम करो ज्यादा।
भावनाये शुभ रखों, दान करो ज्यादा।।

113. चलना ही जिन्दगी है:-

जीने की कोशिश में, ता उम्र हम चलते रहे।
थक गई है जिन्दगी, बस हम ही हम चलते रहे।।

114. मंजिल का पता जेब में हो तो रास्ते भी कहीं न कहीं से निकल ही आते हैं।

115. यदि आप बड़े आदमी बनना चाहते हो तो सोचो बुद्धिमानों की तरह और बातें करो साधारण इन्सान की तरह।

116. समय के साथ चलने में ही भलाई है वरना समय हमें खारिज कर देगा। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, हो सके तो समय से आगे की सोचो, समय से आगे बढ़ो, समय को बदलो और अपने पक्ष में करो।

117. कभी गुस्से में सोने मत जाओ। जागते रहो और झगड़ लो, अच्छी नींद आयेगी और न ही क्रोध में भोजन करो, भूखे पेट अक्ल आ जायेगी।

118. शासन के लिये सेवाभाव जागृत होना जरूरी है और शासन में आकर सेवा को भूलना मजबूरी है आखिर वह नायक ही तो है क्योंकि उस एक नायक पर आश्रितों का दायित्व है।

119. जिन्दगी में सब कुछ अपनी मर्जी से जब चाहो, जितनी बार चाहो कदाचित हासिल कर सकते हो किन्तु, गुजरा हुआ समय वापिस नहीं आयेगा।

120. आपके पास कम से कम एक गुण तो अवश्य ही होगा उसे ही विकसित करें यह मत सोचें कि सब गुण आपके पास नहीं हैं। आखिर निर्गुणों में निर्गुण भी एक गुण है।

121. जवानी के चार दिनों में कमाया गया पैसा ही चालीस के पार काम आता है किन्तु यदि यह कमाई नेक नहीं हुयी तो जवानी चार दिन की होकर रह जायेगी।

122. इस संसार में दो तरह के इन्सान होते हैं। एक वो जो अपने अच्छे कामों से दिल में उतर जाते हैं और दूसरे वे जो अपने बुरे कर्मों से दिल से उतर जाते

हैं।

123. व्यक्ति के जाने के बाद आई रिक्तता ही उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करा पाती है। किसी ने लिखा है कि

''जब वह मरा तो पता लगा कि वह था और जिन्दा था।''

124. पक्षी को दाना दिखता है जाल नहीं। मगर आप तो मनुष्य हैं।

125. आलस्य एक विशेष तरह की हिंसा है अतः आलस्य से बचें। किसी ने कहा था कि ''नवयुवकों के लिये मेरा संदेश तीन शब्दों में है-

''परिश्रम, परिश्रम, परिश्रम''

आप कहेंगे कि यह तो एक ही शब्द है? हाँ फिर तीन बार क्यों, कहा? परिश्रम करो, करने दो, करने वालो की अनुमोदन करो।

126. बीते हुए कल को हम आज इसलिये नहीं भुला पाते क्योंकि हम आज को पूरी तरह जी नहीं पाते।

127. जब वक्त सही होता है तब कुछ भी गलत नहीं होता।

128. दो दुश्मनों की पंचायतों में जाओगे तो एक दोस्त बन जायेगा, किन्तु दो दोस्तों की पंचयतों में जाओगे तो यह भी सम्भव है कि दोनों ही दुश्मन बन जायें एक का दुश्मन बनना तो लगभग निश्चित है।

129. हमेशा बार करने वाले यह भी सोचें कि बार सहने वाले का वार अभी बाकी है।

130. दुनियाँ में दो तरह की त्रासदियाँ (प्रतिकूलतायें) है एक आप जो चाहते

हैं वह नहीं मिला, दूसरी यह कि वह मिल गया जिसे आप चाहते नहीं।

131. कुछ न करना दुनियाँ का सबसे बड़ा कठिन काम है और इकतरफा करना तो लाजवाब ही है। कवि मन कहता है-

इकतरफा इन्तजार से यह तय हुआ है अब।
कहने लगे हैं लोग मुझे लाजवाब अब।।

132. आप जो चाहते हैं उसे पाने की कोशिश कीजिये वरना जो मिल जायेगा उसे ही चाहने लगेंगे या उसे ही भोगना पड़ेगा।

133. भारतवर्ष में कोई भी नास्तिक नहीं है किन्तु सदैव आस्तिक बने रहना उसे मुनासिब नहीं है। जो परीक्षाओं के समय में भी आस्तिक रहे वही सच्चा आस्तिक है।

134. आजकल प्रेम में प्रेम कम व्यभिचार और विश्वासघात अधिक है अतः-

रास्ता काटती बिल्ली का सबब मत पूछो।
राह चलते लोगों से सावधान रहो।।

135. झूठ की उम्र लम्बी नहीं होती है। लेकिन जितनी होती है झूठ बोलने वाले को बैचेन बनाये रखती है। सच बोलने की आदत डालो, नहीं तो झूंठ ही सच लगने लगेगा।

136. हर किसी को अपना दर्द मत बताइये सच्चा हमदर्द हो तो बात और है क्योंकि- **दूसरों के दर्द का एहसास होता है किसे।**
हँस देते है गुल,शबनम को रोता देखकर।।

137. जो कान के कच्चे होते हैं वे तीसरे के मकड़ जाल में अक्सर फँस जाते

हैं। कान दो है एक नहीं। जो बेकार की बात है उसे एक से सुनिये और दूसरों से निकाल दीजिये। दो कानों के बीच मस्तिष्क है, जो सुना है उसके गुण दोष का विचार कीजिये।

138. भोजन बनाने वाले का मन और चित्त जितना शुद्ध होगा भोजन भी उतना ही शुद्ध एवं स्वास्थ्यवर्द्धक होगा। कहा है-

जैसा खाओ अन्न, वैसा होवे मन।
जैसा पीओ पानी, वैसी होवे वानी।।

139. मुस्कान वह जादू है जो सबको अपना बना लेती है लेकिन यदि आप बुद्धू हैं तो किसी की मुस्कान से मुश्किल में पड़ सकते हैं।

140. **आमदनी कम खर्चा अधिक, यह आदत है मिटने की।**
ताकत कम अरू गुस्सा ज्यादा यह आदत है पिटने की।
आप भी सोचिये कहीं यह आपका अनुभव तो नहीं।

141. सबके सब नालायक हैं। यह बात हम उन्हें सुनाते हैं जो लायक होते हैं यदि वे लायक नहीं होते तो आप उनसे कहते ही क्यों? यदि वे नालायक होते तब तो आप बिल्कुल ही नहीं कहते।

142. महत्वपूर्ण यह नहीं कि वह यह कर पाया, महत्वपूर्ण तो यह है कि वह यह जानता था कि वह यह कर पायेगा। यह आत्म विश्वास विरलों में ही होता है।

143. आज लोग मन मनाने, मन बनाने की नहीं मन मारने की बात करते हैं जबकि नीति कहती है, मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

144. यदि अध्यात्मवाद आपका आदर्श है तो भौतिकवाद के यथार्थ से बचिये।

145. अनैतिकता, अन्याय और बेशर्मी का पाठ पढ़ाने के घरेलू विद्यालय हैं हमारे ये टी.वी. चैनल, इन्हें देखिये और भूल जाइये किन्तु मनुष्य और जानवर में जो कोई फर्क है उसे याद रखिये।

146. शस्त्र चलाना सिखाना सरल है पर शस्त्र चलाना जानते हुये भी शस्त्र चलाने की नौबत नहीं आने देना कठिन है।

147. प्यार के साथ पैसा न हो तो लव मैरिज कलह में बदल जाती है अतः लव से मैरिज नहीं मेरिज से लव करो।

148. पानी अगर आग को गले लगा ले तो आग का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। कौन कहता है कि शीतलता में बल नहीं होता।

149. आनन्द और सम्मान के पीछे मनुष्य का विवेकयुक्त परमार्थ छिपा रहता है। भले ही वह आँखों से दीख पड़े या नहीं भी।

150. नैतिकता से रहित जीवन शून्य है, दिशाहीन है, निरर्थक है, भले ही आप दिशाबोध होने का दंभ पाले रहें।

151. स्वार्थी का कोई साथी नहीं होता जो साथी होता है वह स्वार्थी नहीं होता।

152. शॉर्टकट से प्रारम्भिक सफलता तो मिल जाती है किन्तु उस सफलता को बनाये रखने के लिये बाद में अनेक कट लगते हैं जिन्हें जुड़वाने के लिये लौंगरूट का सहारा लेना पड़ता है। किसी ने ठीक ही कहा है-

भँवर से लडो तुंग लहरों से उलझो।

153. सफर पर जाने के लिये जरूरी है कपड़े दो एक जोड़ी और रुपये हजार। परिचय पत्र और एटीएम कार्ड, किसी ने ठीक ही कहा है कि "जब भी चलो परिचय पत्र जेब में रखकर चलो, आजकल हादसे पहचान बदल देते हैं।"

154. दुबले लोगों के लिये डाक्टर की सलाह है "खाना" और मोटे लोगों के लिये सलाह है खा...ना'

155. ज्यों ही तुम सफलता को ढूँढ़ना छोड़ दोगे सफलता तुम्हें ढूँढ़ती आयेगी।

156. जो ईंट दीवार के योग्य होगी वह चाहे जहाँ पड़ी हो एक न एक दिन अवश्य उठा ली जायेगी।

157. औरत की इच्छा, पुलिस का फरमान कभी नजर अन्दाज नहीं करना चाहिये।

158. भरपूर जिन्दगी जीना हो तो समय से पहले थको मत और समय से पहले रुको मत। जीवन का मंत्र बनाओ चरैवेति, चरैवेति।

159. जब जीवन में क्रय विक्रय ही सब कुछ हो जाता है तो वस्तुएँ ही इसके दायरे में नहीं आती, आदमी भी आ जाता है।

160. बिना सत्य और विश्वास की नींव के सहारे जो भी भवन बनेगा वह खोखला ही होगा; भले ही वह मजबूत फौलाद का ही क्यों न बना हो।

पानी में भी आग लग जाती है, यह किसने नहीं देखा।

161. भावुकता व्यक्तित्व की पूरक है और अतिभावुकता कमजोरी। भावुक लोग प्रायः परोपकारी होते हैं और अतिभावुक लोगों से प्रायः अपराध हो जाते हैं।

162. रिश्ते बनाना सरल है उन्हें मजबूत बनाना कठिन है। जीवन में रिश्ते सरल एवं कठिन मार्ग अपनाने से ही प्रभावी एवं दीर्घजीवी होते हैं।

163. संवाद की सही एवं सार्थक भाषा वह है जिसमें शब्द कम हों और अर्थ अधिक । वाणी का माधुर्य किसी भी सम्पत्ति पर भारी होता है। वाणी पर नियंत्रण होने से विवाद ग्रस्त होने का खतरा नहीं रहता।

164. श्रृंगार बुरा नहीं मगर वह बाहर से नहीं अन्दर से भी हो।

165. अगर आप बड़े हैं तो कभी कभी छोटे बनकर भी देखें। जो छोटे होकर बड़े काम करते हैं वे बड़े होते हैं और जो. बडे होकर छोटे काम करते हें वे छोटे होते हैं।

166. जब बच्चा अपने माता पिता को उनके माता पिता का अनादर करते देखते हैं तो उनका बाल मन कहता होगा कि जब वे बड़े होंगे तो क्या उन्हें भी यही सब करना होगा?

167. जब बच्चे माता पिता का प्यार पाते हैं तो अनुशासित जीवन और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हैं और जब बात बात पर डाँट-फटकार, प्रताड़ना और उपेक्षा पाते हैं तो विद्रोही बन जाते हैं।

168. परिवार का सौहार्दपूर्ण वातावरण परिवार के सदस्यों को ही प्रभावित नहीं करता अपितु समाज के लिए भी उदाहरण बनता है।

169. समय, पात्र और परिस्थिति का आकलन कर बोलने वाला कभी अपमानित नहीं होता। अतः तोल मोल कर बोलें।

170. आजकल की प्रगतिशीलता 'आई क्यू' (बौद्धिक स्तर) से नापी जाती है जबकि पहले ये ई क्यू (भावनात्मक स्तर) से नापी जाती थी। सफल व्यक्ति और यशस्वी व्यक्ति के लिए ''आई क्यू'' और ''ई क्यू'' दोनों चाहिये।

171. जब भी आपकी आलोचना हो मान लो कि इसके मूल में दूसरों के द्वारा बनाये मापदण्ड एवं दूसरों के द्वारा किये गये निर्णय ही होते हैं।

172. अपनी आलोचना सुनकर दुखी होने से अच्छा है यह समझो कि जिन कमजोरियों या बुराइयों के कारण तुम्हारी आलोचना हो रही है वे कितनी जल्दी दूर हों।

173. ''जो होगा देखा जायेगा'' की सोच रखने वाले जीवन में प्रायः कुछ ऐसा देखने या देखते रहने के लिए विवश होते हैं जो वे कदापि नहीं चाहते।

174. आजकल आदमी इतना काम करने लगा है कि उसे आत्महित के कामों के लिए भी वक्त नहीं मिलता।

175. जो स्वयं से युद्ध करता है वही वीर होता है। अयोग्य व्यक्ति दूसरों से लड़ते हैं किन्तु योग्य व्यक्ति स्वयं से लड़ता है और आत्मविजय प्राप्त करता है।

176. सद् इच्छायें धन के अभाव में रुकती नहीं हैं, किन्तु धन के बिना पूरी भी नहीं होती है।

177. प्रेम स्वयं से करो, विश्वास की परीक्षा लो, बुरा व्यवहार किसी से मत करो और अर्जित करो वह प्रेम, वह विश्वास, वह सद्व्यवहार, जो सिर्फ तुम्हें दूसरे ही दे सकते हैं।

178. युवाओं के लिए शराब इसलिए भी खराब है क्योंकि वह बीमारी बनकर नही बल्कि दुर्घटना बनकर कहर ढाती है और वह तनाव नहीं इंसानियत का नकाब हटा देती है।

179. लोगों को राम की जरूरत है ताकि वे आराम से रह सकें । यदि आराम राम को नकारने में भी मिलें तो उन्हें इससे भी परहेज नहीं है। आज सबसे बड़ी चीज तो आराम है। हे राम.....!

180. दशहरा (विजयदशमी) पर भरे-पूरे-ऊँचे कद वाले रावण की बुराई का प्रतीक मानकर जला डालना और बात है किन्तु स्वयं की अच्छाई के कद को उसके जितना बढ़ा पाना और बात है। हमने रावण तो सदियों से जलाये पर दुर्भाग्य है कि हम राम नहीं बन पाये।

181. अपेक्षा अकल्पनीय हो तो आगे का रास्ता अत्यंत कठिन हो जाता है। यदि आपकी गाड़ी पटरी पर नहीं दौड़ पा रही है तो दोष मात्र पटरियों को मत दो अपनी गाड़ी को भी सम्भालो।

182. कागज की कश्ती में बैठकर दरिया पार करने की इच्छा व्यक्त करने वाले बात भले ही कमाल की करते हों किन्तु वे कमाल दिखा पायेंगे, यह मात्र ख्याल ही है।

183. आप अपनी खामियाँ जान लें, खूबियाँ अपने आप आ जायेंगी।

184. जब बात धर्म की हो तो उसे घर तक नहीं घर-घर तक फैलाओ और अधर्म की हो तो कहानी घर-घर की, जैसा मत दिखाओ।

185. २१वीं सदी की नव प्रजातियाँ हैं, भ्रष्ट राजनेता, जुल्मी जागीरदार, घूसखोर महाजन, बेईमान सौदागर, निर्लज्ज मॉडल, कपटी कम्पनियाँ, आरक्षित रक्षक, देशी-विदेशी आतंकवादी, नव सामन्ती दलित, इनके प्रभाव से बचना मुश्किल लगता है।

186. आम हैं तो खास हैं मगर, 'आम' भी खास की संतुष्टि के बाद ही आम को मिल पाते हैं।

187. दरारों से झांकते हुये पड़ोसी दरअसल आप पर हँसने का बहाना ढूँढ़ रहे होते हैं, अतः तुम छेद छोड़ना व छेदों से झांकना बंद करो।

188. जब कोई युवती अपना दिमाग इस्तेमाल करती है तो मजबूत होती है और जब दिल इस्तेमाल करती है तो मजबूर होती है। समयानुसार दोनों जरूरी हैं।

189. दहेज लेना व देना अपराध है और यह ऐसा अपराध है जो एक गृहस्थ को जीवन में दो बार नहीं तो कम से कम एक बार तो करना ही पड़ता है।

190. नियम, कायदे तो जंगल व खेलों के भी होते हैं, फिर मानव समाज यथार्थता की जिन्दगी से इन्हें अलग कैसे कर सकता है?

191. जरा हटके, का मतलब दूसरों को हटा के नहीं होना चाहिये।

192. चल ख्बाव से उठ जिंदगी फिर बुला रही हैं जीने के लिए.....।

193. सफलता के साथी पुरुष होते हैं और विफलता की साथी महिलायें क्यों? क्योंकि वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होती हैं।

194. 'हिट' होने के लिए 'फिट' होना जरूरी है।

195. समस्त उन्नति की आधारशिला आत्मा ही है।

196. बड़े अरमानों से हम जिस घर का निर्माण करते हैं वही घर आपके लिए पाँव की बेड़ी बन जाता है अतः अरमान (अरि और मान) से बचिये।

197. कार्य की सफलता ही बताती है कि उसने आप पर जो विश्वास किया वह विश्वास के योग्य था।

198. लोग जी चुराते हैं श्रम से और दोष देते हैं नस्ल और अक्ल को।

199. किसी पुस्तक के रहस्य को जानना है तो उसके प्रत्येक पन्ने को पढ़ो और किसी संगठन को बेहतर चलाना हो तो उसके सब अंगों को गढ़ो।

200. परिग्रह के कारण मनुष्य में भय उत्पन्न हो गया है।

201. मानव का अस्तित्व याचना नहीं संकल्प चाहता है, कामना नहीं पुरुषार्थ चाहता है। जो बोओगे वही काटोगे, फिर भाग्य भरोसे क्यों बैठे हो?

202. जमाना बदलेगा तो हम बदलेंगे, कहने वाले कहते ही रह गये और जमाना कहीं से कहीं पहुँच गया, वे वहीं के वहीं रह गये।

203. धन सम्पदा केवल उनके लिए बरदान है, जो उन्हें दूसरों के लिए वरदान बनाता है।।

204. हमारे देश को आजादी अहिंसा से मिली और आज भरपूर हिंसा हो रही है, क्यों? क्या आजादी इसी का नाम है।

205. जो लोग सत्तासीनों को देखकर कहते थे- ''सुबह मेरी आपके लिए, शाम मेरी आपके लिए'' वे ही सत्ताच्युत होते ही कहते हैं, लगता है आपको भी कहीं देखा है।

206. जब स्त्री बदला लेने का माध्यम बन जाये तो प्रेम, वात्सल्य, नैतिकता निरर्थक हो जाते है।

207. सुख की दुनियाँ के सपने देखने वाले हर समय दुख से आक्रान्त रहते हैं। किसी कवि ने लिखा है:-

''फिर कुण्डी खटकी है शुभदे, देख नया दुख आया होगा।।''

208. जो नाविक अपनी यात्रा के बंदरगाह को नहीं जानता, वह यह भी अच्छी तरह से जान ले कि उसके अनुकूल हवा कभी नहीं बहेगी।

209. आदमी को साँस लेना जरूरी, मगर पेड़ काटना मजबूरी तो नहीं, किसी ने कहा है कि:-

''टहनियों को मत काटो, यह चमन का जेवर है।
इनकी ओट से इक दिन आफताब निकलेगा।

210. सुन्दर रूप के साथ सद्व्यवहार की मिठास हो तो भुलाने पर भी भुलायी नहीं जा सकती।

211. जमाने की याद्दाश्त बहुत कमजोर होती है मगर इतनी भी कमजोर नहीं कि उसे शक्ल सूरत देखने पर भी याद न आये।

212. विष को विष कह दो, तो भला होता है। विष को विष मानकर पी लो, तो बुरा होता है। विष को अमृत और अमृत को विष मानकर पीना और ज्यादा बुरा है।

213. समाज से हम जितना ले रहे हैं, उतना भी समाज को लौटाने का भाव हम से नहीं आता।

214. छिपाने से पाप, पुण्य दोनों विशेष फल देने वाले हो जाते हैं।

215. दिल और दिमाग के पास लड़ने की फुर्सत जितनी कम हो उतनी ही शान्ति मिलेगी।

216. सामाजिक अंधकार को समाज ही तोड़ सकता है, किन्तु कुशल नेतृत्त्व का होना भी जरूरी है।

217. आज का व्यक्ति खण्डित हो गया है क्योंकि उसके जीवन में बाजार आ गया है इसलिए दण्डित है यदि गुण मण्डित हो जाये तो सच्चा पण्डित कहलाये।

218. दुनियाँ में किसी को भी सिर्फ सुनाना अच्छा नहीं लगता अतः अगर किसी को कुछ सुनाना है तो उसकी सुनो भी।

219. पसीने की स्याही से जो लिखते हैं अपना मुकददर उनके इरादों के सफेद पन्ने कोरे नहीं होते।

220. अभिमानी व्यक्ति भी धन के लिए बहुत अपमान सहता है।

221. चीजों को टुकड़ों में देखोगे तो भ्रमित होंगे और पूर्णता में देखोगे तो संतुष्ट होंगे। अखण्ड दिल में अखण्ड शांति है।

222. जो आँखे स्वप्न देखती हैं वही उसे साकार करने के लिए मानस भी बनाती हैं। आँखों में चमक हो नमक नहीं, नमन हो नम नहीं।

223. पुरुष के बहुत से गलत काम उसके पुरुषत्व को ललकारने पर ही होते हैं। वह सब कुछ सह सकता है किन्तु पुरुषत्व के अहं को टूटते नहीं देख सकता।

224. तिनके को हवा बहा ले जाती है, किन्तु सदा ध्यान रखो तुम तिनका नहीं हो, तुम तो याद रखो किः-

मील के पत्थरों पर लिख दो यह इबादत भी।
कमजोर इरादों से मंजिल नहीं मिला करती।।

225. आप हर कार्य करें किन्तु उतावलापन न दिखे। आपको पता होना चाहिये कि कल कभी नहीं आता अतः आज का कार्य कल पर न छोड़ें।

226. कलयुग का प्रभाव है कि लोग जौहरी के हीरे की परख पर ऊँगली उठाते हैं जिन्हें काँच की भी परख नहीं वहाँ से हीरे खरीदे जाते हैं।

227. मैं जब भी एक सही आदमी से मिलने के लिए निकलता हूँ एक आदमी में दस-बीस आदमी दिखते हैं, इसलिए सही पहचानना मुश्किल हो जाता है।

228. मानवीय विकास का यह कैसा परमोत्कर्ष है कि मनुष्य-मनुष्य से डरने लगा है, शेरों को पालने लगा है और अजगरों, बिच्छुओं के साथ सोने लगा है।

229. मूर्खता सबसे बड़ा काँटा होता है किन्तु लोग हैं कि मूर्खता से ही प्यार करने लगे हैं। आज काँटे को काटा नहीं जाता, फूल-पत्तियों को काटा-छाँटा और बाँटा जाता है।

230. रिटायर होने का सही समय तब है जब लोग कहें कि इतनी जल्दी क्यों? न कि तब जब लोग कहें कि अरे वह अब रिटायर हो रहा है।

231. छींक आ रही हो तो रोको मत क्यों? क्या इसलिए कि दूसरों का काम बिगाड़ने का यह सही मौका है? नहीं अपितु उसे साावधान करने के लिए एवं अपना स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए।

232. प्रशंसा की बजाय चापलूसी करने के लिए अधिक परिश्रम की आवश्यकता होती है। अन्दर से शब्द ठेलने पड़ते हैं। हमारा व्यक्तित्व भी गिरता है।

233. चोर दरबाजे से घुसने वालों को कभी परमात्मा नहीं मिलता अतः राजमार्ग से ही चलो।

234. प्रायः सभी पति चाहते हैं कि उनकी पत्नी परफेक्ट हो ताकि वह यह

जान सके कि उनका पति ऐसा क्यों नहीं है? जो ज्यादा परफेक्ट होना चाहता है वह रिजेक्ट हो जाता है।

235. हर महिला अपने पति से कभी न कभी यह जरूर कहती है कि 'यदि ऐसा पहले पता होता तो मैं तुमसे हर्गिज शादी न करतीं, क्या यह उसका सच्चा पश्चाताप है?

236. चिन्ता करने वाला चैन से नहीं बैठता और चिन्तनशील कभी चिन्ता नहीं करता। जहाँ चिंता न हो वहीं चिंतन होता है।

237. तने हुये साथ-साथ रहने से अच्छा है मिलजुल कर रहें। इससे सुख भी मिलेगा और शान्ति भी।

238. प्रायः हर डॉक्टर को कोई न कोई बीमारी होती है। अधिक फीस लेना भी उनमें से एक है।

239. आज उपदेशक बहुत हो गये हैं। उपदेश पर अमल करने वाले कम हर समाज को उपदेशक नहीं सहयोगियों की जरूरत है।

240. अगर विश्वास हो तुम्हारी पत्नी सीता है तो वह सदैव ध्यान रखें कि उसकी कभी अग्नि परीक्षा न हो।

241. जो लोग दिन रात अपने अपमानों का हिसाब लगाते हैं वास्तव में वे स्वयं को अपमानित ही करते रहते हैं।

242. सक्रियता नहीं होगी तो निष्क्रियता को कौन रोक सकता है?

243. दूसरों की तारीफ करना अच्छा है मगर स्वयं को कमतर आँकना गलत है।

244. ऐसा कोई झूठ नहीं है जिस पर कोई न कोई विश्वास न करे किन्तु अकेले विश्वास योग्य होने से कोई झूठ सत्य नहीं हो सकता।

245. अच्छा पड़ोसी चाहते हो तो पहले स्वयं अच्छा बनो। आपकी सहनशीलता,धैर्य, संतोष, धन और धर्म की परीक्षा पड़ोसी ही लेता है।

246. अकेलेपन के तनाव से मुक्ति के लिए आजकल लोग कुत्ते, बिल्ली पाल रहे हैं संयुक्त परिवार से अलग होकर।

247. पति इस संसार का सबसे अधिक अनुशासित जीव है और पत्नी सबसे बड़ी शासित।

248. छोटे बनकर रहोगे तो मिलेगी हर रहमत, बड़ा होने पर तो माँ भी गोद से उतार देती है।

249. हमारे इरादे कितने मजबूत हैं कि हम गरजते बहुत हैं, बरसते नहीं और बारिश का समझौता होते ही पूरा पानी स्वयं पी लेते हैं।

250. काम तब करें जब अकेले हों भविष्य की योजनायें मिलकर बनायें।

251. ''आई समझ में'' का बार-बार इस्तेमाल करने वाले स्वयं मंदबुद्धि होते हैं जिन्हें अक्सर नहीं समझने के लिए डाँट खानी पड़ती है। जो दूसरों को सदैव अविश्वास की नजर से देखता है वह भी विश्वास के योग्य नहीं होता है।

252. जब भी किसी से बात करो मुस्करा कर करो इसलिए नहीं कि सामने वाला फँस जाये और आपका काम बन जाये, अपितु इसलिए कि उसका काम भी बन जाये।

253. वे ईमानदार हैं लोगों का कहना है इसलिये बेकार है यह सुनकर धर्मग्रन्थों के पन्ने फड़फड़ा रहे हैं। ईमानदारी से जीवन साकार होता है वेकार नहीं।

254. आज व्यक्ति पार्टी बन गया है और पार्टी निजी प्रोपर्टी।

255. मूर्खों और मृतकों से विचार बदलने की कहना व्यर्थ है। जो दूसरों के विचार का आदर करता है वह मूर्ख कैसे होगा?

256. अति विनम्रता विश्वासघात की प्रथम भूमिका होती है बच सको तो बचो।

257. कुछ लोग सोचते बहुत हैं पर करते नहीं हैं। कुछ लोग करते बहुत हैं किन्तु कार्य बिगड़ने पर सोचते बहुत हैं अतः पहले सोचो फिर करो।

258. सफल गृहिणी वह है जो घर को टूटने से बचाती है।

259. मौन कभी-कभी मुखर वाणी से अधिक प्रभावशाली होता है।

260. अगर आपके पास प्रश्नों का समाधान नहीं है तो कोशिश करें कि आपका जीवन प्रश्न चिन्हों से न घिरे।

261. आक्रामक वे नहीं हैं जो सामने से हमला करते हैं बल्कि वे भी

आक्रामक हैं जो दूसरों के सहारे अनर्गल प्रलाप करते हैं।

262. विजय का भाव रखने वाले कहते हैं- लाओ यह काम मैं कर देता हूँ, और पराजय का भाव रखने वाले कहते हैं ये मेरा काम नहीं है।

263. आवश्यकता के क्षणों में जो पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ लेते हैं वे बड़ी सफलता पाकर भी स्वयं को हीन भावना से ग्रस्त ही पाते हैं।

264. जो खुद को हमदर्द बताते हैं वे सबसे बड़े सिरदर्द होते हैं।

265. लोग कहते हैं कि ''इतना सब हो गया और आपने खबर तक नहीं की'' और मन ही मन कहते हैं कि ''जो हुआ अच्छा ही हुआ'।

266. बाहर से विराट नजर आना सरल है किन्तु अन्दर से विराट होना कठिन है।

267. वीरांगना की तरह जीने वाली महिलाओं को उनकी मजबूरियाँ अतृप्ति तथा प्रबल चाह वीरांगना बना देती हैं।

268. इज्जत और कमजोरी दो सगे भाई हैं। इज्जत के चक्कर में लोग अपना जीवन बर्बाद कर देते हैं।

269. गुजरता हुआ वक्त अनेक फैसले अपने आप करा देता है। किसी ने कहा है कि-

इक ना इक दिन फैसला करना होगा।
जो भी करना है इसी नस्ल को करना होगा।।

270. दो कमजोर इन्सान इक शानदार जिन्दगी नहीं जी सकते।

271. आदमी तभी चिल्लाता है जब सुनाने को कुछ न हो और सुनाना सबको हो तथा सुनने वाला सुनना न चाहे।

272. दूसरों के आराम को देखकर चिढ़ना और फिर कहना कि हमें तो नींद भी नहीं आती। यह कहाँ तक उचित है?

273. यदि आपके वर्तमान का कोई भविष्य नहीं है तो भूतकाल की परवाह क्यों करते हो?

274. विरासत को बचाने की बात वे लोग अधिक करते हैं जिन्हें विरासत की पहचान भी नहीं होती।

275. न हाल ठीक है न चाल ठीक है और रोना इस बात का है कि वे समझते ही नहीं, कहते हैं कि मालामाल हो गये तो हाल-चाल, बाल और ढाल सब ठीक हो जायेंगे।

276. दुश्मनी से दोस्ती हर हाल में अच्छी होती है बशर्ते वह नेक नीयत से की जाये।

277. परीक्षा होती ही ऐसी है जिससे सब भागना चाहते हैं, परीक्षार्थी भी और परीक्षक भी।

278. अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी बुद्धि, जीवन के दो सबसे बड़े बरदान हैं।।

279. 'एक से भले दो' तभी ठीक होते है जब दोनों भले हों।

280. सपने आसमान के हैं तो ठीक है पर तैयारी तो जमीन पर करो। बिना तैयारी के आसमान में क्यों उड़े जा रहे हो?

281. जब झगड़ने के लिए कुछ नहीं होता तब यह शिकायत कितना झगड़ा पैदा कर सकती है कि तुम हमें क्यों नहीं चाहते?

282. नौका प्रायः समुद्र के सीने में उतरती है, तैरती है, लेकिन नहीं जानती कि समुद्र का दुख क्या है? इसी तरह आदमी मौत के दरिया में उतरता है, तैरता है किन्तु आज तक भी कहाँ जान पाया है कि इसका रहस्य क्या है?

283. निन्दक के पास न हृदय होता है, न बुद्धि होती है। फिर भी विद्वानों ने उसे वन्दनीय माना है, क्योंकि वह आजीवन स्वयं गन्दगी में रहकर दूसरों की गन्दगी साफ करता है।

284. जन्म को नहीं, मरण को मंगलमय बनाओ, यदि मरण मंगलमय बन गया तो जन्म स्वर्ग कहलायेगा।

285. हम जो कुछ कर रहे हैं, हमारे उन कार्यों में हमारे परिवार का परिचय अन्तर्निहित है।

286. पक्षी दो पंखो से आकाश में उड़ता है, इसी प्रकार साधक को चैतन्यता के आकाश में विहार करने के लिये बोध और वैराग्य के दो पंख चाहिये।

287. ममता फाँसी है, समता सिंहासन है। जीव ममता से बंधता है और समता से मुक्त होता है।

288. यदि जीवन में कुछ अनहोनी होवे तो उसकी चिंता करो किन्तु,

अनहोनी कभी नहीं होती, जो होनी है वही होती है, फिर चिंता क्यों करते हो?

289. प्रेम की गहराई सदैव आँखों से झलकती है, बातों से नहीं।

290. **सर्प डसै सु नहीं कुछ तालुक, बीछू लगै सु भलो करि मानौ।**
सिंह खाय तो नाहिं कछु डर, जो गज मारत तो नाहिं कछु हानौ।।
आगि जरै जल बूड़ि मरौ गिरि, जाई गिरौ कछु मैं मत आनौ।
सुन्दर और भले सब तो यह दुर्जन संग भलो मत जानौ।।

291. शंकाओं से भय पैदा होते हैं, शंकित व्यक्ति हमेशा भयभीत रहता है।

292. गृहस्थ श्रावक का जीवन एक तपोवन है, जहाँ रहते हुये धर्म की साधना आराधना के बल से उसे अपना जीवन निखारना है। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए तीन आधार आवश्यक है - सच्ची श्रद्धा, सद्विवेक और सम्यक् आचरण।

293. जैसा वातावरण मिलता है, जैसे संयोग मिलते हैं, मन में उसी प्रकार के शुभ-अशुभ भाव उत्पन्न होते हैं, उन भावों के अनुसार ही कर्म का बंध होता है।

यह जरूरी है कि अच्छी रहे संगति तेरी।
ताकि ले सके अच्छा असर उससे तेरा अन्तःकरण।।
तू कुसंगति से बच, और किया कर सत्संग।
क्योंकि किस्मत से मिला है यह मनुष्य का जीवन।।

294. जिस प्रकार हम दुनियाँ की चिंता करते हैं उसी प्रकार अपना चिंतन करें तो सुख का अनुभव होगा, पापों को उत्साह पूर्वक करना, संसार की

चिंतायें करना दुःख का कारण है, चिंतन ही आत्मा की उन्नति का एक मार्ग है।

295. जो आनंदपूर्वक जीवन जीना चाहते हैं ऐसे विवेकशील मानव को इन दो सूत्रों का प्रयोग अवश्य करना चाहिये। १. घर में रहना, मेहमान की तरह २. काम करना- मुनीम जैसे। इस जीवन शैली में संसार, शरीर, भोगों से विरक्ति का अभिप्राय निहित है।

296. सरलता से जीव निर्भय रहता है।

तुझको संसार में रहना है तो इस तरह से रह।
जिस तरह राज्य में सम्राट रहा करते हैं।।
ज्ञान है आत्मा का तुझको तो सम्राट है तू।
कुटिलता में फँस के तो, कंगाल जिया करते हैं।।

297. अध्यात्म का अमृत संयमित चित्त में ही ठहरता है। असंयमित और चंचल चित्त फूटी बाल्टी के समान होता है जिसमें क्षण-भर के लिये उपदेश रूपी जल भरता है, किन्तु चंचलता के छिद्रों के कारण हृदय में टिकता नहीं।

298. चाहना, मन की परिणति है और प्राप्ति की लिप्सा से लोभ-तृष्णा में बदल जाता है।

मन किया करता है एक आरजू, सुख की ही तलाश।
राह अब इसको दिखानी है कराना है विवेक।।
इन्द्रियाँ तेरी हैं ये दुख की दुकानें सारी।
मन खरीद्दार है ले लेता है दुख दर्द अनेक।।

299. ऊर्जा का क्षय मनुष्य को अव्रत की ओर ले जाता है, जिससे शारीरिक शक्ति तो नष्ट होती ही है बौद्धिक बल और चिंतन शक्ति भी कमजोर हो

जाती है इसलिए ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है।

300. कुछ न कुछ कर बैठने को ही कर्तव्य नहीं कहा जा सकता। कोई समय ऐसा भी होता है जब कुछ न करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य माना जाता है।

301. लज्जा का आकर्षण सौन्दर्य से भी बढ़कर है।

302. जिसके जीवन में सत्कर्म रूप प्रवृत्ति है, और जिसके अंतर में अपने कल्याण का लक्ष्य है वही आत्मदर्शन और प्रभुदर्शन को प्राप्त कर सकता है।

जीव से ब्रह्म कहीं दूर नहीं गैर नहीं।
अंश से अंशी कभी दूर नहीं होता है।।
एक अज्ञान के परदे से अलग हैं दोनों।
वो जो हट जाये तो फिर योग यही होता है।।

303. जिन्होंने अपनी आत्मा के साथ ही युद्ध किया है और आत्मा को आत्मा के द्वारा जीता है वही व्यक्ति सुख पाता है।

304. जिस प्रकार कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में समेट लेता है, उसी प्रकार मेधावी पुरुष आध्यात्मिक भावना द्वारा पाप कर्मों से अपने आपको हटा लेता है।

305. अविनीत को विपत्ति प्राप्त होती है और सुविनीत को सम्पत्ति ये दो बातें जिसने जान ली हैं, वही शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

306. सफलता, भाग्य अथवा प्रतिभा का विषय नहीं है। सफलता तो पर्याप्त तैयारी एवं अटूट निश्चय पर निर्भर करती है।

307. मन को स्थिर कर, कही हुई बात कभी-कभी साधारण होने पर भी बड़ा काम कर जाती है।

308. सुख के सम्बन्ध में शुद्ध विचार ही सुख की परिस्थितियों को निर्मित करेंगे।

309. कल्याण प्राप्ति में खुद की लगन काम आती है। खुद की लगन न हो तो गुरु क्या करेगा? शास्त्र क्या करेगा?

310. अपने कर्तव्यों का पालन न करके केवल बातें बनाने वाला व्यक्ति उस उद्यान के समान है, जिसमें फूलों के स्थान पर केवल घास-फूस उगी हुई है।

311. प्रबल चारित्र, प्रबल चिन्तवन से ही निर्मित होता है। सद्कार्य, सद्विचारों के कारण ही उत्कृष्ट परिणाम होते हैं।

312. जीभ को हमेशा अनुशासन में रखें अन्यथा वह तो बोलकर अन्दर चली जायेगी और जूते सिर को खाने पड़ेंगे।

313. चालक और मालिक दोनों कार चलाते हैं, परन्तु चालक कार की सुरक्षा का उतना ध्यान नहीं रखता जितना मालिक रखता है अतः इस देह को चालक की तरह दास बनाकर नहीं स्वामी की तरह चलाओ।

कौन मालिक है तेरा पहले तो पहचान यह कर।
और फिर कर दे सुपुर्द उसको तू सब कुछ अपना।।
और फिर हर फिक्र से कर ले तू खुद को आजाद।
सच्चा मालिक है जो तेरा, दगा न देगा रखना याद।।

314. स्वास्थ्य के नियम उनको दण्डित करते हैं जो उनका उल्लंघन करते हैं।

315. निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करने से व्यवहार भी बढ़िया होता है और ममता भी टूट जाती है।

316. महिलाओं की दृष्टि में उससे भी अधिक शक्ति है जितनी हमारे कानूनों में होती है तथा उनके आंसुओं में उससे भी अधिक बल होता है जितना कि हमारे तर्कों में होता है।

317. गुरु मोमबत्ती की तरह स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है।

318. कार्यसिद्धि के लिए केवल आवश्यक उपकरण की आवश्यकता नहीं, वरन् उन श्रेष्ठ उपकरणों का उपयोग करने के लिए समय लगाना भी आवश्यक है।

319. समय के सच्चे मूल्यों को समझो, इसके प्रत्येक क्षण को छीनो पकड़ो एवं उसका आनन्द लो।

320. वह व्यक्ति जो अपने स्वयं के कार्यों पर भली-भाँति एवं सही रूप से विचार करता है, मुश्किल से ही दूसरे के कार्यों का आंकलन करने के लिए बहुत कम कारण पायेगा।

321. सद्पुस्तकें वह प्रकाश गृह हैं, जो समय के विशाल समुद्र में खड़ी की गई हैं।

322. जिसका मिलना अवश्यंभावी है, उस परमात्मा से प्रेम करो, और जिसका बिछुड़ना अवश्यंभावी है, उन संसारियों के प्रति सद्भाव रखो।

323. हमारा महान उपक्रम उसे देखना नहीं है जो अस्पष्ट सी दूरी पर विद्यमानहै, अपितु वह करना है जो स्पष्ट निकट ही विद्यमान है।

324. जीवन में बाधाओं से मत घबराईये, आखिर दुनियाँ में ऐसा कोई गुलाब नहीं जो बिना कांटों का हो।

325. जो दुनियाँ का गुरु बनता है, वह दुनियाँ का गुलाम हो जाता है और जो अपने आपका गुरु बनता है वह दुनियाँ का गुरु हो जाता है।

326. भाव विहीन वाणी स्वर्ग को स्पर्श नहीं करती है, अतः प्रत्येक को भाव सहित वाणी बोलनी चाहिये।

327. गीला व कच्चा बाँस आसानी से मोड़ा जा सकता है वही सूख जाने पर मुड़ता नहीं है, टूट जाता है। उठती आयु में मन को सम्भाला जा सकता है। बुढ़ापे में तो जड़ता जकड़ लेती है इसलिये न आदतें बदलती हैं न मानसिकता सुधरती है।

328. गीली मिट्टी से ही खिलौने और बर्तन आदि बनते हैं, पकाई हुई मिट्टी से कुछ नहीं बनता। लिप्सा की आग में जिसकी भावना जल गई है, उसका न भक्त बनना सम्भव है न ही धर्मात्मा।

329. पतंगे को दीपक का प्रकाश मिल जाये तो वह अंधेरे में नहीं लौटता, भले ही उसे दीपक के साथ प्राण गँवाने पड़े। जिन्हें आत्मबोध का प्रकाश मिल जाता है वे अविद्या के अन्धकार में नहीं भटकते भले ही उन्हें धर्म के मार्ग में अपना सर्वस्व समाप्त करना पड़े।

330. धागे में गाँठ लगी हो, तो वह सुई की नोंक में नहीं घुस सकता और उससे सिलाई नहीं हो सकती। मन में स्वार्थ भरी संकीर्णता की गाँठ लगी है तो वह ईश्वर की भक्ति में नहीं लग सकता। जीवन में कोई भी लक्ष्य प्राप्त नहीं

कर सकता।

331. चुम्बक पत्थर पानी में पड़ा रहे, तो भी उसका लोहा पकड़ने और रगड़ते ही आग निकलने का गुण नष्ट नहीं होता, विषम परिस्थिति में घिरे रहने पर भी सज्जन अपनी आदर्शवादिता नहीं छोड़ते।

332. दुखी व्यक्ति को चुपचाप अपना दुख भोग लेना चाहिये। बाहर धुँआ उड़ाने से क्या लाभ? भीतर ही जब धुँआ प्रकाश में न बदल जाये तब तक किसी को कुछ कहना व्यर्थ है। धुएँ के बाद अग्नि अवश्य जल उठेगी यह प्रकृति का नियम है।

333. अपना केन्द्र अपने से बाहर मत रखो, यह आपका पतन कर देगा। अपने में अपना पूर्ण विश्वास रखो अपने केन्द्र पर डटे रहो। कोई भी शक्ति तुम्हें हिला न सकेगी।

334. मृत्यु केवल मनुष्य के लिए है। मरते तो पौधे और पशु भी हैं लेकिन मरने का बोध मनुष्य को होता है इसलिये पौधे और पशु, धर्म को जन्म देने में असमर्थ हैं।

335. सज्जन मनुष्य कहते हैं:- जब कभी मुझे दोष देखने की इच्छा होती है, तो मैं स्वयं से ही आरम्भ करता हूँ और इससे आगे ही नहीं बढ़ पाता।

336. चिथड़े का निरादर मत करो क्योंकि उसने भी किसी समय किसी की लाज रखी थी।

337. रत्नत्रय धर्म या दश लक्षणयुक्त धर्म या षडावश्यक कर्तव्यों का पालन अथवा अहिंसादि पाँच महाव्रत/अणुव्रत या सच्चे देव, शास्त्र, गुरु, ये ही जीवन का सम्यक् सहारा है।

338.जिसके पास धर्म का सहारा नहीं है, वह जीवन में हारा है, दुनियाँ की दृष्टि में बेचारा है, भवाटवी में फिरता मारा मारा है, गृह कुटुम्ब ही उसका कारागार (गारा) है, जिसने धर्म को जीवन में धारा है उसको ही मिला भव का किनारा है।

339.संसार में घटने वाली कोई भी घटना चाहे वह जन्म की हो या मृत्यु की,दीक्षा की हो या शिक्षा की, युद्ध की हो या बुद्ध की, चढ़ने की हो या गिरने की, बनने की हो या मिटने की, तपने की हो या पकने की, इष्ट सम्प्राप्ति की हो या अनिष्ट प्राप्ति की, दुख की हो या सुख की, राग की हो या विराग की, त्याग की हो या दाग की। ये समस्त घटनायें अपने स्वरूप को प्राप्त करने के लिये एक इशारा हैं। बुद्धिमान इस इशारे को समझकर स्व-स्वरूप को पा जाते हैं, बुद्धिहीन/पुण्यहीन भव वारिधि में ही समा जाते हैं।

340.भक्त भगवान के बिना, सेवक स्वामी के बिना, शिशु माता पिता के बिना, स्त्री अपने पति के बिना, वृद्ध माता पिता अपने पुत्र बहु आदि परिवार के बिना, निर्धन धन के बिना जिस प्रकार स्वयं को असहाय और अनाथ मानते हैं उसी प्रकार एक शिष्य गुरु के बिना स्वयं को असहाय और अनाथ समझता है।

341.भाग्यवान वह है जिसका धन गुलाम है और अभागा वह है जो धन का गुलाम है, भाग्यवान धन को भोगता है, अभागे को धन भोगता है,भाग्यवान के पास धन आता है, अभागा धन के लिये मारा मारा फिरता है, महा भाग्यवान वह है, जो धन का त्याग/दान करता है, महाअभागा वह है जो दूसरों के धन को छीनता है, चोरी करता है,नीयत खराब करता है, दर दर भटकता हुआ याचना करता है।

342.हे याचक! भीख मांगने से हांड़ी तो चढ़ जायेगी किन्तु गौरव गिर जायेगा, पेट तो भर सकता है, किन्तु पुण्य का कोष खाली हो

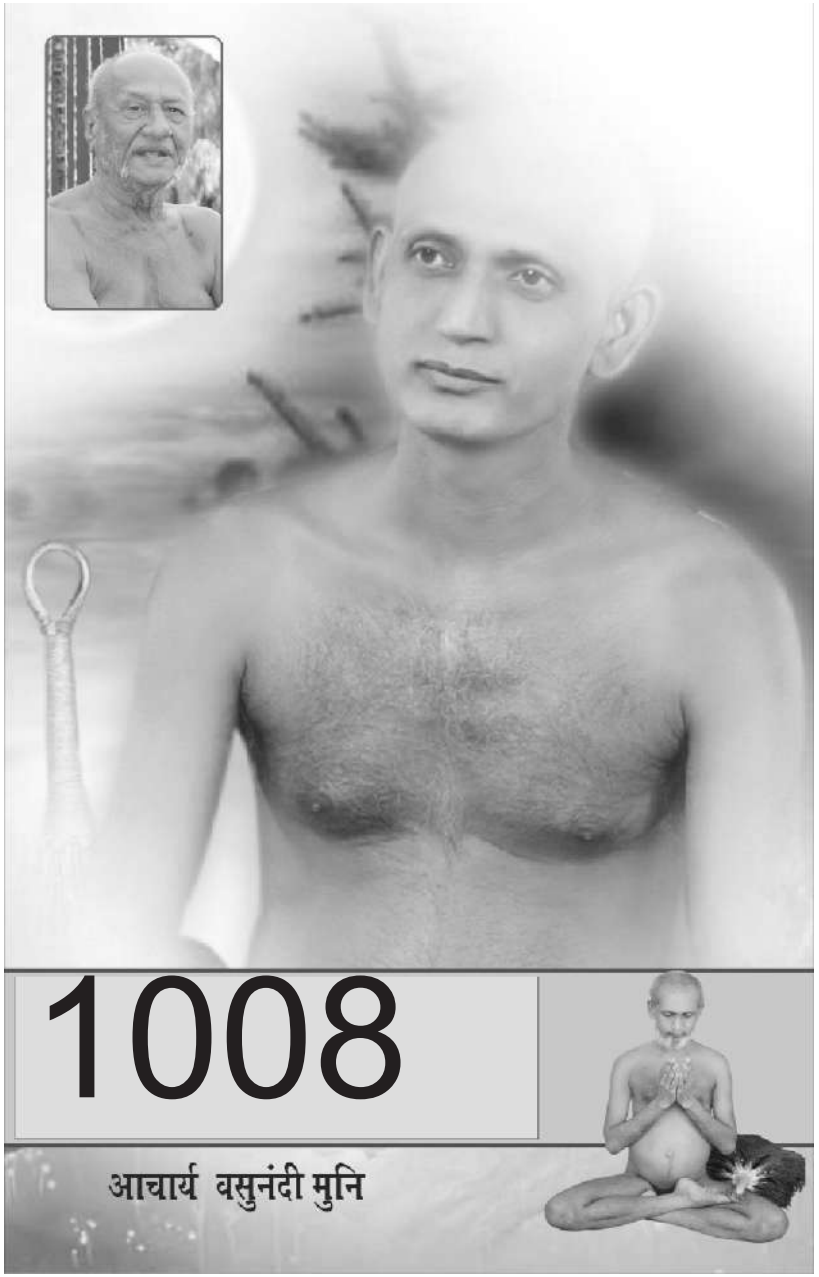

जायेगा, क्षणिक सुख तो पा लोगे किन्तु शाश्वत दुख से कैसे निकलोगे?

343. संसार में आकृति से मानव बहुत है किन्तु प्रकृति से मानव या मानवता विरलों में होती है, धन से धनी बहुत हैं किन्तु मन के धनी विरले ही होंगे, बाहर सौंदर्य तो बहुत जगह मिल सकता है किन्तु अंतरंग सौंदर्य विरले के पास होगा, तन के साधु तो बहुत हैं, किन्तु मन की साधुता बताओ कितनों के पास है।

344. मनुष्य का आचार विचार, व्यवहार ये निर्मल और स्वच्छ दर्पण हैं जिनमें मानव अपना विचित्र चित्र और विचित्र चरित्र देखने में समर्थ हो सकता है।

345. वही मनुष्य भाग्यवान कहा जा सकता है, जिसके पास संतोष, समता, शांति, सम्यक्त्व, सुबोध, संयम, सन्मति, सरलता,सहजता, सादगी एवं सुख विद्यमान हैं।

346.मनुष्य स्वयं ही अपने मित्र-शत्रु, सुख-दुख, शांति-अशांति, सौभाग्य-दुर्भाग्य, स्वर्ग-नरक का निर्माता है, अन्य कोई नहीं।

347. मधुरवाणी एवं सरलता से वे सब काम सिद्ध हो सकते हैं, जो कटु व्यवहार, मायाचारी, धन वैभव एवं शक्ति प्रदर्शन या शक्ति के दुरुपयोग से नहीं हो सकते।

348. मैं अपने पापों से डरता हूँ, अपराधी बन कर स्वामी के सामने जाने से डरता हूँ, इसके अलावा उससे भी डरता हूँ जो पापों से, प्रभु से और गुरू से भी नहीं डरता।

349. वस्त्र जल से, स्वर्ण अग्नि से, मन सत् विचारों से, तन गुरु सेवा से, वचन ज्ञानामृत से/नीति वाक्यों से आत्मा प्रभु भक्ति व धर्मध्यान से और बुद्धि सत्संगति से शुद्ध होती है।

350. धनबल से श्रेष्ठ सैन्यबल, सैन्यबल से श्रेष्ठ तन बल, तन बल से श्रेष्ठ नैतिक बल, नैतिक बल से श्रेष्ठ मनोबल, मनोबल से श्रेष्ठ सत्यबल, धर्मबल, आत्मबल होता है।

351. हमारा हृदय सागर की तरह गंभीर, आकाश की तरह विराट, जल की तरह निर्मल, पुष्प की तरह सुन्दर व कोमल, स्वप्न की तरह आनंद का सृजक, काल द्रव्य की तरह अनासक्त, निर्लिप्त, साक्षी हो जाये तो सुखद शांति आपों आप रास्ता पूंछती हुई आपके पास आ जायेगी।

352. तन रोगी हो सकता है, सद्गुण या अच्छाईयाँ नहीं, मृतक तन को जलाया जायेगा, सद्गुण व अच्छाईयों को नहीं, अतः अपना तन सद्गुणों, व्रतों, अच्छाईयों से, धर्मानुभूति से बनाओ जिससे तुम सदैव जीवंत रहो।

353. अच्छे विचारों पर अमल न किया जाये या उन्हें जीवन में स्थान न दिया जाये तो स्वप्नवत् या अतिथि के समान या हवा में तैर कर आयी सुगंध की लहर के समान ही होगें।

354. जीवन में सर्वोत्कृष्ट सुख शांति पाने हेतु यदि तुम सच्चे देव, प्रभु परमात्मा, शास्त्र, धर्म, नीति ग्रंथ, गुरु, संत, महात्मा, साधक की आज्ञा, उपदेश, निर्देशानुसार चल सको तो अति उत्तम, यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते तो अपनी आत्मा की निष्कंप आवाज के अनुसार चलो।

355. अरे! तुम दूसरों के बिगड़ते काम देखकर क्यों हँसते हो? तुम्हारी नाव अभी भी समुद्र के मध्य है और वह कभी भी डूब सकती है तथा किनारे पर पहुँचने वाले कभी दूसरों पर हँसते नहीं।

356. भयंकर झूँठ वह नहीं जिसे बोला जाता है, अपितु वह है जिसे सत्य माना जा रहा है या सत्य मान कर जिया जा रहा है, जिया जाता है। यदि झूँठ बोलना नहीं छोड़ सकते तो न छोड़ो किन्तु झूठ को झूठ, सत्य को सत्य मान लो, तुम्हें सत्य की उपलब्धि हो जायेगी।

357. जो व्यक्ति संकल्प का धनी है, निरंतर उद्यमशील है, आत्मविश्वासी है, मनोबली है, अदम्य साहसी है, उसे अपने उद्देश्य की पूर्ति करने से कौन रोक सकता है।

358. सुख का आधार पुण्य है, पुण्य का आधार चित्त की सरलता है, उसका भी आधार यथार्थ बोध है, उसका आधार सत्य है अतः सच्चाई को सच्चाई से जीवन में सच्चा स्थान देना सीख लो।

359. जो निर्बल व्यक्तियों पर करुणा, दया, सहानुभूति, प्रेम, वात्सल्य एवं सहयोग की भावना नहीं रखता उसे बलवानों के अत्याचार सहन करने के लिये मजबूर होना पड़ता है।

360. जिसका निर्णय दृढ़ एवं अटल है, जिसके साथ सत्य की शक्ति है, वह दुनियाँ को भी अपने सांचे में ढ़ालने में समर्थ है।

361. जो व्यवहार हम दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं वही व्यवहार हमें दूसरों के प्रति करना चाहिये। यही धर्मात्मा का मूल लक्षण है।

362.उच्च कुल में जन्म होने मात्र से व्यक्ति उच्च नहीं होता जब तक कि वह उच्च कार्य सम्पन्न न करे, उच्च भाव न बनाये।

363. जीवन को सही रूप से जानना है तो समय की गतिशीलता व पदार्थों की क्षणिकता को जान लो, क्योंकि समय ही जीवन है, जो समय को बर्बाद करता है मानो वह अपना जीवन ही बर्बाद करता है।

364. अपनी प्रशंसा और दूसरों की निंदा नीच गोत्र के आस्रव का कारण है, जो पुरुष ऐसा कार्य करें उसे उच्च पुरुष कैसे कहें?

365. तुम पर पुरुषों की किसी कृति व क्रिया की निंदा भी कर सकते हो और प्रशंसा भी, दूसरों की निंदा करने वाला प्रशंसनीय नहीं हो सकता, अतः जिसकी निंदा कर रहे हो, उसके गुणों की प्रशंसा करो तो वे गुण तुम्हें भी प्राप्त हो सकते हैं।

366. प्रेम का जन्म चित्त की सरलता व चेहरे की प्रसन्नता से होता है, अहंकार, ईर्ष्या व स्वार्थमय वृत्ति प्रेम के संहारक हैं, अतःगुणानुरागी एवं निश्छल प्रेमी बनो।

367. आलसी, चंचल चित्त वाले, अनुशासन हीन, पर निंदक, विषयासक्त एवं धर्म से विमुख प्राणी स्वयं के घातक तो हैं ही, जो उनकी संगति में पहुँच जाता है, उसका भी कुछ न कुछ अहित होता ही है।

368. जो वाणी सत्य की, धर्म की, प्राणियों की रक्षा करती है उस वाणी और प्राणी की रक्षा में सत्य, धर्म व प्राणी मात्र सदैव तत्पर रहते हैं।

369. जो पुरुषार्थी नहीं हैं वे ही अपने दुर्भाग्य की और दूसरों के

सौभाग्य की निंदा किया करते हैं, किन्तु पुरुषार्थी या उद्यमशील कभी किसी की निंदा नहीं करते कदाचित उनके श्री मुख से कोई निंदा का शब्द निकलेगा भी तो केवल अपनी या अपनी अकर्मण्यता की ही निंदा करेंगे।

370.सच्चा सुखी वही है जिसने अपने सुख को अपने अंदर अपने ही पुरुषार्थ से अर्जित किया है। दूसरों के सुख पर या दुख पर आश्रित सुख भी दुख का कारण होने से दुख ही है, पर वस्तु पर आधारित सुख तुम्हारा निजी और शाश्वत सुख नहीं हो सकता।

371. इस संसार में न कोई अपना है न पराया, न कोई अच्छा है न कोई बुरा,न कोई मित्र है न कोई दुश्मन, न कुछ भी दुखद है न सुखद। ये सब अवस्थायें तो हमारे रुग्ण मन के विचारों, कल्पनाओं व धारणाओं की परछाई मात्र हैं।

372. बुराई का बदला महापुरुष भलाई से देते हैं जबकि अधम पुरुष भलाई का बदला भी बुराई से देता है। चन्द्रमा व सूर्य अपने निंदकों को भी प्रकाश देते हैं, पुष्प व चंदन हंता को भी सुवास देते हैं, कांटे, जहर, कालिमा अपने चाहने वाले, खाने वाले,छूने वाले को दुख, मृत्यु और कालिमा ही देते हैं।

373.असंतुष्ट व्यक्ति दूसरे को संतुष्टि प्रदान करने में असमर्थ होता है, अपनी संतुष्टि दूसरों की संतुष्टि भी बन सकती है।

374. निर्धनता में भी दान देने वाला, सत्ता को पाकर भी सत्य को न भूलने वाला, वैभव पाकर मद से न फूलने वाला,कष्ट के समय न कूलने वाला, विषय भोग्य पदार्थों को पाकर न झूलने वाला जिसका चित्त है वह आत्म कल्याण में निरत है ।उसका कोई भी अहित नहीं कर सकता।

375. अपना चित्त विशुद्ध हो, सदैव दूसरों को देने का भाव रहे, सबके कल्याण की भावना हो, विवेक की सुदृढ़ दीवारों को जहाँ कषायें या वासनायें न तोड़ सकें, पाप की वर्षा से बचाने वाली संयम की सुदृढ़ छत हो ऐसी सुरक्षित आत्मा का अहित कौन कर सकता है अर्थात् उस आत्मा का हित तो नियामक समझो।

376. आपत्ति व विपत्ति के पहरेदारों के बिना मिले, पुण्य के दरवाजे में प्रवेश किये बिना सच्ची सम्पत्ति प्राप्त कर पाना असंभव है अतः विपत्ति को सम्पत्ति का कारण ही समझो।

377. हमें साधना तब तक करते रहना है, जब तक साधना स्वयं न होने लगे, जब साधना स्वतः ही नैसर्गिक रूप में होने लगेगी, तब आपको साधना करने की कोई भी आवश्यकता नहीं रहेगी।

378. निर्धनता, निर्मलता, निश्छलता, निर्ममता, दीनता या हीनता के प्रतीक या कारण नहीं हैं, दीनता व हीनता के कारण तो याचना प्रवंचना, कामना, वासना और कर्तव्यों को भूल जाना है।

379. जिस प्रकार कपड़े बदलने से शरीर नहीं बदलता, वस्त्र के गंदे होने से या जीर्ण होने से शरीर जीर्ण या गंदा नहीं होता उसी प्रकार शरीर के बदलने, नष्ट होने, जीर्ण या मलिन होने से आत्मा उस अवस्था को प्राप्त नहीं होती।

380. जो पुरुष स्वास्थ्य, समझदारी, सामर्थ्य, सामग्री, साधन,समय, अनुकूल साथी पाकर भी शिव सुख पाने की साधना नहीं करते उनका जीवन सदैव अंधकार मय रहता है।

381. ज्ञानी पुरुष सदैव अपने कर्तव्यों का पालन करने में ही तत्पर देखे जाते हैं, वे फलाकांक्षा से रहित रहते हैं, यद्यपि सत्कार्य करने वाले को सत्फल ही मिलते हैं, किन्तु मांगने से नहीं, साधक साधना करने से ही।

382. भगवत् भक्ति सौभाग्य की निर्माता है, गुरु सेवा गुणों का आधार है, संतों का सानिध्य संयम का कारक है, शास्त्रों के उपदेशों का अनुपालन शस्त्र की तरह आत्म रक्षक है, धर्म करना ही आत्मा का वास्तविक कार्य है और सब तो क्रमशः असाता, दुर्भाग्य, भार, मारक, भक्षक, या भ्रम ही समझो।

383. प्रतिदिन की कलह से घर, कटु वाक्यों से मित्रता, स्वार्थवृत्ति से प्रेम,अहंकार से सम्मान, निंदा करने से यश, याचना करने से साख, बुरे शासक से राष्ट्र, स्वार्थी पापासक्त गुरु से पुण्य, कुकर्म से सर्व धर्म साधना नष्ट हो जाती है।

384. ज्ञानी पुरुष वही है जो जीवन के अमूल्य क्षणों को अमूल्य या बहुमूल्य कार्यों के सम्पादन में व्यय करे तथा अज्ञानी वह है जो बहुमूल्य समय को निर्मूल्य, अनर्थकारी कार्यों में गंवाता है।

385.चित्त की शांति ही सुख है, चित्त की अशांति ही दुख है,चित्तकी शांति हेतु किये गये सार्थक प्रयास, उपाय ही सच्ची साधना है तथा जिन कार्यों से, कारणों से चित्त क्षुभित हो उसे धर्म साधना, सम्यक् सुखोपाय कैसे कहें?

386. कटु वचनों का घाव तलवार के प्रहार से भी ज्यादा भयंकर होता है, अतः तलवार का बार करने से पहले जितना सोचते हो, उससे ज्यादा शब्दों का प्रहार करने से पहले सोचना चाहिये।

387. निष्काम भक्त, संतोषी आराधक, निस्पृह उपासक के सामने उसका भगवान, आराध्य, उपास्य भी झुक जाता है। भक्ति करके यदि आपने कुछ पा लिया है या मांगा है तो आपने सच्ची भक्ति की ही नहीं, आपने तो व्यापार किया है। एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु खरीदी है, अपने उपास्य पर अहसान थोड़े ही किया है।

388. न्यायोपार्जित धन, सत्य वचन, अहिंसक प्रवृत्ति, विशुद्ध विचार, निष्काम भक्ति, निर्मल सदाचार, कृतज्ञता से युक्त परोपकार, विनम्रता से युक्त ज्ञान आत्मा का हित करने में समर्थ साधना है इन्हें सदैव प्राप्त करने हेतु तत्पर रहो, इनकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

389. जो अपनी सहायता करने में सदैव समर्थ है जो कभी भी दूसरों से सहायता नहीं मांगता, अपने आप में संतुष्ट है तथा दूसरों की सहायता हेतु सदैव तत्पर है प्रत्येक शक्ति और प्रकृति उसकी सहायता हेतु सदैव तत्पर रहती है।

390. कहने मात्र से काम नहीं चलता, काम चलता है, करने से, जो कहता है वह मिठाई की चर्चा या व्यापार करने वाले की तरह है । जो करता है वह मिठाई खाने वाले के समान है, मिठाई खाऊँगा कहने से मुँह मीठा नहीं होगा, मीठा खाने से मुँह मीठा होगा।

391. पाप पहले मन में आता है, फिर वाणी में आता है फिर आचरण में आ जाता है, मन में आये पाप विचार को निकालना मुश्किल है, वाणी में आये पाप को छोड़ना उससे भी ज्यादा कठिन है तथा आचरण में प्रविष्ट पाप का त्याग करना अत्यंत दुष्कर है।

392. जो मनुष्य सज्जनता के व्यवहार में कुशल है, सत्य का इच्छुक है,

विनम्र है, सरल चित्त की दशा में प्रवर्तित होता है, वह मोक्षमार्ग में ही गतिशील है ऐसा जानो।

393. विवेक का अंकुश प्रत्येक क्रिया पर होना चाहिये किन्तु यथार्थ विवेकी जन तो वही हैं जो विवेक पर भी विवेक का अंकुश रखते हैं।

394. आचरण की उच्चता पर ही विचारों की पवित्रता निर्भर रहती है, पवित्र विचार श्रेष्ठ आचरण के जनक होते हैं, यदि वे सहजता में निज से उत्पन्न हुए हों तो।

395. भावना के तीव्र वेग में बहने वाला स्व-पर के लिये अहित कारक भी हो सकता है, अतः उस पर बुद्धि का बांध बांधना जरूरी है, क्योंकि उच्छृंखल नदी तीव्र वेग से बहेगी तो वह संहारक ही होगी सृजक नहीं।

396. मनुष्य की दुर्भावना दूसरों का अहित करे या न भी करे, किन्तु स्वयं के लिये तो नियम से अहितकारक ही होती है अतः शत्रु से न हीं अ प नी दुर्भावना से बचो।

397. दुराचार काया का, दुर्वचन वाणी का, दुर्भावोत्पत्ति मन का, दुःशासन सत्ता का कलंक है। इसे छोड़कर सदाचार से काया का, हितमित प्रिय वचनों से वाणी का, सम्यक् विचारों से मन का, परोपकार, अहिंसा से, सत्ता का सदुपयोग करो।

398. नाशवान सुख का सर्वथा और सर्वदा के लिये त्याग करने से ही अविनाशी सुख का मार्ग प्राप्त होता है, सब कुछ को पाने के लिये कुछ को छोड़ना परमावश्यक है, दोष त्याग बिना गुण प्राप्ति असंभव ही होती है।

399. जो मन चाहा बोलता है उसे अनचाहा सुनना पड़ता है, जो इच्छानुसार चाहता है उसे भिक्षा मांगनी ही पड़ती है, जो मनोनुकूल चाहता है उसे मनःशूल का कष्ट भी झेलना पड़ता है, अतः धर्मानुकूल प्रवृत्ति बनाओ, इसी में आत्महित है।

400. जो दूसरों के दोषों को देखकर, सुनकर आनंद लेता है तब दुनियाँ उसे दोष देकर व उसके दोष देखकर एवं दोषों को सुनकर हँसती है तथा जो दूसरों के गुणों को सहन नहीं करता, सुनना नहीं चाहता तो समझो दुनियाँ भी उसके गुणों को न सहन करती है और न सुनना चाहती है।

401. जो देता है उसे मिलता है, जैसे देता है, वैसा ही अनेक गुणित रूप में मिलता है, अतः तुम जो चाहते हो वही देना प्रारंभ करो।

402.ज्ञानी शक्तिहीन एवं असमर्थों की सहायता करता है किन्तु अज्ञानी उन पर जुल्म ढाहता है, सताता है, अत्याचार करता है,अहो महानुभाव! निर्बल पर इतना अत्याचार मत करो कि वह आँसुओं का बदला लेने के लिये किसी का खून बहाने की सोचें।

403. धर्म से नियंत्रित राजनीति, गुरु से नियंत्रित शिष्य, शासक से नियंत्रित राज्य, स्वामी से नियंत्रित सेवक, प्रभु से नियंत्रित धर्म, किनारों से नियंत्रित नदी, मर्यादाओं से नियंत्रित पुरुष उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं।

404. अनर्थक बकवास, व्यर्थ का वचनालाप एवं अल्प फल का दाता अधिक वार्तालाप, विवाद तथा बहस छोड़कर मौन धारण करना जीवन को सार्थक करने की कला है।

405. अच्छे विचार अंतरंग का सौंदर्य हैं, धर्म ध्यान की वृद्धि अंतरंग की स्वस्थता का प्रतीक है तथा बाह्य स्वास्थ्य और सौंदर्य बाह्य जगत में सुखद, सम्मानीय, सर्वप्रिय होता है किन्तु अंतरंग के सौंदर्य व स्वस्थता के अभाव में जीवन सफल व सार्थक नहीं कहा जा सकता।

406. अहिंसा के मार्ग पर कायर नहीं चल सकता, अहिंसक व्यक्ति हिंसक की अपेक्षा विशेष साहसी, निर्भीक, आत्मविश्वासी महान है, कायर, भीरू, चंचल एवं अधर्म व्यक्ति हिंसक के ही पोषक, समर्थक एवं संवाहक हो सकते हैं अहिंसक के नहीं।

407. ईमानदार, वफादार, यथार्थता के धरातल पर खड़ा एक सेवक, बेईमान, अन्यायी, अविश्वासी,अत्याचारी,मिथ्याभिमानी और विलासी शासक से लाख दर्जे अच्छा है।

408. हे मानव! तुम जागो, आलस्य छोड़ो, उठो, चलो और तब तक न रुको जब तक मंजिल की प्राप्ति न हो जाये।

409. अधर्म, कुधर्म, अपधर्म इन तीनों कुमार्गों से बचकर साधक को सद्धर्म, सुधर्म, स्वधर्म का आचरण करना चाहिये।

410. यदि तुम वास्तव में अपना कल्याण करना चाहते हो तो शत्रुओं को (जिनको आज तक शत्रु माना था उन मानव को) प्यार, स्नेह, मित्रता प्रदान करो अर्थात् मृदु व्यवहार करो, अपराधियों को क्षमा करो, अपने स्वामी के प्रति उदारता पूर्वक प्रेम, वात्सल्य दान, बड़ों के प्रति आदर सम्मान व विनय का भाव रखो। सरलता व सहजता में जीना सीखो।

411. मन में जमे कूड़े कचरे को साफ करना, तृष्णा की अग्नि को बुझाना, संतोष के झरने से झरते हुये शीतलता के निर्मल जल की वर्षा होना, त्याग की शीतल वायु का बहना, अपरिग्रह रूपी देवता के आगमन के प्रतीक हैं, वैराग्य रूपी जननी और तत्त्वज्ञान रूपी जनक के सहवास से ही अपरिग्रह रूपी देवता का जन्म संभव है।

412. तृष्णा की अग्नि, विषय- वासना की अग्नि, क्रोधाग्नि,जठराग्नि ये सभी अग्नि जंगल की अग्नि से भी महा भयंकर हैं।

413. अश्रद्धा,अज्ञान,असंयम,अकर्मण्यता,आलस्य,अपराधी प्रवृत्ति,अहंकार ये सप्त अकारी विष आत्मा के महान अनर्थकारीहैं, आत्महितैषी आगम अध्येता, आप्त के आराधक को एवं धर्मानुष्ठान के अनुभवी आयोजकों को उपरोक्त सात का त्याग करना चाहिये।

414. आज हमें ऐसे प्रचारक, विचारक, उपदेशक, निर्देशक, साधर्मी, सत्कर्मी, वैरागी, त्यागी, आराधक, उपासकों की आवश्यकता है जो दूसरों को संभालने से पहले स्वयं सुधर, संभल जायें एवं खुद को उपदेश, निर्देश एवं आदेश दे सकें।?

415. खाओ कम पचाओ ज्यादा, गाओ कम, रचाओ ज्यादा, क्योंकि बिना पाचन के खाना अनर्थकारी है तथा बिना रूचे या समझे भजन चिंतन व्यर्थ है। रुचिकर भोजन से तन तथा शुचितर भजन से मन स्वस्थ

और समृद्ध बनता है।

416. बुरी बात की सिफारिश या दोष पुष्टि परोक्ष में पाप ही है अतः अनुमोदक, कारित करने वाला भी पाप में हिस्सेदार है प्रेरक निमित्त या अनुमोदक ही बनना है तो धर्मानुष्ठान, पुण्य कार्यों, अच्छे व्यक्तियों, सदाचार, संयम और अच्छाईयों के बनो।

417. संसार में न तो कोई तुम्हारा मित्र है न कोई तुम्हारा शत्रु है, तुम्हारा व्यवहार ही शत्रु और मित्रता का निर्माता है। अच्छे व्यवहार से मित्रों का और कटु, दुःखद, मर्मभेदक व अपमान जनक व्यवहार से शत्रुओं का जन्म होता है।

418. त्याग भावना में ही जीवन का सही आनंद छुपा हुआ है, आसक्ति भावना तो नारकीय वेदना का अनुभव कराने वाली है त्यागी और त्याग की भावना सदैव जीवंत रहती हैं। आसक्त व आसक्ति की भावना तो मृत तुल्य है।

419. विवेकी व्यक्ति दान छपाकर नहीं छिपाकर देता है, लिखकर नहीं धर्म-धर्मात्मा को लखकर देता है, सुप्तरूप में नहीं गुप्तरूप में देता है, दाँये हाथ से भी इतनी सावधानी से दान देता है कि बाँये हाथ को मालूम भी न चले।

420. अरे! तुम कहाँ भटक रहे हो? प्रभु परमात्मा को खोजने के लिये अभी तक तुम्हें मंदिर में भी भगवान के दर्शन क्यों नहीं हुए? क्योंकि तुमने समर्पण में आज तक जीना नहीं सीखा, तुमको अब तक रोकर जीवन

जीना आया है तुमने अभी तक किसी का होकर जीवन नहीं जिया। शायद तुम यह भी नहीं जानते हो कि तुम स्वयं चलते फिरते प्रभु के जिनालय व जिनेन्द्र प्रभु हो। अंधकार त्रय का विनाश कर रत्नत्रय के दिव्य प्रकाश में उसके दर्शन भी करो।

421. संसार में दो चीजें अत्यंत दुर्लभता से प्राप्त होती हैं न्यायोपार्जित धन और सच्चे मित्र।

422. बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो बोले कम सुने ज्यादा, चुने कम गुने ज्यादा, जले कम चले ज्यादा, वहे कम रहे ज्यादा, कहे कम सहे ज्यादा, पढ़े कम बढ़े ज्यादा।

423. संसार में पढ़ना तो बहुत लोग जानते हें किन्तु क्या पढ़ना चाहिये इस बात को विरले व्यक्ति ही जानते हैं, खाना सभी खाते हैं किन्तु क्या खायें, क्या नहीं इसे कम लोग ही जानते हैं, बोलना बहुत लोग जानते हैं क्या बोलें? यह बहुत कम ही लोग जानते हैं, क्या आप नहीं चाहते कि आपकी गिनती बहुमत नहीं अल्पमत में हो?

424. हजार अच्छे कार्य करके अर्जित की गई सैकड़ों वर्षों की नेकनामी एक क्षण की बदनामी से अल्प समय में ही नष्ट हो सकती है अतः सदैव सावधान और जागरुक रहो।

425. चित्त की पवित्रता संसार की समस्त कामनाओं, वासनाओं, याचनाओं और अभिलाषाओं को तिलांजलि देने से ही मिल सकती है।

426. निरर्थक, अनर्थक व नकारात्मक विचारों की समाप्ति के लिये अपने इष्ट आराध्य देव का स्मरण, भावना, उपासना एवं ध्यान करना चाहिये।

427. तुम अपने अंतरंग में ऐसी धैर्यता प्रकट कर लो, जिससे कि दूसरे के मन, वचन, काय की प्रतिकूलता भी तुम्हारे अंतरंग को क्रुद्ध न कर सके।

428. तरुणी के साथ रमण कर, भव भ्रमण मत करो अपितु तरुणी को तरिणी के समान बनाकर तारण तरण बनो और आत्म रमण करो।

429. गुणों की संगति, गुणग्राहक दृष्टिकोंण, गुणों का सही मूल्यांकन व्यक्ति को गुणों से परिपूर्ण कर सकता है। इस हेतु हम गुणों की प्यास को तीव्र करें।

430. व्यक्ति चाहे तो संकल्प की दृढ़ता से अपनी कृति, वृत्ति, प्रवृत्ति एवं प्रकृति को बदलने में समर्थ हो सकता है।

431. व्यवहार वह दर्पण है, जिसमें मानव अपना प्रतिबिम्ब दूसरों को दिखाने में समर्थ होता है, मलिन दर्पण में निर्मल छवि नहीं दिख सकती।

432. जो आगे बढ़ने की कोशिश करता है वह गिर भी सकता है, फिर भी उसे हिम्मत नहीं हारनी चाहिये, आगे बढ़ने का प्रयास जारी रखना चाहिये, क्योंकि अच्छे कार्य करने वालों से चूक होना भी संभव है।

433. नीति व धर्म का उपदेश दिया जाना सरल है, लिया जाना

कठिन तथा जिया जाना अत्यंत दुर्लभ।

434. जीवन में कई बार ऐसा समय भी आता है जब मौन रहना वरदान सिद्ध होता है एवं मूर्खों जैसा जीवन आनंद दायक लगता है, क्योंकि कई बार बुद्धि पराजित हो जाती है और हृदय जीत जाता है।

435. व्यक्ति का व्यवहार उसके अंतर जगत की पहचान करने वाला परिचय पत्र होता है, अतः व्यवहार का परिचय पत्र जितना अच्छा हो उतना अधिक श्रेयष्कर होगा।

436. अपने लक्ष्य की निरंतर स्मृति, प्राप्ति का संकल्प, आगे बढ़ने का अदम्य साहस, निस्सीम उमंग, सफलता को हासिल करने का अचूक उपाय है।

437. सबसे अधिक शक्तिशाली वह नहीं जो अपने शत्रु का वध कर दे, या पराजित कर बंदी बना ले, अपितु सबसे अधिक शक्तिशाली तो वह है जो अपने शत्रु को व उसकी गलतियों को क्षमा कर दे।

438. केवल भले बनने के लिये पुरुषार्थ मत करो और ना ही प्रशंसा पाने की कोशिश करो अपितु बिना स्वार्थ के कुछ भले काम करने का संकल्प भी लो।

439. चाहे आकाश से दौलत की वर्षा हो जाये, चाहे राजकुमारियाँ हमें स्वयं, स्वयंवर में वरण कर लें, भले ही विश्व में हमारी प्रतिष्ठा स्वतः ही

स्थापित हो जाये किन्तु सत्य निष्ठा, यथार्थज्ञान, सदाचार, आत्मानुशासन और तपस्या को तो हमें ही स्वीकार करना पड़ेगा अपने अंदर स्वयं ही जाग्रत करना पड़ेगा।

440. हे आत्मन्! उस खुशी से सदैव सावधान रहो, जो राग द्वेष का पोषण करने वाली है, धर्म का, सत्य का, संयम का, सम्यक्त्व का शोषण करने वाली है किन्तु जिससे तुम्हारी सौजन्यता खण्डित न हो मान कषाय मण्डित न हो, आत्मा दण्डित न हो, प्रशंसक चापलूस पण्डित न हो उस खुशी को पाने का पुरुषार्थ करो।

441. योग्यता से अधिक सम्मान, परिश्रम से अधिक पारिश्रमिक, न्याय मार्ग में अतिरेक, भाग्य या कर्म फल में असंतुष्टि, पात्रता से ज्यादा महत्त्वाकांक्षा अशांति के कारण हैं अतः इनसे बचकर ईमानदारी का जीवन जीना सीखो।

442. हर नयी चीज अच्छी लगती हैं लेकिन तुम पुराने अच्छे थे।

443. क्रोध में कही बातें विवेक शून्य होती हैं, क्रोध के आवेश में लिए संकल्पों को पूरा करने की मत सोचो अन्यथा तुम बर्बाद हो जाओगे, यदि पुण्य का उदय पाकर सामने वाले को बर्बाद करने का संकल्प पूरा कर भी लिया तो तुम्हारा तपस्या के द्वारा अर्जित पुण्य नष्ट हो जायेगा, पाप का तीव्र बंध भी होगा, जिससे इह भव और पर भव दोनों ही नष्ट हो जायेंगे।

444. प्रकृति को या प्राकृतिक नियमों को, प्राकृतिक परिवर्तनों को या प्राकृतिक प्रकोप को कभी बुरा भला मत कहो, उसने अपने नियमों का पालन किया है तथा तुम्हें अपने नियम पालन हेतु सावधान किया है।

445. संकीर्ण मन वाला, स्वार्थ भावना में लिप्त मानव उस जंगली भैंसा की तरह है जो दाँये-बाँये देखे बिना सामने वाले पहाड़ में ठोकर मारता है और दांये-बायें से लाठियों का प्रहार सहता है, इस तरह वह दुहरी हानि प्राप्त करता है।

446. द्वेष के कारण किसी को देखकर भी कष्ट होना एवं राग के कारण किसी के बिना एक पल भी न रहना। ये दोनों अपनी ही कमजोरियाँ हैं।

447. जो व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सत्य निर्णय लेने की बुद्धि, असत्य का विरोध करने की शक्ति एवं सत्य को उपलब्ध करने की सामर्थ्य तथा पवित्र विचार, भाव रखने में सक्षम है, उसके लिए संसार में कुछ भी असंभव नहीं है।

448. सर्वोत्तम काम कभी भी धन के लिये, विषय वासना की पूर्ति के लिये एवं कषायों का पोषण करने के लिये नहीं किया जाता और न ही कभी किया जायेगा।

449. मेरा विश्वास है कि श्रेष्ठ पुरुष, महापुरुष, सरल हृदय, विनम्र, सत्यार्थी,क्षमाशील,समतास्वभावी, निर्भीक, अदम्य साहसी, उदार, करुणाशील, एकांत प्रिय, कृतज्ञ, दूरदृष्टा, सर्वहितैषी, निर्मल चित्त एवं विषयों से विरक्त ही होते हैं।

450. ज्ञानी व्यक्ति का सबसे अच्छा साथी एकांत स्थान में किया गया तत्व चिंतन है, जबकि अज्ञानी भीड़ में प्राप्त की गई प्रशंसा व सम्मान को अपनी महान उपलब्धि मानता है।

451. व्यक्ति जैसा सोचता है या आशंका करता है वैसा हो ही जाता है अतः वैसा ही सोचो जैसा बनना चाहते हो, यदि ऐसा करने में असमर्थ हो तो निश्चिंत रहो आप वह पा जाओगे जैसा आपका सहज चिंतन चल रहा है।

452. यश की प्राप्ति त्याग और निस्वार्थ दान से ही संभव है, धोखा देकर वस्तु प्राप्ति करने से नहीं।

453. इस जीवन में हम जो लेते हैं वह नहीं अपितु जो दूसरों को बाँटते हैं वह ज्यादा महत्वपूर्ण है, वही हमें उस वस्तु की पूर्ति करेगा।

454. संसार में सबसे बड़ा शक्तिशाली वह नहीं जो बहुत सेना या भीड़ लेकर चल रहा है अपितु सबसे बड़ा शक्तिशाली वह है जो बिल्कुल अकेला होकर भी असत्य का विरोध करने में समर्थ है, सत्य को कहने का सामर्थ्य रखता है।

455. महापुरुष उस समय अत्यंत आनंद का अनुभव करते हैं जब वह प्रतिकूलता में बिल्कुल अकेले रहकर भी सत्य को नहीं छोड़ते, भले ही पूरा स्वकीय समुदाय, संघ ही उनका विरोधी क्यों न बन जाये।

456. यदि हम समर्थ होते हुये भी दूसरे धर्मात्माओं की प्रतिकूलताओं को दूर नहीं करते, धर्मात्मा की रक्षा नहीं करते, धर्म की रक्षा नहीं करते, स्वयं धर्म

रत्न, धर्मरत्नाकर, धर्म प्रवर्तक,धर्मरक्षक, संस्थापक व धर्मात्मा की उपाधि के लिये घूमते हैं तो समझो हम स्वयं को ठग रहे हैं, क्या यह हमारा ढोंग स्व-पर के लिये घातक नहीं हैं, क्या यह हमारा जीवन एक अभिशाप कृत्य नहीं है?

457. जीवन में सदैव बोलने में समझदारी से काम लेना, वाक् पटुता की अपेक्षा अच्छा है, क्योंकि वाक् पटुता का आशय सदोष वस्तु को निर्दोष बनाने की कला, निर्दोष वस्तु या व्यक्ति पर दोषारोपण करने का हुनर अथवा असत्य को सत्य रूप में सिद्ध करने का दुस्साहस है।

458. जब प्रकृति किसी व्यक्ति की कठिन से कठिन परीक्षा लेती है तब वह उसकी सहनशीलता को अधिक से अधिक बढ़ा देती है।

459. यदि हमारे हृदय में शांति, सौंदर्य, अच्छाई का ज्ञान नहीं है तो हम पूरी दुनियाँ में जाकर देख लें, सुख कहीं नहीं मिलेगा। हमें ये चारों चीज कहीं भी नहीं मिल सकेंगी अतः इन्हें पहले अंदर ही प्रकट होने दो।

460. अविवेक, मान, छल, कपट या लोभ के मार्ग में चलोगे, तो तबाह हो जाओगे। विवेक, विनम्रता, सरलता व संतोष के मार्ग में चलोगे तो सर्वत्र वाह, वाह! ही पाओगे।

461. बेईमान का निर्णय सही भी क्यों न हो तब भी विश्वास के अयोग्य है, जबकि ईमानदार व्यक्ति भूल से गलत निर्णय भी दे- दे तब भी वह विश्वास के योग्य है।

462. बेईमान व्यक्ति बेईमान के विचारों से ग्रसित हैं, अतः वह त्याज्य है, ईमानदार व्यक्ति के निर्णय या भाव निर्मल व निर्दोष होते हैं, कदाचित् ये सर्व हितकारी न भी हो तब भी भाव की निर्मलता से निर्मल व निर्दोष माने जाते हैं।

463. सुनो! खतरे से खाली कोई जगह नहीं है पापोदय में हर जगह सज्जनों को दुर्जन मिल ही जाते हैं तथा पुण्योदय से दुर्जनों को भी सज्जन मिल ही जाते हैं तथा प्रत्येक जगह सुरक्षित पुण्य भूमि है क्योंकि ढाई द्वीप का प्रत्येक परमाणु सिद्ध क्षेत्र है।

464. शक्ति प्रयोग से अर्जित विजय पूर्ण नहीं अपूर्ण हैं, सच्ची विजय तो वह है जो प्रभु भक्ति से अर्जित पुण्य के द्वारा अपने मत पर तथा दूसरों के दिलों पर राज्य करके प्राप्त की जाती है।

465. हे आत्मन्! तुम दूसरों के दिल दिमाग या दुनियाँ बनाने की कोशिश मत करो, तुम तो सदैव अपने दिल, दिमाग और आत्मा में रहने के लिये प्रयत्नरत रहो, यह प्रभुभक्ति या आत्म ध्यान से ही संभव है यदि तुम इस कार्य में सफल हो गये तो दुनियाँ तुम्हें दिल व दिमाग से कभी निकालना न चाहेगी।

466. क्षमा मांगना अच्छा है किन्तु, क्षमा कर देना उससे भी ज्यादा अच्छा है । क्षमा करके भूल जाना तो सर्वोत्तम मार्ग है किन्तु, इसे हर प्राणी ग्रहण करने में समर्थ नहीं हो पाता।

467. दुनियाँ में किसी को भी ठगना बहुत बुरा है, सरल व्यक्तियों को ठगना तो उससे भी ज्यादा बुरा है, गुरु या प्रभु को ठगना तो निःसंदेह बहुत ही बुरा

है किन्तु अपने आपको ठगना सबसे ज्यादा बुरा है जो दूसरों को ठगता है और मानता है कि मैंने दूसरों को ठगा यह उसकी भूल है, कोई व्यक्ति खुद को ठगे बिना दूसरे को कभी ठग ही नहीं सकता।

468. जो अपने आप को, अपने कर्तव्य को एवं अपने गुण धर्म, स्वभाव को पहचान लेता है तब उसके कदम स्वतः हित के मार्ग में गतिशील हो जाते हैं।

469. सम्यक्त्व, संयम, समुचित परिश्रम एवं चित्त की पवित्रता शारीरिक आरोग्य लाभ के मुख्य आधार है।

470. धैर्य धारण करना अत्यंत कठिन एवं कड़वा होता है किन्तु उसका फल बहुत मीठा होता है।

471. संसार में सबसे निकृष्ट व्यक्ति वह है जो अपने कर्तव्यों को भली भाँति जानता तो है किन्तु उनका कभी पालन नहीं करता और ना ही करना चाहता है।

472. स्वार्थ सिद्धि में सद्गुण वैसे ही खो जाते हैं जैसे समुद्र में मोती, पुष्पों में गंध, दूध में बूरा, शुद्ध आत्म ध्यान में असद् विकल्प।

473. जो व्यक्ति छोटे छोटे कार्यों में अपनी शक्ति को बर्बाद कर देता है, वह व्यक्ति अपने जीवन में कोई बड़ा कार्य नहीं कर पाता।

474. हम दूसरों को तो आर पार देखना चाहते हैं, किन्तु हम यह नहीं चाहते कि हमारे आर पार भी कोई देखे, अर्थात् हम दूसरों में पारदर्शिता चाहते हैं खुद में नहीं।

475. इस संसार में अनेक कष्ट ऐसे हैं, जिनको पशु न बोलने के कारण उठाता है तथा इंसान बोलने के कारण।

476. हमारी प्रवृत्ति जब स्वाभिमानी और राजा जैसी होती है, तब हमारी दूरी परमात्मा से बढ़ जाती है, किन्तु जब हमारी प्रवृत्ति प्रभु परमात्मा के चरणों में किंकर, सेवक या अकिंचन्य, शरणार्थी जैसी होती है तब हमारे और परमात्मा के बीच की दूरी घट जाती है।

477. बीते हुए लाखों वर्षों एवं आने वाले हजारों महीनों के समय से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं, वर्तमान में वर्धमान बनाने वाले सक्षम क्षण।

478. मित्रता व शत्रुता सदैव बराबर वालों में ही दीर्घ काल तक ठहर पाती है अत्यधिक अन्तर वालों में नहीं।

479. इस संसार में सबसे अधिक दयनीय वह है जो अत्यधिक धनी होकर भी अत्यधिक कंजूस है।

480. असफलता का मुख्य कारण धनाभाव नहीं बल्कि शक्ति, बुद्धि, साहस एवं पुण्य का अभाव मुख्य है।

481. जिसका उद्देश्य ऊँचा हो उसको आलस्य, क्रोध, संकीर्णता, असंयम और अधैर्य का त्याग कर देना चाहिये तभी उच्च उद्देश्य की प्राप्ति संभव है।

482. सम्पन्नता मित्रों का निस्सीम निर्माण करती है, विपन्नता उन मित्रों में से सच्चे मित्रों की खोज करती है। समत्व व साक्षी भाव शत्रुओं को मित्र में

परिवर्तित कर देती है।

483. करुणा के बिना सच्चे प्रेम की निष्पत्ति नहीं होती, कषाय की मंदता के अभाव में करुणा प्रादुर्भूत नहीं होती।

484. क्षमाशील, संतोषी एवं सरल व्यक्ति सदैव सुख की नींद सोते हैं, जबकि क्रोधी, लोभी एवं छली व्यक्ति रात्रिभर करवटें ही बदलते रहते हैं।

485. सभी अरिहंतों, पंथों, ग्रंथों, संतों और अनुशासक या उपदेशकों का एक ही उद्देश्य है, प्रत्येक प्राणी आत्मशांति एवं सच्चे सुख को प्राप्त कर सके, दुखों के बंधनों से व कारणों से मुक्त हो सके।

486. जब तक चित्त में अहिंसा धर्म का वास रहता तब तक व्यक्ति अपने मारने वाले को भी नहीं मारता, किन्तु जैसे ही आत्मा में से धर्म निकल जाता है तब वह रक्षक का भी भक्षक बन जाता है।

487. जब चित्त में अहिंसा धर्म विद्यमान है तब तक उसे स्वर्ग के देवता भी प्रणाम करते हैं, अहिंसा धर्म का त्याग करते ही माता पिता आदि कुटुम्बी जन भी शत्रु बन जाते हैं।

488. धर्म न शरीर में है, न वचनों में है, न किसी क्षेत्र या काल में है, न किसी वस्तु के आदान प्रदान में हैं, धर्म तो मूलतः आत्मा के परिणामों में रहता है, मन, वचन, काय, द्रव्य, क्षेत्र, काल आदि उस धर्म के साधन हैं।

489. भगवान महावीर स्वामी ने मन की निर्मलता को ही सुखी

जीवन का आधार कहा है, किन्तु वह निर्मलता आचरण की शुद्धि पर निर्भर करती है।

490. यदि सरोवर में बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं तो उसमें मछलियाँ निराकुलता से कैसे रह सकती है? उसी प्रकार चित्त में कषाय रूपी मगरमच्छ रहेंगे तो सद्गुण, सदाचरण रूपी मछलियाँ कैसे रह सकेंगी?

491. विद्वत्ता, लौकिक पद, समाज में प्राप्त प्रतिष्ठा, उच्च कुल, श्रेष्ठ जाति, किसी भी प्रकार का बल, कोई भी ऋद्धि, शरीर की सौंदर्यता एवं तपस्या की विशेषता होने पर भी कभी घमण्ड नहीं करना चाहिये क्योंकि ये सब क्षणिक उपलब्धियाँ हैं कभी भी नष्ट हो सकती हैं।

492. संसार में मतभेद अनादि काल से हैं, थे, रहेंगे। कभी भी संसार के सभी प्राणी एकमत नहीं रह सकते अतः कभी दूसरे के मत की उपेक्षा मत करो, हो सकता है सामने वाले का दृष्टिकोण सही हो, अतः अपनी राय व दृष्टिकोण को किसी पर थोपने का दुस्साहस मत करो।

493. संसार की भौतिकता को ओढ़ने, पकड़ने व सहेज कर रखने वाला सम्राट तो बन सकता है, किन्तु एक वीतरागी संत की प्रभुता के सामने उसका वैभव तुच्छ ही कहलायेगा।

494. भाग्यवान वह नहीं जो असीम सम्पत्ति का स्वामी बन चुका है, अपितु

सौभाग्यशाली, धन्यभागी तो वही कहलायेगा जो भौतिक वैभव को छोड़कर अनासक्त, निष्परिग्रही और वैरागी त्यागी बन चुका है।

495. शारीरिक सुख में भौतिक पदार्थ निमित्त बनते हैं किन्तु ,आत्मा का सुख तो चेतना के आधार से ही मिलेगा, मोह का क्षय ही आत्मसुख का आधार है।

496. जिस प्रकार किसी मानव को वस्त्र पहनना आवश्यक है तथा आभूषण धारण करना भी जरूरी है, उसी प्रकार मानव को सभ्य और सुसंस्कारी होना परमावश्यक और संयत होना जरूरी है।

497. संसार के समस्त बंधनों से छूट कर मोक्ष की प्राप्ति करना ही भव्य जीव का सर्वोच्च लक्ष्य है उसके लिये जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति और गुरु सेवा परमावश्यक है।

498. एक जिन भक्ति ही ज्ञानी पुरुष को दुर्गति का निवारण कर, सातिशय पुण्य का संचय, पापों का क्षय एवं परम्परा से मुक्ति का कारण है।

499. जिस प्रकार धूप से तपा हुआ आकुल व्याकुल व्यक्ति ही छाया या शीतल पदार्थों की खोज करता है उसी प्रकार संसार के दुखों से दुखी व्यक्ति ही प्रभु परमात्मा व गुरु की सेवा में तत्पर रहता है, ऐसे व्यक्ति संसार में बहुत कम मिलेंगे जो सर्वानुकूलता पाकर धर्म साधना में संलग्न रहें, प्रभु भक्ति व गुरु सेवा करें, ऐसे विरले भक्तों को भावी परमात्मा ही समझो।

500. जिस प्रकार गरुड़ पक्षी को देखकर चन्दन के वृक्षों से लिपटे सर्प भागने लगते हैं, उसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान, प्रभु परमात्मा को देखते ही मोह

के बंधन ढीले पड़ जाते हैं कर्म उस आत्मा को छोड़ कर भागने लगते हैं।

501. जिस प्रकार जली हुई रस्सी किसी मत्त गजेन्द्र को बांधने में असमर्थ होती है, उसी प्रकार मोहनीय कर्म को नष्ट करने वाले योगी को शेष कर्म संसार के बंधनों में बांधने में असमर्थ होते हैं।

502. जो व्यक्ति जीवन की प्रत्येक छोटी-बड़ी क्रियायें चलना, उठना, बैठना, सोना, खाना, पीना, बोलना, तैरना, उड़ना, झूलना, लिखना, पढ़ना, देखना, सुनना आदि यत्नाचार पूर्वक प्रवृत्ति करता है वही अहिंसक है, प्रमादी जीव अहिंसक नहीं हो सकता।

503. आध्यात्मिकता मात्र वाणी तक सीमित न रहे, वह आचरण में, आपकी चेतना में भी अवतरित हो, तभी प्राणी का, समाज का, देश का व विश्व का मंगल होगा।

504. हे प्रभो! जिस हृदय में रहते हैं आप, वहाँ टिक नहीं पाते हैं पाप,जो करता है आपके नाम की जाप उसके सब मिट जाते हैं अभिशाप, जिसके ध्यान में विचरते हैं आप, वहाँ पर रह नहीं पाते भवाताप व मन संताप । अतः हे प्रभो! आप सदैव मेरी चित्त शैय्या पर निवास करें।

505. प्रभु परमात्मा का सानिध्य हमारे चित्त में विद्यमान पाप रूपी अंधकार को वैसे ही दूर कर देता है जैसे सूर्य का उदय जगती तल का अंधकार दूर कर देता है।

506. प्रभु परमात्मा की स्तुति, भक्ति, वंदना व गुणानुवाद करने से चित्त को शांति मिलती है, मन विकारों से मुक्त हो जाता है।संसार के किसी भी पदार्थ में आसक्ति नहीं रहती, आनंद की अनुभूति तो होती ही रहती है।

507. जब मोह की तीव्रता होती है, तब दृष्टि विपरीत व मलिन रहती है, सत्य भी असत्य लगता है, प्रभु भक्ति, गुरु शुश्रुषा, शास्त्र श्रवण व धर्मानुष्ठान में मन नहीं लगता, यह मोह ही चित्त को विकारी व कषाय युक्त बनाने वाला है।

508. प्रभु भक्ति, गुरु सेवा, शील व्रत का पालन, तपस्या, आत्मध्यान, संयम और दान पापों को काटने के साधन हैं, इनके बिना पापों से मुक्ति असंभव ही है।

509. बुरे विचारों से पाप कर्मों का बंध होता है, पाप का फल-दुर्गति, दुख, निराशा, दुष्टता व दुर्दशा है। ये पाप ही संसार परिभ्रमण के कारण हैं अतः इन बुरे विचारों से सदैव दूर रहो।

510. अनादिकाल के अंधकार को एक दीपक तुरंत ही दूर कर सकता है, उसी प्रकार प्रभु भक्ति का दीपक चेतना के अंतस में विद्यमान दुख, अज्ञान व विकारों के अंधकार को दूर करता है।

511. त्यागी-व्रतीयों की सभी क्रियायें संवेग और वैराग्य की पोशक होनी चाहिये, जिस क्रिया से संवेग व वैराग्य खण्डित या मलिन होने लगें तो वे क्रियायें त्यागी व्रती साधकों को छोड़ देनी चाहिये।

512. पाषाण की मूर्ति में प्रभु परमात्मा की स्थापना कर उस मूर्ति की उपासना जब पापों को नष्ट करने में समर्थ है तब क्या हम पंचम काल के

विशुद्ध साधकों में चतुर्थ कालीन साधकों की स्थापना व पूजा कर तद्रूप फल को प्राप्त नहीं कर सकते?

513. जिस प्रकार आंधी से, वृक्ष के पत्ते टूटकर गिरने लगते हैं उसी प्रकार प्रभु परमात्मा की तीव्र भक्ति से आत्मा रूपी वृक्ष पर लगे कर्म रूपी पत्ते टूट कर गिरने लगते हैं मंद हवा से पत्ते टूटकर गिरते नहीं मात्र हिलते हैं अतः भक्ति के सामान्य परिणाम से कर्म झड़ते नहीं वहीं के वहीं हिलते रहते हैं।

514. निःस्वार्थ भावना से की गई प्रभु परमात्मा की पूजा, अर्चना एवं साधुओं की सेवा व उपासना दुःख से परिपूर्ण संसार सागर से पार करने के लिये नौका की तरह है।

515. अत्यंत विशुद्ध परिणामी, स्व-पर हितकारी, लोक मंगलकारी साधुओं को देखकर भी जिसके चित्तरूपी सरोवर में आनंद, उल्लास व भक्ति की लहरें नहीं उठतीं तो यही समझना चाहिये कि उसकी आत्मा का कल्याण अभी बहुत दूर है, वह दुख सागर में निमग्न है।

516. प्रशंसा सदैव सम्यक् पुरुषार्थ व साधना की करना चाहिये, अतिशय, चमत्कार या भाग्योदय से प्राप्त वस्तु की नहीं।

517. हमें किसी प्राणी की निदां नहीं करना चाहिये, क्योंकि निंदा पाप का कारण है फिर संत महात्मा या भगवान की निंदा करना तो निःसंदेह महापाप बंध का ही कारण है।

518. विषयासक्ति से उत्पन्न विकार या कषायों की कालिमा चित्त को मलिन करके उसके मूल्य को कम कर देते हैं, खोट वस्तु का मान मूल्य को घटाता ही घटाता है।

519. जिस प्रकार किसी फोड़े में से मवाद या गाँठ को निकाले बिना शांति नहीं मिलती, यद्यपि निकालने में कष्ट भी होता हैं, फिर भी निकाल देना ही श्रेष्ठकर है, उसी प्रकार चित्त में भी विषय विकारों की मवाद और कषायों की गांठें निकाल देना चाहिये तभी आत्मशांति संभव है।

मीठे प्रवचन

''सम्पत्ति नहीं संस्कार''

प्रत्येक माता - पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपनी संतान को सुसंस्कार दें, भौतिक सम्पत्ति नहीं, क्योंकि भौतिक सम्पत्ति सुसंस्कारों के बिना दुर्गति का कारण बन जायेगी और तुम्हारी संतान तुम्हारी दुर्गति करा देगी। सम्पत्ति - विपत्ति का मुख पृष्ठ है, जबकि संस्कार परमात्मा का साकार रूप प्राप्त कराने के लिये प्रवेश पत्र है। सुसंस्कार सुख पूर्वक सत्य से साक्षात्कार कराने वाले होते हैं, जबकि धन धर्म को नष्ट करने वाला है और विभव - भव का विशेष कारण है।"

आचार्य वसुनंदी मुनि

521 संसार में ऐसे लोग बहुत हैं जो सोचते और बोलते हैं किन्तु जीवन में कुछ सार्थक पहल नहीं कर पाते।

522 समयाभाव की शिकायत अधिकांश वे व्यक्ति ही करते रहते हैं जो सदैव अपने समय का दुरुपयोग करते रहते हैं।

523.निर्बल, रुग्ण एवं उच्छृंखल मन कभी भी सम्यक् सुदृढ़ एवं सार्थक संकल्प ग्रहण नहीं कर सकता अतः अपने मन को, सबल, निरोगी एवं नियंत्रित बनाकर रखो।

524.आलसी व्यक्ति जीवन बिताने का आदी हो गया है अब वह सार्थक कार्य करने में भी असमर्थ रहेगा तथा व्यस्त जीवन जीने के लिये सदैव उसके पास समय का अभाव ही रहेगा।

525.क्या आपको अपने मनुष्य भवरूपी वृक्ष का ज्ञान है अथवा यूं ही नष्ट कर बर्ताव कर रहे हो, सोच-सोच कर, सोचो।

526.परीक्षा की घड़ियों में ही व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आता है परिणाम घोषिणा के अवसर से नहीं।

527.जिस वृक्ष की जड़ें जितनी गहरी होती हैं वह वृक्ष उतनी अधिक ऊँचाई को प्राप्त करता है।

528.जो भक्त ईमानदारी के साथ अपना समग्र जीवन प्रभु और गुरु चरणों में समर्पित कर देते हैं वे कभी दर दर की ठोकरें नहीं खाते।

529.अंतस प्रेम को तोड़ने के लिये लाठी, पत्थर, अस्त्र, शस्त्र या वाक्य बाणों से प्रहार करने की आवश्यकता नहीं है इसके लिये तो एक उपेक्षा दृष्टि ही पर्याप्त है।

530.जो उन्नति के सर्वोच्च शिखर को छूना चाहता है उसे स्वयं में परिवर्तन लाना आवश्यक है, स्वयं में परिवर्तन करने से डरने वाला कभी उन्नति नहीं कर सकता।

531.माता पिता के आचरण का भी बालकों पर प्रभाव पड़ता है अतः बालकों को मात्र मौलिक शिक्षा ही मत दो, खुद आचरण भी शुद्ध रखो।

532.जो व्यक्ति अत्यधिक जल्दबाद या उतावलेपन में कार्य करता है उससे त्रुटियाँ ज्यादा होती हैं तथा वह प्रायः करके तनावग्रस्त ही रहता है।

533.यदि आप अपने अवगुण रूपी कीचड़ प्रभु के चरणों में छोड़ने में समर्थ हैं तो आप स्वतः निर्मल दशा को प्राप्त कर सकते हैं, तुम्हें दूसरे के उपदेश की कतई जरूरत नहीं होगी।

534.आकाश के तारों को गिनना एवं समुद्र की गहराई नापना आसान है किन्तु मन को जानना, चित्त को पाप से बचाकर पुण्य में लगाना आसान नहीं है।

535.हमारे विचारों का स्तर ही हमारे मन/चित्त व चैतन्यता के स्तर को निर्धारण करता है, क्योंकि अच्छे मन में बुरे विचारों का जन्म नहीं होता।

536.जिसे आत्मा व परमात्मा के अस्तित्व, स्वरूप व अनुभव में कोई शंका नहीं, वही तीन लोक में अखण्ड निर्भीकता की दशा को प्राप्त करता है।

537.जीवन में सबसे बड़ा भय या दुख का कारण है मृत्यु तथा निर्भयता का कारण है धार्मिक जीवन या आत्मा में धर्म का यथार्थ अनुभव। रोग की पहचान होने पर भी औषधि न लेना क्या मूर्खता नहीं हैं?

538.अच्छा वक्ता बनना अलग बात है किन्तु यथार्थ सन्मार्ग दर्शक विरला हो सकता है, अनुकरणीय जीवन जीने वाला साधक मौन रहते हुए भी श्रेष्ठ वक्ता है।

539.जब लोग आप को नहीं समझते तब भी चिंता न करो आप स्वयं अपने आपको सम्यक् रूप में समझने का व सही मूल्यांकन करने का प्रयत्न कीजिये।

540.असत्यता पर आधारित कोई भी उपलब्धि रेत की दीवार पर खड़े भवन की तरह क्षणध्वंसी ही है।

541.भगवान को अपना मार्ग दर्शक और संसार के समस्त जीवों को अपना मित्र बना लो फिर निर्भीक बन कर रहो, कोई तुम्हारा बाल बाँका भी न कर सकेगा।

542.सबसे अधिक बलशाली वह है, जिसने स्वयं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है मात्र दूसरों को जीतने वाला सर्वाधिक शक्तिशाली नहीं हो सकता, अतः आत्मविजयी/इन्द्रिय विजयी/इच्छाविजयी/ मनोविजयी बनो।

543.आप अपने अधिकारों का प्रयोग करने के लिये ज्यादा उतावले न बनें, अपितु यह भी सदैव ध्यान रखें कि आप कर्तव्य निष्ठ भी हैं या नहीं।

544.सम्यक्त्व, संयम, संतुलित जीवन, संतुष्टि, समन्वयवादी विचारधारा महानता के लक्षण हैं इन्हें ग्रहण करने का पुरुषार्थ करो।

545.परमात्मा को अपना सर्वस्व समर्पण करने से अपना चित्त दर्पण जैसा निर्मल हो जाता है, जो ऐसा नहीं कर सकते उसके चित्त की शुद्धि अशक्य है।

546.सामान्य व्यक्ति समय की जलधारा में उसके अनुरूप ही बहे चले जाते हैं किन्तु महापुरुष समय की जलधारा को अपने अनुसार बदल कर चलते हैं।

547.आत्म नियंत्रण से निस्सीम नियंत्रण शक्ति प्राप्त होती है जो आत्म नियंत्रण कर चुका है सारा विश्व उसके नियंत्रण में रहने को लालायित रहता है।

548.कभी कभी हम शक्ति से दूसरों को बदलने के लिए मजबूर कर देते हैं किन्तु हम यह भी तो कर सकते हैं कि स्वयं बदल कर दूसरों को बदलने की प्रेरणा दें।

549.पौद्गलिक दर्पण में अपना चेहरा देखा जा सकता है चरित्र नहीं, आत्म दर्शन या चरित्र दर्शन को महात्मा या परमात्मा रूपी दर्पण में ही देख पाना संभव है।

550.सच्चा मनो विजयी वही कहलाता है जो एक समय में एक कार्य करने का संकल्प लेता है, अन्य विकल्प जहाँ ठहर नहीं पाते हैं।

551.आज का दिन जीवन का सर्वोत्तम दिन है आज आप अच्छे से अच्छा कार्य कर सकते हैं, बुरे से बुरे कार्य का फल भोग कर इसे नष्ट कर सकते हैं, आज के दिन को बहाने बाजी करके टालो मत।

552.घृणा युक्त भाव से दिये उपदेश से या बैर युक्त भाव से किये गये

निवेदन से प्रेम युक्त भाव से दिया गया उपदेश श्रेष्ठ है,प्रेम युक्त आदेश में उपरोक्त दोनों से बहुत अधिक शक्ति है।

553.अच्छा है कि बोलते समय आप अल्प विराम, पूर्ण विराम यथास्थान लगाना जानते हैं, किन्तु क्या आप अपने दुर्भावों पर भी अल्प विराम और पूर्ण विराम लगाना जानते हैं। यदि नहीं तो इसे भी सीखिये, इसके बिना आपकी पढ़ाई अधूरी ही कहलायेगी।

554.शाब्दिक ज्ञान का अर्जन जितना अधिक करते जाओगे उतने ही अहंकार से फुग्गे की तरह फूलते जाओगे किन्तु अध्यात्मिक ज्ञान की ज्यों-ज्यों वृद्धि होती है व्यक्ति उतना ही अधिक बनता चला जाता है।

555.परिवार का सौहार्द्रपूर्ण वातावरण परिवार के सदस्यों को ही प्रभावित नहीं करता अपितु समाज के लिये भी उदाहरण बनता है।

556.आप अपनी खामियाँ जान लें, खूबियाँ अपने आप आ जायेंगी।

557.अपना केन्द्र अपने से बाहर मत रखो, यह आपका पतन कर देगा, अपने में अपना पूर्ण विश्वास रख अपने केन्द्र पर डटे रहो, कोई भी शक्ति तुम्हें हिला न सकेगी।

558.मन को स्थिर कर कही हुई बात कभी कभी साधारण होने पर भी बड़ा काम कर जाती है।

559.सुख के संबंध में शुद्ध विचार ही सुख की परिस्थितियों को निर्मित करेंगे।

560.चीजों को टुकड़ों में देखोगे तो भ्रमित होगे और पूर्णता में देखोगे तो संतुष्ट होंगे। अखण्ड दिल में अखण्ड शांति है।

561.व्यक्ति के जाने के बाद आयी रिक्तता ही उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करा पाती है।

562.ज्यों ही तुम सफलता को ढूंढना छोड़ दोगे, सफलता तुम्हें तुरंत ढूंढ़ती आयेगी।

563.गम्भीरता आपके चेहरे में नहीं निर्णय में होना चाहिये, हर समय चेहरे पर व्याप्त गम्भीरता के फायदे कम हैं, खतरे अधिक।

564.सुखद विवाह का रहस्य सही व्यक्ति पाने में नहीं है, बल्कि स्वयं सही बन जाने में हैं।

565.प्रगति के नाम पर घूमते विपरीत पहिये आगे नहीं बढ़ते बल्कि गाड़ी को भी नुकसान पहुँचाते हैं।

566.कार्य की सफलता ही बताती है कि उसने आप पर जो विश्वास किया वह विश्वास के योग्य था।

567.अध्यात्म का अमृत, संयमित चित्त में ही ठहरता है, असंयमित और चंचल चित्त फूटी बाल्टी के समान होता है, जिसमें क्षण भर के लिये उपदेश रूपी जल भरता है, किन्तु चंचलता के छिद्रों के कारण हृदय में टिकता नहीं।

568.झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा फड़फड़ाते हैं,तरक्की के बाज की उड़ान में आवाज नहीं होती।

569.साधक को चैतन्यता के आकाश में विहार करने के लिए बोध और वैराग्य के दो पंख चाहिये।

570.समय, पात्र और परिस्थिति का आंकलन कर बोलने वाला कभी अपमानित नहीं होता।

571.पारदर्शिता की मांग करने वाले इतना पारदर्शी आचरण करने लगे हैं कि वे असभ्यता की कोटि में आ गये हैं।

मीठे प्रवचन

''जीवन में गिरावट क्यों?''

जहाँ गिरावट, बनावट, सजावट, मिलावट और कड़वाहट होती है, वहाँ जीवन में नियम से गिरावट ही होती है, जीवन में फिर मुस्कराहट नहीं ठहर पाती, अतः हट, वट, नट, कट को झट - पट छोड़ दें, और फटा - फट अपने आपको अपने आप से जोड़ दें, यही जीवन की सार्थकता का उपाय है।

आचार्य वसुनंदी मुनि

572.धर्म के प्रति सच्चा समर्पण होने पर ही सम्यक् जीवन प्रारम्भ होता है।

573.प्रसन्नचित्त मानव धर्म ध्यान के अधिक निकट होता है, दुःख और शोक में डूबे महानुभाव आर्त ध्यान के पिंजरे में कैद हैं।

574.सत्पुरूषों की महानता उनके विशुद्ध अंतःकरण के आधार से है, लोगों की प्रशंसा के आधार पर नहीं।

575.जिनका मुख सदैव कमल की तरह खिला रहता है, सूर्यातप रूपी संकट भी उसके लिए अहित एवं संताप प्रद नहीं होता।

576.जो हर परिस्थिति में संतुष्ट रहना जानता है, उसे संसार की कोई परिस्थिति कर्तव्य पथ से नहीं डिगा सकती।

577.अपनी शारीरिक शक्ति का प्रयोग संतान प्राप्ति के लिए करना, वासना है और भगवान का उपासक ही ''ब्रह्मचारी'' है।

578.कल की भूल से आज का दिन दुःखद व्यतीत हुआ है तो कम से कम कल के दिन को तो व्यर्थ एवं दुःखद बनाने का काम मत करो।

579.''परिणामों की निर्मलता'' से की गई प्रभु भक्ति, गुरुसेवा एवं तप त्याग संयम व अहिंसा की साधना निःसंदेह मानव की तकदीर एवं तदवीर बदलने में समर्थ होती है।

580.संसार एक रंगमंच है और उस मंच पर किये जाने वाले जीवन रूपी नाटक के पात्र, यदि चाहें, तो नकल से भी असल का बोध पा सकते हैं।

581.कर्म को ध्वस्त करने के लिए धर्म में व्यस्त रहिये।

582.प्रसन्नचित्त व्यक्ति धूप की वह किरण है, जिसका अत्यंत सुखद प्रभाव खेतों और वनस्पतियों पर पड़ता है।

583.राग सीमित होता है, संकीर्ण होता है, स्वार्थ युक्त भी होता है, किन्तु निश्छल प्रेम, निस्सीम, उदार एवं परमार्थ युक्त होता है।

584.सौन्दर्य के लिए, प्रसन्नता से बढ़कर कोई श्रृंगार नहीं।

585.अपनी जुबान पर उन बातों को मत लाइये, जिन्हें आप स्वयं नहीं जीत पाये हैं।

586.वासनायें आदमी को बदसूरत और सरलता आदमी को सुन्दर बना देती है।

587.यदि जिंदगी को नरक नहीं बनाना चाहते तो न किसी से अपेक्षा करो, न उपेक्षा पर ध्यान दो।

588.हमारी शान कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि जब-जब हम गिरें,तो हर बार उठने में है।

589.आनंद ही वह वस्तु है जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को बिना किसी असुविधा के दे सकते हैं।

590. एक बार की असफलता आधी विजय है, क्योंकि अभ्यास आदमी को पूर्ण बनाता है।

591.तृष्णा को अभी से जीतने का प्रयास करो, नहीं तो वृद्ध होने पर जवान तृष्णा को जीतना तुम्हारे लिए मुश्किल हो जायेगा।

592.यदि श्रद्धा अखण्डित है तो कार्य सिद्धि में शंका क्यों? और शंकायुक्त श्रद्धा है तो कार्य सिद्धि हेतु निष्फल पुरुषार्थ क्यों?

593.मान-सम्मान से दूर रहकर ही सच्ची विरक्ति प्राप्त हो सकती है।

594.जो पुरुष दूसरों के सद्गुणों से उसका मूल्यांकन करता है, वही गुणों की यथार्थता को जान सकता है।

595.स्वयं के पाप कर्मों के उदयागत हुये बिना संसार का कोई भी प्राणी आपका अनिष्ट नहीं कर सकता।

596.संसार के बदलने ना बदलने से मेरा उतना हित-अहित नहीं जितना स्वयं के शुभाशुभ परिणामों के बदलने में है।

597.सत्य परेशान हो सकता है, परास्त नहीं।

598.दूसरों के दोषों को देखने वाली इस बुरी आदत का परित्याग कीजिये, यदि ऐसा करने में असमर्थ हैं, तो यह संकल्प ले लो कि मैं दूसरों में जो दोष देखूँगा, उसका (दोष का) यावज्जीवन परित्याग कर दूँगा।

599.प्रतिकूलता में ही प्रेम और श्रद्धा का पता चलता है।

600.आज संसार में जितनी भी अच्छाईयाँ विद्यमान हैं, उन सभी का आधार यदि तुम बहुत गहराई में जाकर देखोगे तो तुम कृतज्ञता को ही पाओगे।

601.जो धर्म में व्यस्त, अपने में मस्त, शरीर से स्वस्थ हैं वही मोह को अस्त व दुःखों को ध्वस्त करने में समर्थ होता है।

602.गुणों की संगति, गुण ग्राहक दृष्टिकोण, गुणों का सही मूल्यांकन, व्यक्ति को गुणों से परिपूर्ण कर सकता है। ''गुणों की प्यास को तीव्र करो।''

603.जब हमें कोई कष्ट और दुःख इष्ट नहीं है, तो हमें दूसरों को भी वह कष्ट व दुःख नहीं देना चाहिये, यही सुखी जीवन का उपाय है और यही है धर्म का सही रूप।

604.आलस्य मानव का सबसे बड़ा शत्रु है, जो आलसी हैं, वे जीवन में कोई महान् उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकते। उनका जीवन स्व-पर के लिए भारभूत होता है।

605.व्यक्ति चाहे तो संकल्प की दृढ़ता से अपनी कृति, वृत्ति, प्रवृत्ति एवं

प्रकृति को बदलने में समर्थ हो सकता है।

606. यदि धोबी गंदे कपड़े पहने हुये हो तब भी आपके कपड़े एकदम स्वच्छ कर सकता है, इसी तरह माता-पिता ने जिन अच्छी शिक्षाओं को जीवन में भले ही पालन नहीं किया हो फिर भी उनकी सलाह अच्छी व नेक हो सकती है।

607.उस इंसान से ज्यादा गरीब कोई नहीं जिसके पास केवल पैसा है।

608.एक दिन की खुशी के लिए पिकनिक मनाइये, एक माह की खुशी के लिए शादी कर लीजिये और यदि जीवन भर के लिए खुशी चाहिये हो तो मस्त रहने की आदत बना लीजिये।

609.हमारी जिन्दगी इतनी लम्बी नहीं है कि हम सिर्फ अपनी ही गलतियों से सीखें, अतः बुद्धिमानी इसी में है कि दूसरों की गलतियों से भी सीख लें।

610.गलत फहमियों में डूबे रहना गलतियाँ करने से भी खतरनाक है।

611.अपराध करने के पश्चात् भय पैदा होता और यही उसका दण्ड है।

612.दुष्ट लोग अपने दोषों के संदर्भ में जन्मांध होते हैं और अन्य दूसरे के दोष देखने में दिव्य नेत्र वाले होते हैं।

613.परिवार का सौहार्दपूर्ण वातावरण परिवार के सदस्यों को ही प्रभावित नहीं करता अपितु समाज के लिये भी उदाहरण बनता है।

614.उपवास से बड़ी तपस्या गुरु की आज्ञा का पालन करना है।

615.स्त्री लज्जा के द्वारा इतना कुछ कह जाती है, कि मनुष्य धर्मोपदेश में भी उतना नहीं कह पाता।

616.अतीत को मुस्कराहटों के साथ याद करें, आँसुओं के साथ नहीं।

617.सौभाग्य और दुर्भाग्य मनुष्य की दुर्बलता के नाम हैं।

618 कटोरा लेकर माँगने वाला ही भिखारी नहीं है, अपितु संग्रह करने वाला ही सबसे बड़ा भिखारी है।

619.जितना भोग करना बुरा नहीं है, उतना वर्जित भोग का चिन्तन करना बुरा है।

620.अनुचित आलोचना अपरोक्ष रूप से आपकी प्रशंसा ही है।

621.अधिकता में नहीं आवश्यकता में जियें।

622.दुनियाँ में खुशनसीब तो वे हैं, जिन्हें माता-पिता व गुरुओं द्वारा सत्कर्तव्य के सूत्र मिलते हैं।

623.मनुष्य अपनी इच्छाओं का दमन करके सुख प्राप्त कर सकता है, उनकी पूर्ति करके नहीं।

624.यह निर्भ्रांत सत्य है कि बालकों की मानसिक शक्तियाँ स्त्री के स्नेह की छाया में जितना पुष्ट और विकसित हो सकती है, उतनी किसी अन्य उपाय से नहीं।

625.जब भी नदी बहती है वह समीपस्थ गड्ढों को जल से भरती हुई आगे बढ़ती है, इसी तरह प्रेम की नदी की गति को भी ऐसा ही समझना।

626.जिन योजनाओं को हम भविष्य में साकार रूप न दे सकेंगे, ऐसी असम्भव योजना बनाना समय की बर्बादी करना है, असम्भव योजना की अपेक्षा लघु कार्य भी जीवन को सार्थक कर सकता है।

627.वैराग्य संसार से पार करा देता है, लेकिन बैर संसार में डुबा देता है।

628.प्रभु परमात्मा की स्मृति, प्रीति, प्रतीति, आत्मानुभूति में कारण है, संसार से भीति, आध्यात्मिक नीति एवं स्वात्मोपलब्धि की रीति निज कल्याण का साधन है।

629.हमारा व्यवहार कुएँ के निकट खड़े होकर बोली गई आवाज की तरह होता है, हम दूसरों के प्रति जैसा व्यवहार करते हैं, उसका प्रतिफल भी हमें वैसा मिलता है।

630.जो व्यक्ति एक बार आलस्य का अतिथि बन गया तो जीवन भर उसके आतिथ्य को छोड़कर निकल पाना कठिन है।

631.अच्छा वक्ता, तो कोई भी बन सकता है, किन्तु जिसका सब अनुसरण (अनुकरण) कर सके, ऐसा श्रेष्ठ साधक बनना बहुत कठिन है।

632.जो व्यक्ति अपनी बुराईयों को स्वयं नहीं खोज सकता, उसी को अन्य व्यक्ति उसकी बुराईयाँ बताते हैं।

633.गुरु के निकट होकर दूर होना श्रेष्ठ नहीं, दूर होकर निकट होना अतिश्रेष्ठ है।

634.सद्गुरु सोना नहीं कसौटी देता है।

635.गुरु के निर्देशन के आगे अपना चिन्तन एक किनारे रखना चाहिये।

636.यदि स्वयं को भेड़ बना लोगे तो सिंह आकर तुम्हें खा जायेंगे।

637.कामना की धूल भक्ति के दर्पण को गन्दा कर देती है।

638.अपने गुणों से आगे बढ़ना चाहिये, दूसरों की कृपा से नहीं।

639.बचपन में सरलता, यौवन में नम्रता, बुढ़ापे में इच्छा निरोध, ये महान बनने के लक्षण हैं।

640.प्रचार एवं प्रसार, संयम के बिना, विष बेल के समान है।

641.संसार में रहकर सबसे बड़ा कार्य आत्मा से साक्षात्कार करना है।

642.संसार के समस्त भौतिक सम्बन्ध मिथ्या हैं। आध्यात्मिक सम्बन्ध ही सम्यक् है।

643.रहने के लिए बेहतरीन जगहों में से एक जगह अपनी औकात भी है।

644.विश्व के सर्व पदार्थों को प्राप्त करना उतना महत्वपूर्ण नहीं होता जितना उत्तम समाधि प्राप्त करना।

645.युवावस्था में विवेक हीनता से भोगा गया इन्द्रिय सुख, वृद्ध अवस्था में दुःख और निराशा का कारण होता है।

646.यदि आप समर्थ पुरुष बनना चाहते हैं तो अपने से पूज्य पुरुषों के सामने असमर्थ बन जाइये।

647.दीर्घ संसारी वह है जो किसी घटित घटना में दूसरे के दोषों को देखता है।

648.उन्नति व लोकप्रियता का मूल मंत्र आज्ञा और बल प्रयोग नहीं सेवा और प्रेम है।

649.आचरण, लक्ष्य को प्राप्त करने वाला गतिशील वाहन है।

650.जिन्हें दान देने का व्यसन है, उनके पास कभी देय वस्तु की कमी नहीं होती।

651.अपना आभामंडल हृदय की परछाईं है मन की नहीं।

652.विचारों का क्रिया-कलाप व्यक्तित्व का परिचायक नहीं।

653.समर्पण की भूमि पर उत्तम विचार होते हैं, तो भक्ति के तल पर संकल्प होता है।

654.मृत्यु का भय मोह पैदा करता है, निर्भयता मोक्ष को।

655.शक्ति नष्ट करने वाला एक प्रचलित कार्य है, विवाह।

656.सफलता साहस की गुलाम है, आलस की नहीं।

657.प्रतीक्षा प्रेम की परीक्षा है व परीक्षा प्रेम का फल।

658.आदमी को अपनी प्रसिद्धि के लिए अपनी विशुद्धि नहीं खोना चाहिये।

659.चाहे आप हिम के समान निर्मल और निष्पाप हो जाओ, तब भी निंदा से नहीं बच सकते।

660.जीव का अपवित्र मन ही प्रधान नरक है, उस मन की वेदना, चिंता, भय और अशांति ही नारकीय यातना है।

661.अपनी मेहनत का फल पाने के लिए बैचेन मत होइये वरना पका हुआ फल पाने से वंचित रह जाओगे।

662.शूरवीरता का सबसे बढ़िया, सबसे शानदार और सबसे दुर्लभ अंग है धीरज।

663.शत्रु का लोहा गरम भले ही हो जाये, पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है।

664.एलोपैथी और होम्योपैथी जहाँ काम नहीं करती वहाँ सिम्पैथी काम करती है।

665.साहस, विवेक, धैर्य, एकाग्रता एवं उद्यमशीलता जीवन की रहस्यमयी विद्यायें हैं।

666.सदैव आत्मा व परमात्मा के प्रति सच्चे बनकर रहो।

667.निश्चल प्रेम भौतिक सुख का आधार है, जिससे आनंद ले रहे हो उसके प्रति विश्वस्त भी बनो।

668.जिसके पास जितनी योग्यता है वह वैसा ही व्यवहार करेगा।

669.विकारी परिणाम भव्यों के जीवन में शाश्वत नहीं रह सकता।

670.अगर तुम सुख चाहते हो तो अतीत का विकल्प और अनागत की चिंता मत करो।

671.अपनी आत्मा को अपने स्वभाव के अनुकूल बनाओ और प्रसन्नचित्त रहो।

672.तुम अपने अंतरंग में ऐसी धैर्यता प्रकट कर लो जो कि दूसरे की मन, वचन, काय की प्रतिकूलता भी तुम्हारे अंतरंग को क्रुद्ध न कर सके।

673.वात्सल्य पाने के लिए अपनी आत्मा को गुणों का सागर बनाओ, इसके बिना दूसरों का कोरा वात्सल्य पा लेना अर्थहीन ही है।

674.महान् विचारों का उभरना श्रद्धा है तो उन्हें साकार करना है भक्ति।

675.उत्तम विचारों का दमन करना आत्महत्या है।

676.सच की हालत किसी तबायफ सी है,तलबगार बहुत हैं तरफदार कोई नहीं।

677.ज्ञान की जड़ें कड़वी हैं लेकिन फल मीठे हैं।

678.कल्याण भाव से रहित परिश्रम ऊधम है।

679.एक नदी के उसी जल में दुबारा उतरना असम्भव है।

680.मंगलमयी प्रभात की प्रथम किरण गुरु समर्पण से प्रारम्भ होती है।

681.जिंदगी राह के लिए है, गुनाह के लिए नहीं।

682.शक्ति की कमी, विचारों में कमी नहीं लाती, साकार करने में कमी लाती है।

683.चिंता सदैव पर या पर के निमित्त से पैदा होती है, चिन्तन सदैव अपना होता है।

684.जितनी स्वतंत्रता अंतरंग में है, वह उतना ही ब्रह्मचारी है।

685.भय और भोग का आनंद, दोनों एक साथ नहीं ठहर सकते।

686.गृहस्थ का आध्यात्मिक अर्थ है, अपने आत्मा रूपी घर में निवास करना।

687.निंदनीय पुरुष के सच्चे सेवक भी नियम से निंदा व तिरस्कार को ही प्राप्त होते हैं, आज भी और कल भी।

688.असाधारण जीवन बिताने के लिए असाधारण कार्य करना भी आवश्यक है।

689.आलस्य दुर्बल मन वालों के लिए शरण है तथा मूर्खों के लिए अवकाश दिवस।

690.अवसर या अनुकूल समय उनकी सहायता कभी नहीं करता जो अपनी सहायता स्वयं नहीं करते।

691.स्वेच्छा से ग्रहण किये गये दुःख को भी ऐश्वर्य या सुख सम्पत्तिवत् भोगा जा सकता है।

692.अब तक अनुकरण करके कोई महान् नहीं बना, जो महान् बना है उसका दुनिया ने अनुकरण किया है।

693.आत्मज्ञान से युक्त व्यक्ति, बाहरी कोई वस्तु नहीं चाहता है।

694.वही मानव उन्नति कर सकता है, जो उपदेश दूसरों को कम स्वयं को ज्यादा देता है।

695.सफलता संघर्षों का मार्ग तय करने पर मिलती है।

696.बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों को आपत्ति में देखकर ही स्वयं सावधान हो जाता है।

697.दिगम्बर अवस्था महान् इसलिए भी होती है, क्योंकि वे स्वयं निर्भय रहते हुये सब को अभय प्रदान करते हैं।

698.अपने अंदर शांति हो जाने पर सारे विश्व में शांति दिखायी देती है।

699.दुष्ट पुरुष को जीतने के लिए मौन भाषा ही सर्वोत्तम अस्त्र है।

700.संसार में संसारी प्राणियों का अहित करने वाले दो ही शत्रु हैं, मोह और अज्ञान।

701.सभी महान् वस्तुयें सदैव अच्छी नहीं होती किन्तु प्रत्येक अच्छाई महानता

की प्रेरक होती हैं।

702.क्षमा मांगना मात्र शारीरिक श्रम ही है, यदि अन्तर में निर्मलता का अभाव है।

703.धैर्य व आत्मविश्वास से बढ़कर मित्र तुम्हें पूरे संसार में कहीं नहीं मिलेंगे।

704.प्रेम का व्यवसाय नहीं हो सकता और न ही प्रार्थनाओं का विक्रय।

705.बीमारियों से ज्यादा घातक औषधियाँ होती जा रही हैं,एकांतवाद के विष से मिश्रित शास्त्रीय ज्ञान घातक है।

706.सम्यक् सन्देह ही समीचीन विश्वास तक पहुँच सकता है, बिना सन्देह विश्वास नहीं मिलता।

707.मित्र के लिए जीवन देना इतना कठिन नहीं है, जितना कि ऐसे मित्र की खोज करना जिसको जीवन दिया जा सके।

708.जिस कर्म को तुम बांधने में समर्थ हो तो तुम उसे तोड़ने की भी सामर्थ्य से युक्त हो, इस बात को कभी मत भूलो।

709.पुण्य तथा पुण्य फल की वांछा करना पराधीनता को ही स्वीकार करना है।

710.दूसरों में दोष दिख जायें तो आप उनसे बचने का संकल्प ले लें,

तब तो दोष दिखना भी सार्थक है।

711.किसी की निंदा करके सुधारने की आशा कीचड़ से कीचड़ धोने के समान है।

712.वैराग्य सत्य के सिवाय किसी के सामने नहीं झुकता।

713.अति विचार करने की अपेक्षा सम्यगनुभूति करना अत्यंत शुभ है।

714. तू भी तो आइने की तरह निकला जो सामने आया उसी का हो गया।

715.असंभव शब्द प्रायः कर सभी शब्दकोषों में मिलता है किन्तु मूर्ख व्यक्ति ही उसे मुख्यतया ग्रहण करते हैं।

716.युवावस्था पूर्ण विकसित पुष्प के समान है, इस पुष्प को परमात्मा के चरणों में समर्पित कर दो अन्यथा यह पुष्प व्यर्थ ही मुरझा जायेगा।

717.गंभीरता कहने, सुनने, चर्चा करने का विषय नहीं है, अपितु जीवन में धारण करने के लिए निजी गुण भी है।

718.उदारता ही गंभीरता की सहचारिणी है।

719.संसार में वे प्राणी दरिद्र हैं जो दूसरों के स्वागत में दो मधुर शब्द भी नहीं बोल सकते।

720.हमें जलने की जरूरत है, दहकने की नहीं।

721.गम्भीरता, साधकों की साध्य सिद्धि का अनुपम हेतु है।

722.गुरुदेव का चरण सान्निध्य संसार की समस्त दुःखद शक्तियों से भव्य जीवों की रक्षा करता है।

723.सबसे बड़ा दोष किसी भी बात का ज्ञान न होना है।

724.उसके आगे हमेशा सिर झुकाओ, जिसने तुम्हें सिर उठाना सिखाया है।

725.हिंसा को अहिंसा में बदलने के लिए हस्ताक्षर की नहीं हस्तक्षेप की अतिशीघ्र आवश्यकता है।

726.सिर्फ स्वाद, सौंदर्य और सम्पदा के लिए हिंसा होती है।

727.यदि हम दूसरों के लिए रोना सीख लेंगे तो बहुत से लोग हँसने लगेंगे।

728.बड़प्पन के भाव का नाप ही मान है।

729.आप बातों के बादशाह नहीं आचरण के आचार्य बनो।

730.परमात्मा को पाने में प्रेम नहीं वासना ही बाधा बनती है।

731.अहोभाव में झुकना ही प्रार्थना है, अनुगृहीत होने की भावना ही प्रार्थना है।

732.जब वासना से मुक्ति होती है, तब उपासना का जन्म होता है।

733.अपने दोषों को स्वीकार करना एक उत्कृष्ट साहस है।

734.निर्धनता प्रकट करना, निर्धन होने से अधिक दुःखदायी होता है।

735.सत्य के अनन्य भक्त के लिए मौन आध्यात्मिक नियंत्रण का एक अंग है।

736.मनुष्य के लिए निराशा के समान अन्य कोई पाप नहीं है।

737.चरित्र विरोधी, भोगी, असंयमी व्यक्ति मुनि के आगमन से दुःखी होता है।

738.चार चीजें सदा बढ़ती ही रहती हैं, भूख, निद्रा, भय व लोभ।

739.आगे वालों से जलिये मत और पीछे वालों पर हँसिये मत।

740.जो चीज जितनी सरल होती है उसकी परिभाषा उतनी ही मुश्किल होती है।

741.सत्य के उपासक के लिए स्तुति और निंदा एक ही होनी चाहिये।

742.आत्महत्या, अस्थाई समस्या का स्थायी समाधान है।

743.धर्म और प्रेम जीवन का दान देकर हाँसिल किया जाता है।

744.भलाई जितनी अधिक की जाती है, उतनी ही अधिक फैलती है।

745.अज्ञान की संतान मोह और मोह की संतान दुःख है।

746.अपने कार्य को इतनी लगन से कीजिये कि असफलता असम्भव हो जाये।

747.गर्व आगे चलता है और उसके पीछे कलंक अनुकरण करता है।

748.आनंद वह खुशी है, जिसके भोगने पर पछताना नहीं पड़ता।

749.केवल निराशा ही प्रगति में बाधा है।

750.निठल्ला बैठा रहकर खाने वाला श्रेष्ठ मनुष्य भी पापी है।

751.मूल से ही जिंदगी की भूल मिट जाती है।

752.पवित्र विचार दूसरे की दिशा को भी मोड़ सकता है।

753.हमें रूप को नहीं रूह को संवारना है।

754.भय मिटाने के लिए उसका डटकर के सामना जरूरी है।

755.गलत जीवन अंत में भयभीत नजर आता है।

756.प्रसन्नता का अर्थ परिणामों की निर्मलता से है न कि चेहरे की बनावटी मुस्कुराहट अथवा अट्टाहास से।

757.विषय कषाय की सामग्री जुटाना भी अशुभोपयोग है।

758.तुम अपनी स्वतंत्र सत्ता स्वीकार किये बिना, आत्मीय सुख व अनंत आनंद का भोग नहीं कर सकते।

759.जो संतोष धारण कर सकता है, वह अपरिमित वैभव का आनंद भी भोग सकता है।

760.अब देश से नहीं अपितु इस देह से स्वतंत्र होना चाहिये।

761.ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है।

762.बदला लेने में साहस नहीं, बल्कि उसे सहन करने में साहस है।

763.दूसरे की पोल खोलने वाला व्यक्ति यह साबित कर देता है कि मैं कितने गहरे पानी में हूँ।

764.काम वासना पर विजय, जीवन का सबसे ऊँचा पुरुषार्थ है।

765.जिसके जीवन में प्रयत्नशीलता नहीं, वह या तो पशु है या मुक्त है।

766.किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना समय बर्बाद न करो बल्कि

उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

767.वियोग की धूप, प्रेम के फल को पका कर रसदार बना देती है।

768.विशेषज्ञ वही है जो कम से कम को ज्यादा से ज्यादा जाने।

769.कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं।

770. ज्ञान वह दिव्य अस्त्र है जिसके द्वारा चेतन के समग्र गुण रूपी धन की रक्षा हो सकती है।

771. राजा के पास सैन्य शक्ति है, तो मुनिराज के पास होती है विश्व की श्रेष्ठतम शक्ति जिसका नाम है – संयम का पालन करना ।

772. जो अल्प बुद्धि का धारक होते हुए भी अपने आप को अहंकार युक्त हो, ज्ञानी मानता है वह अज्ञानी ही है।

773. बुद्धिमान वह कहलाता है जो कार्य प्रारंभ के पूर्व सोचता है तथा अज्ञानी वह है जो कार्य के अंत में सोचता है।

774. विद्वान सदैव खुद को विद्यार्थी समझता है मूर्ख सदैव खुद को समझता है महापंडित।

775. यदि जीवन विकास की सर्वोच्चतम चोटी प्राप्त करना चाहते हो तो अवसर का लाभ उठाओ और आगे बढ़ो, किसी की इंतजारी मत करो ।

776. संयमित, संतुलित एवं संतुष्टि का जीवन जीने वाला अनुपम आनंद का

उपभोक्ता होता है।

777. ऐसे लोग सर्वाधिक हैं जो आदर्श जीवन की बात कहते हैं, उनसे कम वह हैं जो कहते भी हैं तथा वैसा जीवन जीते भी हैं किन्तु ,सबसे कम जीव वे हैं जो आदर्श जीवन जीते हैं तथा आश्रित जनों को शब्दों से नहीं चर्या से उपदेश देते हैं ।

778. आशा का मार्ग सर्वोच्च सफलता के चरम तक जाता है । जो उसे छोड़ देते हैं वे उस परम चर्म को नहीं पा सकते ।

779. तजुरबों की दौलत तो हादसों में मिलती हैं। बाप से विरासत में तजुरबा नहीं मिलता।

780.वह कभी शहद प्राप्त नहीं कर सकता, जो मक्खियों के डंक से डरता है।

781.विवाह का अर्थ आदर्श शरीर के द्वारा आध्यात्मिक मिलन है।

782.विश्वास बुद्धि की संतान है और आस्था आत्मा की देन।

783.व्यक्ति जिस प्रकार का विश्वास रखते हैं, उसे वैसे ही सबूत मिलते हैं।

784.वे जरूर जीतेंगे, जिन्हें अपने जीतने की शक्ति में पूरा विश्वास है।

785.उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चारित्र में चुस्त होता है।

786.सत्य को शोध करने के लिए साधन भी सत्य चाहिये।

787.स्वार्थी का कोई साथी नहीं होता, जो साथी होता है वह कभी स्वार्थी नहीं होता।

788.तुम्हें नदी बनना हो तो ठहरने की जिद छोड़ो, नदी का स्वभाव बहना है, यह अर्थ कभी नहीं भूलना चाहिये।

789.सफलता के लिए जरूरी है कि आप स्वयं अपने प्रतियोगी बनें।

790.एक नकारात्मक मन हमेशा अहंकारी होता है।

791.भावुकता व्यक्तित्व की पूरक है और अति भावुकता कमजोरी।

792.प्रेम मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाली चुम्बक है।

793.चिंता से रूप, बल, ज्ञान, तेज, पराक्रम का नाश हो जाता है।

794.गुरु का सम्पर्क स्वयं के लिए किया जाता है, मात्र गुरु के नाम के लिए नहीं।

795.उत्साह जीवन की वह सम्पदा है, जो संसार की किसी भी वस्तु को खरीद सकती है।

796.वास्तविक स्वयं सेवक तो वही है, जो आत्मा की सेवा करे।

797.अग्नि स्वर्ण को परखती है एवं आपत्ति वीर को परखती है।

798.आत्मानंद का अनुभव स्वयं को तथा प्रेम-वात्सल्य का आनंद सामने वाले को होता है।

799.शत्रुओं को क्षमा करना, बदला लेने का सबसे सुन्दर साधन है।

800.प्रोत्साहन लक्ष्य प्राप्ति का एक प्रबल उपाय है।

801.यथेष्ट तन एवं धन को प्राप्त कर धार्मिक क्रिया में अपना मन न लगाने वाला मूर्ख है।

802.आशावादी हर कठिनाई में अवसर देखता है एवं निराशावादी हर अवसर में कठिनाई देखता है।

803.वह मित्रता जहाँ दिल नहीं मिलते बारूद से भी बदतर है, बड़ी बुलन्द आवाज से ऐसी मित्रता टूटती है।

804.मौन मानव के जीवन में ताजगी उत्पन्न करता है।

805.अनियमित गरीबी से अनियमित अमीरी ज्यादा खतरनाक है।

806.किसी ने रोजा रखा किसी ने उपवास रखा।कबूल होगा उसी का जिसने अपने मॉ बाप को अपने पास रखा।

807.सबसे अनासक्त होकर अपने लक्ष्य के प्रति आसक्त रहो।

808.सुख-शान्ति का विकास आकुलता के अभाव में होता है।

809.अपनी गलती को मान लेना झाड़ू लगाने जैसा काम है जो कचरा बाहर करके जगह को साफ करती है।

810.हठ, क्रोध और मूर्खता बहस के पक्के सबूत हैं।

811.जो स्वार्थी है वह उस फौव्वारे के समान है जिसके छिद्र बंद हैं।

812.जंग लगकर नष्ट होने की अपेक्षा जीर्ण होकर नष्ट होना ज्यादा अच्छा है।

813.अगर तुम गलतियों को रोकने के लिए दरवाजे बंद कर दोगे, तो सत्य भी बाहर आ जायेगा।

814.पंख होते हुये भी घोंसले में बैठे रहने वाले पक्षी को भला क्या कहा जा सकता है।

815.90 प्रतिशत की चिंतायें 10 प्रतिशत की लापरवाही से जन्म लेती हैं।

816.जो कम बोलता है, उसे कम बातों का जवाब देना पड़ता है।

817.हर कार्य का समय होता है, हर समय के लिए कार्य होता है।

818.अपना आवेग ठंडे बस्ते में डाल दो, वह प्यार में बदल जायेगा।

819.खुशामद को पसंद करना हीन भावना का द्योतक है।

820.हजार वर्ष का यश एक दिन के स्वेच्छाचरण पर निर्भर करता है।

821.सरलता, विनम्रता, पवित्रता, सत्यता एवं यथार्थ समर्पण पूज्य पुरुषों से

भी स्नेह प्राप्त करने के साधन हैं।

822.दूसरे व्यक्ति की कमजोरी को अपने मन में धारण करने से वह (कमजोरी) आपकी कमजोरी बन सकती है।

823.संयम एक ऐसा हीरा है, जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है।

824.कोई ऐसा क्षण नहीं जो कर्तव्य से खाली हो।

825.लोगों में शक्ति की नहीं संकल्प शक्ति की कमी होती है।

826.दुनिया में सबसे अच्छा साथी आपका दृढ़ निश्चय है।

827.तूफान दिये को भले ही बुझा दे पर दिया तूफान को देख अपनी लौ कम नहीं करता।

828.कम खर्चा करना निर्धनों का धन है और धनवानों की बुद्धिमत्ता है।

829.मूर्ख और मृत व्यक्ति कभी अपने मत नहीं बदलते।
830.झुंझलाहट के क्षणों में न हमारे विचार पवित्र हो सकते हैं और न हमारे कर्म।

831.तीखे और कटु शब्द कमजोर पक्ष की निशानी है।

832.साहस संकोच की जड़ का लंगर उखाड़ फेंकता है।

833.उत्तेजना तो वरैय्या के छत्ते में पत्थर फेंकने के समान है।

834.मुस्कराते चेहरे से दिया गया जलपान, पूरा भोजन हो जाता है।

835.शंका श्रद्धा की धीमी हत्या है।

836.चंचलता (मन की) की शिकायत वे लोग किया करते हैं जो उपयोग का दुरुपयोग करते हैं।

837.स्वयं की अच्छाई और बुराई को दूसरों की दृष्टि से मत नापो।

838.रौब की तीक्ष्ण तलवार रेशम को नहीं काट सकती।

839.यदि हर कार्य को यह समझ कर करें कि सर्वज्ञ भगवान मेरा साथी है, तो व्यक्ति कभी पाप कर ही नहीं सकेगा।

840.हमारी सबसे बड़ी मुसीबतें वे हैं जो हम पर कभी नहीं आती।

841.अपनी उत्तेजना में दूसरे व्यक्ति को निर्दोष समझो।
842.जितनी बात का विस्तार करोगे उतना ही लोग भूल जायेंगे।

843.आकांक्षा उतनी करो जितनी योग्यता है।

844.हे आत्मन्! कोई भी मुश्किल, मुश्किल नहीं है, गर तुम उसे मुश्किल न (आसान) समझो तो।

845.जब परेशानियाँ तुम्हें चारों तरफ से घेर लें तब तुम्हें धैर्य और साहस नामक मित्रों को साथ लेकर चलना चाहिये।

846.लोक को अभी से जीतने का प्रयास प्रारम्भ कर दो अन्यथा कभी नहीं जीत सकोगे।

847.प्रतिकूलता व विघ्न बाधायें आगे बढ़ने व चढ़ने हेतु सीढ़ी के समान हैं, उन्हें उन्नति में बाधक समझना भूल है।

848.जिम्मेदारियों का सम्यक् निर्वाह करते हुये भी मन को संतुलित बनाये रखना भी जीवन को जीने की उत्तम कला है।

849.पवित्र हृदय से, प्रेम के साथ बोला गया एक शब्द भी अनेक दुःखी आत्मा को सुख-शांति प्रदान कर सकता है।

850.सद् साहित्य सत्संग की तरह से उपकारक है।

851.गर हम दाव चूक गये तो चिंता की कोई बात नहीं, हम यह प्रयास करें कि हमारे भाव पुण्यार्जन से कभी न चूकें।
852.भौतिक धन से सम्पन्न व्यक्ति यदि आत्मज्ञान रूपी धन से हीन है तो वह निर्धन ही कहलायेगा।

853.जो स्वयं अपने आप को बदलने में समर्थ हैं वे अपने दुःख को सुख में बदल सकते हैं।

854.उन्नति का मार्ग विनयाचार, शिष्टाचार, सदाचार व संयमित

व्यवहार से प्रारम्भ होता है, अहंकार, क्रोध, विषयासक्ति व विलासिता के साथ नष्ट हो जाता है।

855.मानव जगत में हमारी पहचान हमारे शुभाशुभ व्यवहार से होगी, मात्र वस्त्रों से या वचनों की चतुराई से नहीं।

856.भ्रांति के जाल में फँसा हुआ व्यक्ति सत्य के निस्सीम गगन में उड़ने का आनंद नहीं ले सकता।

857.सज्जनता की परीक्षा प्रतिकूलताओं में होती है, क्योंकि अनुकूलता में तो सभी सज्जनवत् ही दिखाई देते हैं।

858.समय का सही मूल्यांकन या सदुपयोग वह कर सकता है जो सहिष्णु, धैर्यशील, नम्र एवं उद्यमशील है।

859.आत्म श्रद्धा, प्रभु भक्ति, तत्त्वज्ञान, संयम एवं निज परिणामों की निर्मलता ही महामानव का सच्चा धन है।

860.अल्पज्ञ वह है जिसे स्वकीय बोध का अहंकार है तथा बहु श्रुतज्ञ वह है जो अनुभव पूर्ति श्रुतज्ञान से युक्त होता हुआ भी सदैव विनम्र रहता है।

861.सकारात्मक सोच पंगु व्यक्ति को आगे बढ़ने में वैसाखी की तरह सहायक है, किन्तु नकारात्मक सोच व निराशावादी दृष्टिकोण पतन की प्रेरक व सन्मार्ग की बाधक अर्गला है।

862.अत्यधिक चिंता या तनाव किसी समस्या का समाधान नहीं है, अतः

मस्तिष्क को शिथिल रखें शरीर को चुस्त या फुर्ती युक्त और चित्त प्रसन्न रखें।

863. जननी और जन्मभूमि से श्रेष्ठ है, चित्त के विशाल व निर्मल सिंहासन पर सम्यक्त्व, सुबोध, सदाचार, संयम, संतोष, समता व सत्य की स्थापना करना ।

864. स्त्री स्वयं को तो दोषों में आच्छादित करती ही है, साथ ही दूसरों को भी दोषाच्छादित किये बिना नहीं रहतीं ।

865. वासना के अंधकार में उपासना के यथार्थ चित्र दृष्टिगोचर नहीं होते।

866. आलसी मात्र वह नहीं है जो योग्य कार्य नहीं करता अपितु वह भी आलसी है जिसके अंदर योग्य कार्य के प्रति भी उत्साह नहीं है।

867. हमें पहले वे कार्य करने चाहिए जो शुभ हैं, सर्व हितकारी हैं तथा जिनमें सफलता मिलना नियामक है क्योंकि पुरुषार्थ के उपरांत मिली सफलता, अगले कार्य की प्रेरक कारण होती है।
868. समस्याऐं साहसी पुरुषों की परीक्षाऐं लेती हैं, कायरों की नहीं क्योंकि कायर परीक्षा का नाम सुनते ही भाग जाते हैं।

869. अच्छा साहित्य आदित्य (सूर्य) की तरह अंतरंग को प्रकाशित करने वाला होता है, गंदा/ अश्लील साहित्य प्याज की तरह बदबूदार व निस्सार होता है।

870. आत्मा से आत्मा का परिचय जीवन में आबाद व आजाद बनाने का साधन है किन्तु पुद्गलों में लीनता स्व को बर्बाद करने व विवाद में डालने का कारण है।

871. विषय -वासना एवं कषाय-मय प्रवृत्ति ही सबसे बड़ी पराधीनता है, अतः बुरी आदतों को छोड़ो। संयमी, अनुशासनशील, सरल परिणामी और जितेन्द्रिय बनो, यही सच्ची स्वाधीनता है।

872. व्यक्ति की प्रतिष्ठा मात्र अच्छे वचनों से नहीं अपितु अच्छे कार्यों से होती है।

873. मृत्यु से भय उन्हीं को लगता है, जिन्होंने जीवन का सदुपयोग नहीं किया ।

874. परिवार का पालन और अतिथि की सेवा के लिए धन कमाना सार्थक है किन्तु धन संग्रह के लिए धन कमाना अनुचित है।

875. समय का सदुपयोग वो ही व्यक्ति कर सकता है जो धर्म के मर्म को जानता है।

876. जो अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करते एवं अधिकारों का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें नियम से तनाव होता है। उन्हें आत्म शांति भी नहीं मिलती।

877. जो व्यक्ति अंदर से कमजोर होता है, वह दूसरों पर अधिकार जमाकर स्वयं को शक्तिशाली प्रदर्शित करना चाहता है।

878. कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति अधिकारों की भीख नहीं माँगते अपितु ऐसे व्यक्ति

अधिकारों को स्वयं खोजना चाहते हैं।

879. शब्द ज्ञान का संग्रह अहंकारी बनाता है किन्तु ब्रह्म ज्ञान विनम्र, सरल और साहसी बनाता है।

880. चिंता करना किसी समस्या का समाधान नहीं है । चिन्ता छोड़ो सम्यक् चिन्तन करो ।

881. दूसरों की निंदा और आलोचना करने वाला सच्चा धर्मात्मा नहीं हो सकता । जो सच्चे धर्मात्मा होते हैं वे कभी किसी की निंदा नहीं करते ।

882. जब यह समझ में आ जाये कि "पाप दुःख का कारण है" तभी से हमें उसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि भविष्य का कोई भरोसा नहीं ।

883. आत्म समर्पण का आशय यह नहीं है कि उनका सहारा लेकर मनमानी करें या उन्हें अपने अनुसार चलायें ।

884. वैज्ञानिकों ने भौतिक विकास तो बहुत किया, जो कि विनाश का कारण है किन्तु वीतराग विज्ञान (आध्यात्मिक विद्या) से अछूते रह गये।

885. कई बार परिस्थितियाँ व्यक्ति को धर्म, सत्य, न्याय और ईमान के मार्ग से डिगाने के लिए मजबूर कर देती हैं किन्तु मनस्वी पुरुषों को प्राण छोड़ना तो स्वीकृत होता है, सज्जनता का मार्ग छोड़ना नहीं ।

886. शब्द ज्ञान के द्वारा वस्तु के बारे में जानकारियाँ तो प्राप्त की जा सकती हैं

किन्तु बिना साक्षात्कार के अनुभव संभव नहीं है।

887. जो व्यक्ति आलसी होते हैं उनके पास काम करने के समय का सदैव ही अभाव रहता है।

888. अच्छा व्यक्ति केवल वह नहीं जिसका चित्त अच्छा हो अपितु अच्छा व्यक्ति वही हो सकता है, जिसका चित्त और चारित्र अच्छा हो ।

889. विचारों की उत्कृष्टता और जघन्यता ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की उत्कृष्टता और जघन्यता का कारण है।

890. वह अतीत हमें अवश्य ही याद रखना चाहिए जिससे हमें कोई प्रेरणा मिले, परिणाम निर्मल हो, चित्त प्रसन्न हो ।

891. जिनका वर्तमान, विषय - कषाय व पापों से संलिप्त है, उनका भविष्य भी तद्रूप होगा ।

892. जब अंतःकरण अशान्त, व्याकुल, क्षुभित एवं विकार युक्त होता है तब बाह्य उत्तम साधन भी उसे शांति नहीं पहुँचा सकते।

893. जो व्यक्ति वर्तमान काल में उपलब्ध साधन, सामग्री, समय, समझ व सामर्थ्य का सदुपयोग नहीं कर सकता, वह भविष्य में उन उपलब्धियों से वंचित ही रहेगा ।

894. जैसे टॉर्च का स्विच ऑन करते ही प्रकाश हो जाता है वैसे ही, श्रेष्ठ व

सुखद स्मृतियों का स्मरण रूपी स्विच ऑन करते ही आनंद की अनुभूति होती है।

895. क्या आपको अपने जीवन की महत्ता का ज्ञान है? यदि नहीं है, तो आपका वस्तु सम्बन्धी समस्त ज्ञान व्यर्थ है।

896. धन कमाना बुरा नहीं है किन्तु बुरे साधनों से और बुरे कार्यों के लिए धन कमाना बुरा है तथा न्यायोपार्जित धन का भी दुरुपयोग करना बुरा है।

897. अधिकांश सम्बन्ध, भ्रांतियों के कारण टूट जाते हैं तथा कुछ साथी स्वार्थ के कारण छूट जाते हैं। जो सत्य के धरातल पर परोपकार की भावना लेकर चलते हैं, तब न उनके सम्बन्ध टूटते हैं न उनके साथी छूटते हैं।

898. दूसरों को बदलने का दुस्साहस करना और मन में बदले की भावना रखना दोनों ही स्वयं के लिए घातक हैं इससे बचने के लिए अपने आप को बदलो ।

899. लाठी और पत्थरों की चोट से तो हाथ पाँव की हड्डियाँ ही टूटती हैं किन्तु शब्दों की चोट से तो दृढ़ सम्बन्ध और दिल भी टूट जाते हैं।

900. विजय की प्राप्ति सज्जनता का नियामक लक्षण नहीं है, सज्जनता का लक्षण तो परीक्षाओं के समय ईमानदार रहना है।

901. यदि आप एक अवसर चूक गए हैं तो और पश्चाताप करने में दूसरा अवसर मत गँवाईये ।

902. प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने कर्त्तव्यों का निष्ठा के साथ पालन

करते हुए सदैव प्रसन्न चित्त रहना, प्राज्ञ पुरुषों की विशेषता का लक्षण है।

903. बाह्य पदार्थों के मध्य रहकर व अपने प्रत्येक कर्त्तव्य पालन करते हुए भी आत्मा के प्रति सतत् जागरुकता बनाये रखना महामानवता की निशानी है।

904. वर्तमान के विचार ही हमारी भावी फसल है। विचार रूपी बीज को चित्त की भूमि में वपन करने पर ही फल की प्राप्ति होती है।

905. स्वार्थ की सिद्धि हेतु असत्यता के धरातल पर निर्मित मैत्रीसम्बन्ध बालू के टीले पर बने भवन के समान अविश्वस्त व क्षणध्वंसी ही जानो ।

906. सत्य बात कहने, सुनने व देखने से वही व्यक्ति डरता है जिसके अंतरंग में असत्य का बदरंग भरा होता है या लोक निंदा से भयभीत है।

907. खिड़कियों में बदबू आ रही है तो यह निश्चित है कि भवन में सड़ांध है, कोई कुत्सित पदार्थ है। इसी तरह जिन नेत्रों में वासना झलकती है तो यह सुनिश्चित है कि अंतरंग में पाप भरा हुआ है।

908. सहजता, सरलता, सत्यवादिता, ईमानदारी और निर्लोभता की पराकाष्ठा व्यक्ति को निर्भीक बनाती है।

909. स्वच्छता के प्रति आकर्षण भले ही हो किन्तु हृदय में पवित्रता तो आचार, विचार, आहार व व्यवहार की शुद्धि से ही संभव है।

910. नैतिकता, गुण ग्राहकता, ईमानदारी, निर्भीकता, निस्वार्थ समर्पण, कृतज्ञता आदि ऐसे मानवीय जो गुण हैं जिन्हें हीरे, मोती व रत्न आदि से भी

अधिक मूल्यवान माना जाता है क्योंकि लौकिक धन से व्यक्ति की परमार्थ की सिद्धि नहीं होती, सम्यक् गुणों से व्यक्ति परमात्म पद को भी प्राप्त कर लेता है।

911. जो व्यक्ति जीवन में कभी किसी से ईर्ष्या नहीं करता, किसी की निंदा नहीं करता किन्तु धर्म, धर्मात्मा व गुणी जनों की प्रशंसा करता है वह विश्व का सबसे भाग्यशाली पुरुष है।

912. गुणज्ञ, धर्मनिष्ठ, उदारता, वैरागी एवं प्रिय व्यक्ति परमात्मा के निकट पहुँचने वाले है किन्तु दोष ग्राही संसार सिंधु की भंवरों में डूब रहे हैं।

913.धैर्यता, नम्रता, सत्यता, उदारता, सहनशीलता एवं संयम साधना मानव को महामानव बनाने वाले गुण है, इसके विपरीत दोषों से युक्त मानव भी दानव की कोटि में गिनने योग्य माना जाता है।

914. अपशब्द, कटु शब्द, निंद्य शब्द या तुच्छ शब्द का प्रयोग करने वाला प्राणी विवेक के स्तर से गिर चुका है, उसके पास इतनी भी समझ नहीं है कि उचित शब्दों का चयन कर सके।

915. परमात्मा के चिन्तन रूपी गुणसागर में डुबकी लगाने से विषय - वासना व पापों का संताप नहीं सताता तथा चित्त की गंदगी भी धुल जाती है।

916. जिसके प्रति हमारा पूर्ण समर्पण है और उसका भी हमारे प्रति पूर्ण वात्सल्य है तथा वह हमारा हित करने के लिए भी कृत संकल्पित है तब हमें उससे कोई याचना/ हठाग्रह करना अपने अविश्वास को ही प्रकट करना है।

917. यदि सहजता, सरलता, सत्यता, संयम, साधना, ईमानदारी और सत्यता जिसके नैसर्गिक गुण-धर्म हैं, तब परमात्म पद भी उसके लिए सरल और

सहज ही मानना चाहिए।

918. जो नैतिक मूल्य गँवा चुका है मनोबल के पर्वत से च्युत है, धर्माचरण को अंधविश्वास मानता हो, भला उसे अब कौन समझा सकता है जब तक कि स्वयं न समझना चाहे?

919. नाम, मान - सम्मान व लोक - ख्याति की भावना से दिये गये करोड़ों रूपये के दान की अपेक्षा, सच्ची नवधा भक्ति से, निस्वार्थ भावना से, हृदय की पवित्रता से दान में दिये गये मुट्ठी भर चावलों का अधिक महत्व है।

920. जो परमात्म पद पाने हेतु सत्य मार्ग पर चलता है तब प्रारम्भ में प्रकृति उसकी परीक्षा लेती है, उत्तीर्णता प्राप्त कर लेने पर प्रकृति पग - पग पर आपका साथ देकर पुरस्कार एवं मंजिल रूपी प्रमाण पत्र देती है।

921.खाली दिमाग के नहीं खुले दिमाग के आदमी बनिये।

922. निश्छल, निर्मल व निस्सीम प्रेम युक्त, निस्वार्थ मुस्कराहट आत्म संतुष्टि की प्रतीक होती है अतः सदैव हृदय की गहराईयों से अहर्निश मुस्कराते रहो।

923. अपनी योगत्रय की प्रवृत्ति देखो, फिर बताओ क्या तुम इस आचरण से खुद को परमात्मा के अंशज व वंशज कहलाने के अधिकारी हो?

924. जीवन के कक्ष में विद्यमान अवगुणों के अंधकार को नष्ट करने के लिए गुण ग्राहकता का दिव्य दीपक अंतरंग में जलाना बहुत जरूरी है।

925. विशुद्ध भावनाओं से युक्त व्यक्ति सदैव दूसरों की अच्छी विशेषताएँ व

गुण देखता है किन्तु दूषित चित्त व विकार युक्त मन वाला व्यक्ति दूसरों की बुराईयाँ ही देखता है क्योंकि अच्छाईयों को देखने की दृष्टि व चश्मा उसके पास नहीं है।

926. दीर्घकाल के लिए किए गए सत् संकल्प को भी देखते रहो क्योंकि कभी –कभी वह भी शिथिल दिखायी देता है।

927. स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने व प्रसिद्धि पाने का प्रयास क्यों करते हो? यदि आप निर्दोष हैं तो आपकी निर्दोषता की सिद्धि व आत्मप्रसिद्धि स्वतः ही हो जायेगी ।

928. जो निःस्वार्थ भावना से सदैव जरूरत मंद व्यक्तियों को सहयोग देता है, प्रकृति सदैव उसका सहयोग करती है तथा उसे अलग सहयोगी खोजने नहीं पड़ते ।

929. सत्य निष्ठा, विवेकशीलता,निरन्तर उद्यम (शीलता) एवं सहनशीलता ही सफलता की कुंजी है।

930. जो व्यक्ति संकल्प के कच्चे होते हैं तथा अपने वायदे पूरे नहीं करते हैं, तो घनिष्ठ मित्र व स्वजन – परिजन भी उनका साथ छोड़ देते हैं।
931. “सत्य धर्म” विश्व की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है वह जिसकी आत्मा में विद्यमान है, वही व्यक्ति संसार का श्रेष्ठ व्यक्ति है।

932. सदा प्रसन्न रहने के लिए “यथा लब्ध संतोष एवं निंदा प्रशंसा में समभाव रखना” इन दोनों बातों को जीवन में अंगीकार करना आवश्यक है।

933. पवित्र प्रेम, निःस्वार्थ उपकार व निष्कांक्ष तपस्या में कभी कोई शिकायत नहीं होती ।

934. जो पुरुष मन, वचन व शरीर से दूसरों को सुखी बनाने का प्रयास करता है तब सभी प्राणी उसे सुख का देवता मानते है, उसकी यह भावना उसे अनंत सुखी बनाने में भी समर्थ होती है।

935. जो व्यक्ति स्वयं के यथार्थ स्वरूप को जानना व पाना चाहते हैं उन्हें समस्त पक्षपातों से रहित, सत्य ज्ञान का दीपक लेकर, अन्तर्मुखी यात्रा करनी पड़ेगी ।

936. निज अंतरंग से निःसृत अंतर्ध्वनि कभी मिथ्या नहीं होती, वह सदैव हितकारी व यथार्थ होती है किन्तु अधिकांश प्राणी जो भौतिकता में डूबे हैं वे उस ध्वनि को न तो सुन ही पाते हैं और न ही उसका अनुपालन करते हैं।

937. यथार्थ की दृष्टि में सज्जन पुरुष वही हैं जो सज्जनता के मार्ग पर चलें, जिनका अंतरंग व बहिरंग निष्कलुषित व सरल हो । सज्जनता का मात्र उपदेश तो सज्जनता का लिबास पहनने वाला दुर्जन भी दे सकता है।

938. यदि आप अपनी आत्मा और परमात्मा की दृष्टि में अपराधी हैं, दोषी या पापी हैं तो अपनी भूल स्वीकार कर प्रायश्चित या दण्ड स्वीकार कर लो, स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने का दुःसाहस मत करो।

939. कोई भी अपराधी/ पापी प्राणी कदाचित् दुनिया की नजरों में स्वयं को निर्दोष सिद्ध भले ही कर ले किन्तु वह खुद व खुदा या परमात्मा की दृष्टि में सदोष ही है । जब वह स्वयं के पापों को निहारेगा तब स्वयं को क्षमा न कर पायेगा तथा दुनियाँ को उसके कृत्य से अवश्य ही घृणा होगी ।

940. शंकालु व्यक्ति मंजिल तक नहीं पहुँचता है इतना ही नहीं अपितु संशयात्मा विनष्ट भी हो जाता है क्योंकि संदिग्धता का जीवन अशांति और व्याकुलता का जीवन ही होता है।

941. भूतकाल को भूत की तरह छोड़ दो, भूतकाल की भूलों को भूल जाओ, उन्हें साथ बांधकर मत चलो तथा भूलकर भी भूत की भूलों को मत दोहराओ।

942. भविष्य के लिए अभी से इतना व्याकुल होने की क्या आवश्यकता है भविष्य में सुखी होने की चिंता में वर्तमान का सुख क्यों खो रहे हो?

943. अपने सहज स्वरूप में रहिये, कुछ बनने का स्वांग न रचो क्योंकि, यह स्वांग आपको सहजता की अपेक्षा अधिक दुःखकारी सिद्ध होगा।

944. यदि संकल्प और उनको पूर्ण करने के साधन शुद्ध हैं तो आप जो सोचते हैं वह कहना और जो कहते हैं उसे क्रियान्वित करना बड़ा सरल हो जायेगा।

945. यदि आपकी दृष्टि निर्मल, उच्च, उदार, सत्य से अनुस्यूत है तो आपका मस्तक या नेत्र कभी, लज्जा या हीनता से झुकेंगे नहीं अपितु गौरव से ऊँचे हो जायेंगे।

946. कुछ लोग कहते हैं कि, "जो विजयी हुआ है वही सत्यार्थी है" किन्तु, हमारा मानना यह है कि जो सत्यार्थी था वही आज विजयी हुआ है, यह बात अलग है कि विजयी होने पर वह सत्यार्थी ही रहेगा या असत्यार्थी।

947. यदि आपसे कोई नाराज है और आपको नाना मिथ्यादोष लगा रहा है, तब आप उत्तेजित होने की बजाय धैर्यता से काम लें, कुछ समय बाद सत्य

स्वतः ही प्रकट हो जायेगा।

948. महापुरुष अपनी निंदा व अपमान सुन कर के भी निंदकों के प्रति सद्भावनाओं की पुष्पवृष्टि करते हुए मुस्कराते ही रहते हैं, दुःखी या उत्तेजित नहीं होते।

949. उत्साही व्यक्ति बड़े - बड़े कार्य भी सहजता में सम्पन्न कर लेते हैं किन्तु निरुत्साही व्यक्ति शीघ्र ही थक जाते हैं अतः उनकी (उत्साहियों की) मंजिल सदैव सहज साध्य ही रहती है।

950. यदि आप दूसरों की कमजोरियाँ अपने मन में रखते हैं तब कालान्तर में वे कमजोरियाँ आप पर हावी भी हो सकती हैं और आपकी अच्छाईयों का क्षण भक्षण भी कर सकती हैं।

951. यदि हम ईमानदारी पूर्वक परमात्मा को अपना साथी बनालें तो हमारे चेहरे पर कभी चिंता की रेखाऐं नहीं दिखेंगी।

952. भ्रांतियाँ जीवन को बर्बादी के तट पर ले जाकर खड़ा कर देती हैं, अतः प्रेम पूर्ण विचार, निर्मल भाव एवं सही समय पर कार्य करके विवेक से उन भ्रांतियों को दूर कीजिए।

953. यदि चलते समय पैर फिसल जाये तो एक ही व्यक्ति घायल होता है, किन्तु जुबान(जीभ) फिसल जाये तो अनेक का घायल होना या मृत्यु को प्राप्त होना भी संभव है।

954. सुन्दर, गुणी, ज्ञानी एवं धनी व्यक्ति की ओर प्रायः सभी आकर्षित होते हैं, उनकी सहायता भी करते हैं किन्तु कुरूप, अवगुणी, अयोग्य, मूर्ख, निर्धन

की सहायता करने वाले यहाँ कितने हैं?

955. यह नेत्र जब तक खुले हैं तब तक प्राणी मात्र के लिए प्रेम, शांति, सांत्वना व खुशी देने का प्रयास करो, नेत्र बंद होने पर कुछ भी न दे सकोगे।

956. अपने जीवन को भार भूत बनाने की अपेक्षा उसे सारभूत और दूसरों का आधार (भूत) बना लेना महापुरुषों की विशेषता है।

957. एक व्यक्ति का तीव्र लोभ हजारों को दुःखी कर सकता है तथा एक व्यक्ति की उदारता, त्याग व सद्भाव लाखों के कल्याण में समर्थ है तुम कैसे व्यक्ति बनना चाहते हो?

958. हर व्यक्ति के विचार और प्रवृत्ति में भिन्नता होती है किन्तु स्नेह, व्यवहार, सहयोग की भावना तथा प्रकृति में भिन्नता नहीं होनी चाहिए ।

959. जिस बात के सुनने से आपकी विशुद्धि एवं खुशी नष्ट हो, संक्लेशता, आर्त्त – रौद्र ध्यान बने उस बात को कभी मत सुनो ।

960. यदि हम भविष्य के बारे में अत्यंत चिन्तित व भयभीत रहेंगे तो वर्तमान के स्वर्णिम अवसर भी खो देगें ।

961. अच्छे मित्रों का साथ दुःख से, बुराईयों से बचाकर सुख की राह पर एवं सच्चाई के मार्ग पर ले जाता है अतः सदैव अच्छे मित्र बनाओ ।

962. यदि आपने अपना जीवन महत्वपूर्ण जाना व समझा है तब संभव है कि दूसरे आपके जीवन को महत्वपूर्ण मानेंगे ।

963. किसी दूसरे व्यक्ति को विपत्ति में डालना एवं दुःखी व्यक्ति को देख कर हँसना, खुद के लिए विपत्तियों को आमंत्रण देना है तथा अज्ञानता प्रदर्शित करना है।

964. दूसरों को गिराने वाला व्यक्ति स्वयं ही गिर जाता है अतः किसी गिरते को उठाने का प्रयास करो, तब संभव है, तुम्हारा भी उत्थान हो जाये ।

965. दूसरों की सहन करना एक बात है, उनको उन गलतियों या बुराईयों से बचा देना तथा उन्हें क्षमा कर देना उससे भी बड़ी बात है।

966. प्रभु परमात्मा की स्मृति, स्तुति, भक्ति, वंदना हमारी आत्म शक्ति की विकासक, अंतरंग ज्ञान की प्रकाशक एवं समस्त दुःखों की विनाशक है।

967. यदि आपको देखकर कोई हँस रहा है तब भी आप खेद खिन्न न हों अपितु अपनी गलती सुधार लें तथा यह सोचें कि आप किसी की खुशी में निमित्त तो हैं।

968. यदि आप सदैव प्रसन्नचित्त रहना चाहते हैं तो अपनी तथा दूसरों की अच्छाईयों को देखें, अच्छाईयों की चर्चा व प्रशंसा करें ।

969. अपना बचाव करने के लिए दूसरों पर दोषारोपण न करें क्योंकि समय, सत्य को प्रकट करने के लिए सदैव तत्पर है।

970. आदर्श जीवन वह नहीं है जो किसी के लिए समस्या या भार रूप है, अपितु श्रेष्ठ जीवन तो वह है जो समाधान रूप, सार तथा वरदान रूप हो ।

971. उन्नति की दृष्टि रखो, किसी का पतन मत सोचो, दूसरों को पतित

करने वाला खुद भी पतित ही हो जाता है।

972. साधु सेवा, परोपकार एवं धार्मिक कार्य करने से मानव का सौन्दर्य प्रकट होता है तथा गुणों को ग्रहण करने से वह विभूषित होता है।

973. स्वयं को ज्ञाता - दृष्टा बनाओ, तब आपको अनुपम सुख की अनुभूति होगी, कर्ता - धर्ता, भोक्ता - प्रदाता बनने से दुःख ही दुःख पाओगे ।

974. जैसा लक्ष्य लेकर बढ़ोगे, जीवन में वैसे ही लक्षण प्रकट होंगे, अग्नि की समीपता "ऊष्णता" व जल की समीपता "शीतलता" का अनुभव कराती है।

975. सत्य को सांसारिक आतंक डरा नहीं सकते और न ही उसे असत्य के बादल हमेशा के लिए ढक सकते हैं।

976. महापुरुषों की शुभ करनी व शुभ कथनी एक रूप होती है, अधर्म पुरुषों की इससे विपरीत ।

977. तुम्हारे सुनने से, सुनाने से, चिन्तन करने से यदि तुम्हारी या दूसरों की भावनाऐं बिगड़ती हैं तो इससे भी वायुमण्डल दूषित ही होगा ।

978. आप अपने साथियों व मित्रों के गुणों की व विशेषताओं की चर्चा करो, बुराईयों की नहीं ।

979. जब आपको कहीं भी आश्रय दिखाई नहीं दे रहा हो, जीवन में चारों तरफ निराशा दिखाई दे रही हो, पाप कर्म का तीव्र उदय हो, तब धर्म का मार्ग व प्रभु परमात्मा का द्वार खुला रहता है।

980. जो काम बेमन से किया जाता है, वह बहुत कठिन लगता है, उसमें सफलता की संभावना भी कम ही होती है तथा उसमें समय भी अधिक लगता है।

981. यदि मन, वचन, काय, धन एवं बंधु बांधवों की पूरी शक्ति लगा देने पर भी सफलता की संभावना कम ही दिखती हो तब उस कार्य को छोड़ देना ही बुद्धिमानी है।

982. आप यथार्थ मूल्यांकन करने का प्रयास करो, तब आपको न कोई धोखा दे सकेगा और न ही अपमान कर सकेगा ।. जो कभी भविष्य था वह आज वर्तमान बन गया,जो कभी वर्तमान था वह अतीत बन चुका है, जो वर्तमान बनेगा वह नियमित अतीत बनेगा ही, अतः जो अतीत बने ऐसे भविष्य की चिंता क्यों?

983. आने वाला प्रत्येक दिन एक नई आशा, रहस्य व विश्वास लेकर आता है तथा जाने वाला प्रत्येक दिन सफलता देकर जाता है किन्तु किसे क्या मिला वह उसके पुरुषार्थ व भाग्य की बात है ।

984. यदि आप अपने पुरुषार्थ का फल समय के पहले चाहते हो तो तुम्हें कच्चे, खट्टे व कड़वे फलों में संतोष करना पड़ेगा, अगर तुम्हें यह मंजूर नहीं है, तो पुरुषार्थ करते रहो और शांति पूर्वक फल की प्रतीक्षा करो ।

985. हमारी उदारता ही हमें उदारता पूर्वक फल देने वाली होती है। आकाश सब द्रव्यों को उदारता से स्थान देता है इसलिए ही तो उसकी सत्ता सर्वत्र है।

986. जो जल की तरह सब वस्तुओं को स्थान देता है वह जल की तरह सब जगह स्थान पा सकता है जो दूसरों को स्थान नहीं दे सकता वह कहीं भी

स्थान नहीं पा सकता है।

987. यदि आप आत्मिक शांति चाहते हो तो हृदय के पवित्रतम अमृत कुण्ड में कूड़ा - कचरा व गंदगी रूपी कुविचार मत डालो ।

988. ईमानदार व्यक्ति स्वयं भी संतुष्ट रहता है तथा दूसरे भी उसमें संतुष्ट रहते हैं, क्योंकि वह बिना पुरुषार्थ के कोई फल नहीं चाहता तथा परिश्रम से अधिक पा सकने पर भी वह दूसरे का हिस्सा नहीं चाहता ।

989. जो पूर्ण निष्ठा,लगन तथा विवेक के साथ अपने सुकार्य में संलग्न रहते हैं तब आत्म विश्वास की छाप उन कार्यों को महत्वपूर्ण बना देती है।

990. जिन घावों को भरने में डॉ. (वैद्य) की औषधि भी समर्थ नहीं होती, समय की मरहम से वह ठीक हो जाते हैं।

991. यदि आप सामने वाले को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आप वह हैं जो आप वास्तव में हैं नहीं, तब आप ही सोचो मूर्ख कौन बना, सामने वाला या आप?

992. जो प्रत्येक वस्तु के यथार्थ मूल्यांकन व सम्यक् उपयोग करने में समर्थ है वही व्यक्ति स्वतंत्र है, अन्यथा नाम का स्वतंत्र तो कोई भी हो सकता है । जैसे किसी का नाम गुलाम तो किसी का स्वतंत्र ।

993. मौन से मस्तिष्क को आराम मिलता है, मस्तिष्क की विश्रांति शरीर में भी स्फूर्ति भरने वाली होती है, अतः हे आत्मन्- मौन साधना अधिक करो ।

994. मौन की शक्ति अचिन्त्य है, मौन की आध्यात्मिक साधना मन के

मोबाइल को चार्ज करने वाली बैटरी ही है, बोलो, है ना ।

995. नींद व विश्रांति शरीर में नव ऊर्जा शक्ति का संचार करने वाली प्रक्रिया है, अतः आवश्यक नींद तथा विश्राम करना हर श्रमण को भी आवश्यक है।

996. संक्लेशता के गर्त व चिंताओं के दल - दल में फँसा व्यक्ति जीवन में भावना से अशुभ ध्यान का शिकार ही बनता रहता है अतः सदा प्रसन्न चित्त रहो ।

997. अच्छी पुस्तकें अच्छे मित्रों की तरह हमारे परिणामों (भावों) की सुरक्षा करतीं हैं अतः सदैव अच्छा साहित्य ही पढ़ना चाहिए।

998. उत्साह एक ऐसा मार्ग है, जो सफलता की मंजिल पर जाकर समाप्त होता है।

999. निरुत्साही मानव अपने भाग्य का घर स्वयं बन्द कर लेते हैं।

1000. मानव का जब भी उत्थान एवं पतन होता है तो वह स्वयं के घर से ही प्रारम्भ होता है।

1001. स्वयं एवं स्वयं के साथी की रक्षा के लिये सारे संसार की भी उपेक्षा करनी पड़े तो कर देना ही श्रेयस्कर है।

1002. स्वयं की रक्षा करने के साथ साथ, अपने साथी की रक्षा करना भी अति आवश्यक है।

1003.दो मित्रों की घनिष्ठ मित्रता उनकी सरलता, विनय, क्षमा, सहजता का परिचायक है।

1004.बड़प्पन वही है, जो सत्य को स्वीकार करे।

1005.स्वाध्याय के तीन खम्बे आहार, शयन व ब्रह्मचर्य हैं।

1006.डरपोक बार बार मरता है एवं वीर मानव एक बार मरता है।

1007.परिश्रम में सफलता, सफलता में सुख व सुख सहित जीवन ही वास्तविक जीवन है।

1008.थोड़ा पढ़ना, अधिक सोचना, कम बोलना व अधिक सुनना यही बुद्धिमान बनने के उपाय हैं।

चर्चा और आरोप

ये दो चीजें

सिर्फ सफल व्यक्ति के

भाग्य में होती हैं

आचार्य वसुनंदी मुनि

''उन्हें लोग मूर्ख कहते हैं?''

संसार के व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था की व्यवस्था हेतु बैंक बैलेंस बचा कर रखते हैं अथवा अपने पास धन - जेवर, जवाहरात या मकान - दुकान, भूमि या जमीन - जायदाद रखते हैं और ऐसा करने वालों को दुनिया बुद्धिमान भी कहती है, जो ऐसा नहीं करते उन्हें लोग मूर्ख कहते हैं, मैं उन्हें बुद्धिमान ही नहीं महाबुद्धिमान कहता हूँ जो इस भव की व्यवस्था के साथ - साथ पर भव की भी व्यवस्था बना कर चलते हैं। अर्थात् ख्याति, पूजा, लाभ व नाम की चाह से रहित होकर शुद्ध धार्मिक अनुष्ठानों में या धर्मात्मा, महात्मा व परमात्मा की सेवा में अपने न्यायोपार्जित द्रव्य का गुप्त रूप से दान करते हैं। जो ऐसा नहीं करते वे परभव में नियम से दुर्गति को प्राप्त करते हैं।

आचार्य वसुनंदी मुनि

मीठे प्रवचन

''सर्वनाश के लक्षण''

घर के आंगन में खड़ा बूढ़ा वृक्ष और द्वार पर बिछी खटिया पर पड़े बूढ़े बाप पर काटने, छाँटने, डाँटने और बाँटने के लिए कुछ नहीं है उस वृक्ष को आँगन में खड़े रहने दो यदि वह फल नहीं देगा तो फूल तो देगा ही और फूल भी नहीं तो छाया तो देगा, छाया में भी गर कमी आ गई है तो कम से कम ऑक्सीजन तो देगा जो प्राणवायु है। इसी तरह बूढ़ा बाप भी अगर तुम्हें रुपया न दे और न ही तुम्हारा कोई काम कर सके तब भी वह अपना साया (संरक्षण) तो तुम्हें दिये ही है और उसमें भी दुआ, आशीर्वाद है, जिससे हजारों संकट दूर होते हैं और वृद्ध गैया और मैया भी क्या काटने के लिए है? जिसने तुम्हे जन्म दिया, दूध पिलाया और बड़ा किया है, जो तुम्हें प्यार से चूमती और चाटती है उसी गाय और माँ को दुनियाँ न जाने क्यों काटती और डाँटती है, जहाँ पर इन्हें काटा जाता है, वहाँ क्या सुख - शांति की एक झलक भी मिल सकती है? क्या ये सभी बुद्धि - विनाश और सर्वनाश के लक्षण नहीं हैं? यह गम्भीरता से सोचने का विषय है।

आचार्य वसुनंदी मुनि

पुण्यार्जक श्रावक

वीरेन्द्र कुमार जी जैन

(वाड़मेर वाले)

अजमेर (राज.)

के सौजन्य से

1500 प्रतियॉ

प्रकाशित